

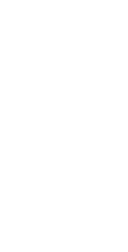
हैं म्लेण्डके मुप्रसिद्ध विद्वान् टानटर सेमुएल स्नाइन्स अनेक उपयोगी प्रन्य लिया भाषाओं हैं। उनके प्रत्योद्धा यहा आदर है। यूरप और भारतवर्षकी अनेक भाषाओं इनके अनुवाद हो चुके हैं। हावटर स्नाइन्सका सबसे प्रतिद्ध प्रन्य सेक्क-हेन्य (Self-Help) है। यह प्रन्य पहले पहल सन् १८५६ में प्रकाशित हुआ और स्नोगों ही इनना पतान्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी पीस हजार प्रतियों विक गर्ट। उत्तके बाद आजतक तो इतकी न जाने कितनी प्रतियाँ त्यर चुको होंगी। इतने अच्छे और लोकोपदारी प्रन्यका हिन्दीमें अनाव दिसकर में आज अपने पाटकोंके सन्मुरा सेक्स-हेल्यका यह हिन्दी स्पान्तर स्कर उपस्थित हुआ हैं।

इस प्रन्थके वननेका कारण

डावटर स्माइल्सने अपनी भूमिकामें इस प्रकार वर्णन किया है:--

" इंग्डेण्डके उत्तरीय प्रान्तके एक करवेमें दो तीन नवयुवकोने मिलकर विचार किया कि इस लोग शामको एक जगह एकडे हुआ करें शार एक इसरेकी सहायतासे पढ़ने जिलनेका अभ्यास बढ़ावें । ये लोग बहुत ही गरीब थे, इस लिए इन्हें कोई अच्छा स्थान इस कार्यके लिए नहीं मिल सका । इनका एक मित्र एक छोटेसे परमें रहता था। उसमें एक छोटोसी कोटरी थी। वस, ये लोग उसीमें एकत्र होने लगे शीर अपना कार्य उत्साहके साथ करने लगे। इनकी देखावेखी और भी बई लोगोंकी इच्छा हुई और ये भी इस मण्डलीमें आने लगे। पल यह हुआ क जगह ओही पड़ने टगी। गर्माका मीसम आ चुक; था, इस लिए कोटरीके बाहर जो छोटासा वगीचा था, ये लोग उसीमें एखी हुनामें बठकर अपना काम बलाने लगे। परन्तु कभी कभी आँभी-पानी आजानेक कारण इनके पढ़ने विवने में ख्यापात पड़ने छगा और इन्हें कष्ट होने लगा।

इतनेमं ही जाएँके दिन भा गये। रातको स्व ठण्ड पड़ने खगी। थोड़े धादमी होते, तो कोई छोटी मोटी कोठरी देख की जाती; परन्त तब तक एकत्र होने-बाठोंकी संस्था बहुत बढ़ गई थी। यदापि इस पाटशालामें धानेबाले प्राय: मजदूर लोग ये और उनकी आर्थिक ध्वस्या बहुत ही शोचनीय थी, तो भी इस समय अपने आन्तरिक प्रमुक्त बारण उन्होंने हिम्मत बाँधी और एक पहा कमरा किरायेपर के लेनेका संकल्प कर लिया। तलाइ करनेसे एक ऐसा कमरा



भूमिका ।

हुँग्रेण्डिक मुत्रसिद्ध बिद्वान् डाक्टर सेमुएल स्माइस्स अनेक उपयोगी प्रन्थ लिख पाये हैं। उतके प्रत्योंका बढ़ा आदर है। यूहप और मारतवर्षकी अनेक भाषाओं में उतके अनुवाद हो चुके हैं। डाक्टर स्माइस्सका सबसे प्रतिद्ध प्रत्य सेलक हेल्य (Self-Help) है। यह प्रत्य पहले पहल सन् १८५६ में प्रकाशित हुआ और लोगोंको इतना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी पीस हजार प्रतियाँ विक गईँ। उसके बाद आजतक तो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ एत चुको होंगी। इतने अच्छे और लोकोपकारी प्रत्यका हिन्दीमें अभाय देशकर में आज अपने पाटकोंके सन्मुख सेलक हैलका यह हिन्दी स्पान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ।

इस प्रन्थके यननेका कारण

शबटर स्ताइल्सने अपनी भूमिकामे इस प्रकार वर्णन किया है:---

हननेने ही अदिव दिन आ गया। रातका भूब एक्ट पटन लगी। घट आदमी हीत, ता काह छोटा माटा काटरा देख ला जाता परन्तु तब तक एक्ट हान-वालाको नह्या पहुँ कर रहे या। यथाप हर पटन रात्रान आया मजदूर लाग या आर उनकी आयक अवस्य बहुत ही बावनाय या तो मा हम मनय अपने अनेगाक अमक कोरत उन्हान हम्यात बाधा अर एक हटा कमहा विरामित ले छेनका सकन्य कर १८दा स्ताम्य बरनन एक एसा बम्महर मिला जिसमें पहले हैजेके रोगी रक्के बाते ये और इम कारण उसे छोग शुक्तमें भी न छेना जाहते ये । इन्होंने निर्भय होवर इसे ही छे छिया और अपना कार कारी कर दिया ।

बहुतसे तो पड़ी उन्नहे मे-लिसना बॉबना, अक्पणिन, भूगोल, रुनायनशास, और क्षेत्र बर्तमान भाषायें आप सीखने समे तथा औरोंको जिल्लाने लगे 1 "इम तरह उक्त सस्यामें सवभव ९०० मनुष्यींश जवाव होने छवा । 50 विनोंके बाद उन्हें क्याल्यान सुनमेका शौक समा और उनमेने कुछ यक्क मेरे पान भावे। उन्होंने अपने परों रह मडे होकर जो उद्योग और परिश्रम किया था और जिस नवनासे मुझसे व्यास्थान देनेही प्रार्थना ही यो। उसना सप्तरह वदा ग्रमान पष्टा और म जातना था कि आम सभाओंसे स्वाधवान देतका कर विशेष कर नहीं होता है तो भी मैंने व्याल्यान देना स्वाकार कर दिया । भैने तिथय निया क्र हृदयकी वास्तविक प्रकाम और समाईमें जो कुछ करा जायमा उसका क्रि असर पढ़े जिला ल बहेगा। इस उद्देश्यले मैंने उक्त सलाल कह स्थालयान दिये भीर उनमें अने करावार मनुष्योंके उक्तहरण देकर बन्छाहा हर नुस्तेमें अप्रेक मन्पा, माद बाह तो व्यवग्रामकायमे वैसे ही क्या कर सकता है। तुम्हारे भागामा जीवनका शल आर हन्याण स्वय द्वादारे ही अपर अवलाम्बत है, हम क्रमा नुस्ट अपने आपना प्रमायपूर्व शिक्षित बनाना चाहिए, अपनको सम्मान रावस्य अध्यत्र आदर्त द्वाणना चाहार अपने मनको वसमे स्मक्त यतना बाहिए और इन सबस बदकर अपन कर्नब्यका पातन सखाई और गुरानप्रामे वरना बार्ग, क्योंक मनुष्यक बारप्रशा नाता नुवियाँ उसकी कर्नेश्यतिहा पर ही अवसम्बद्धाः - ।

"हम उपराध्य न काइ नह बान था और न कोई नया विचार हा या—पुरीनी सबकी जाना हुई कार्ड की दोहराई गई थी, ना भा नुप्रकोने उसकी करे अपर-रके साथ पुना । वे बारना अस्ताम कहात गर्व और हुई निध्यमें उत्साहपूर्वक परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मीके मिलनेपर ये तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उमति कर ली और उनको गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके माद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषने मेरी मेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वल पर अपनी अच्छी उमति कर ली थी-जो एक कारजानेका मालिक बन गया था। उसने कहा "में इत समय बहुत खुसी हूँ। आपने कई पर पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सचे विकायद व्याख्यान दिये थे, उन्हें में आज भी छत-इतापूर्वक स्मरण करता हूँ। आपने जो मामताया था अपनी शक्तिमा प्रता करता है। आपने जो माम गतलाया था अपनी शक्तिमा प्रयास करके में अवनक उदीपर चल रहा हूँ और मुहे पढ़ा विश्वास है कि उदीके कारण मुझे यह सुवसर्हादकी प्राप्ति हुई है।

" इस घटनांसे स्वावलम्बनके विषयंको ओर मेरा प्यान विदेयस्पर आक-पित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मेंने उफ नवपुवकोंकी समांक व्याक्यानोंमें जो बातें कही थी, उनकी एदि करना शुरू किया। में जो कुछ यांचता, निरीक्षण करना अथवा संसारी काम-काजोंमें परकर अनुभव प्राम करना था, अवकाश मिलनेपर उन सब वानोंका उतना भाग जो इस विषयंक लिए उपयोगों होना था निस्ता जोना था। इस नरह इस विप-यका एक अच्छा समह हो गया और वहीं समह आज इस स्पर्मे प्रकाशिन किया जाता है।"

यह प्रत्यं सन् १८५९ से पहाँच प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ से स्माइन्स साहबने इससे अनेक तये उदाहरण गामिल करके इसकी उपयोगिताका आरं भी यहा हिया है।

इस प्रन्थकी दिक्षाये ।

दम प्रत्यमे यया विक्षा सिटेगा, यह डाक्टर स्माइन्यके इच्छोमे ही बनलान। अच्छा होगा । वे कहते हे -''सक्षपमे दम पुस्तकका उद्देश निक्रिटीयन प्राचीन किन्तु लाभदायक उपदर्शाका बार बार दाहराना है । दन बातोका जितना बार बीहराया जाय उतना ही थोडा है.—

- १ मुखी बननेक लिए प्रत्येक युवकको काम अवस्य करना चाहिए।
- २ उद्योग ओर परिश्रमके विना काई ना महत्त्वपुण कार्य नहीं हा सकता है।
- ३ क्टिनाइयोंसे उरना न चांटए, किन्तु सन्तोष और ऐसे ज्याय उनपर विजय प्राप्त करना चाहिए।

भिना जिममें पहुँ है ते के रोगी रहने जात से और हम कारण उसे होग सुम्तर्ने भी न मेना नाहते से। इन्होंने निमंत्र हो बर हमें ही के निवा और अपना काम जन्में हम दिया ।

" में शान पहले बर्गहर वा बह अब उद्योग और उत्पाहरा के रह में मारी बर्गाद पर गंसमार्ने विश्वमधी पूरी पूरी कारवान के हैं, तो भी में में इक पी उपने पूरा जगाद और मानार्कित इंड्राल मार्टी हुई भी निजयों में इक प्रदे पूरा बाला पा, बद अपनेने कहा जाननेवानों के शिक्ताता था, अपने भाग मृश्ता वा और प्राचीचे मुख्यता का और किसी म किसी तरह बूपोर्ड मार्टी भागता उपने बरावल क्यकिल करता था। इस तरह वे पुता पुत्तन-दिवनें बहुनों भी बसी उसके बे—किसना बीनता, अंद्रालीय, मुसेत, सामार्कित

और बई बर्नमान भाषायें साथ सीलने खगे तथा औरोंको निखठाने संगे।

"हरा तरह उक्त क्षेत्रपाले लगावन ६०० वालुवीर जाता होने स्था । इपे कराव का वाल्यान वालेक्ट पोल सामानित कार्यों हुए हुए हैं। दे पार कराव का उन्हें आपना कार्यान वालेक्ट पोल सामानित कार्यों के प्रति कार्यान कार

बारा १ नाथ प्रमुख्य बाववधा नाम सूचवर्त अवद्या नरेवानिहा वर ही बद्दाराजा । (१९ रोगावा व कह बा बाव बत्त बेट ब वेट्रिक्ट स्विम ही साम्युरायी बद्दा बार्ग रह तक हा रामाह बहे बी जो भी सूचिन उसकी के स्वाप्त है। इस हम्म हमा व बनाया नामाम स्वार्त की बीट हा सिमानेत उसकाहर्य

ा १४ वर्षन्य चंदर्व राज्य बाहर चयन समझ क्ष्मे शर्द्ध क्याना वॉस्टि बीर ६८ वर्षन करका नाम बहाराहा पायम सब्दार्थ मेर एडसिडामें हरनी परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मीके मिलनेपर वे तरह तरहक रोजगारोंसे लगते गये । उनमेंसे कई होगोंने तो अच्छी वसति कर ही और उनको गणना प्रतिष्ठित प्रध्योंमें होने हगी । कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वल पर अपनी अच्छी उप्रति कर ही थी-जो एक कारखानेका माहिक वन गया था। वसने कहा " में इस समय बहुत सुखी हैं । आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे सायियोंके सामने जो सचे शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये थे. उन्हें मैं भाज भी कत-ज्ञतापूर्वक स्मरण करता हैं । आपने जो मार्ग बतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयस्त करके में अवतक उसीपर चल रहा हैं और मुझे पढ़ा विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह मुखरामृद्धिकी प्राप्ति हुई है।

" इस घटनासे स्थावलम्बनके विषयको और मेरा ध्यान विशेषस्पते आक-पिंत हुआ और मुझे इसके विचारमें यहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयवकोंकी समाके व्याख्यानीमें जो बातें कही थीं, उनकी बृद्धि करना शुरू किया । में जो फुछ याँचता, निरोक्षण करता अथवा संसारी काम-कार्जोंने पटकर अनुभव प्राप्त करता था. अवकारा मिलनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जी इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था । इस तरह इस विष-यका एक अच्छा संघट हो गया और वहीं संघट आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है।"

यह प्रत्य सन् १८५९ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन १८६६ में स्माहत्स साहयने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताको और भी बढ़ा दिया है ।

इस प्रन्थकी शिक्षार्थे ।

इस प्रम्यसे क्या शिक्षा मिलेगी, यह डाक्टर स्माइलसके हाय्योंमें ही बतलाना अच्छा होगा । ये कहते हैं:-"संक्षेपमें इस पुस्तकका उद्देश्य निप्रतिसित प्राचीन किन्त लाभदायक उपदेशोंका बार बार दोहराना है । इन बातींकी जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोडा है.--

१ सुर्सा यननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवस्य करना चाहिए। २ उद्योग और परिधमके विना कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है। ३ इटिनाइयोंसे डरना न चारिए, किन्तु सन्तोष,श्रीव ^{कि}न्याय उत्तपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

मिला जिसमें पहले हैजेके रोगी रक्के बाते ये और इस बारण उमे होग मुफ्तमें भी न देना चाइते थे। इन्होंने निभंग होकर इसे ही के किया और अपना कान आरी कर दिया । " जो स्थान पहले भवंबर वा वह अब उद्योग और उत्ताहका केन्द्र बन गया)

सविप इस संस्थाने विक्षणकी पूरी पूरी क्षत्रस्था न थी, तो भी जी कुछ या उममें पूरा उत्साह और आन्तरिक प्रेरणा भरी हुई थी। जिमको जो इउ द्वा फूटा जाता या, वह अपनेसे कम बाननेवालीको निखलाना या, अपने आप मुपरता था और दूसरोंकी सुपारना था: और किसी न किसी तरह दूसरोंके आये

अपना उत्तम उदाहरण उपस्थित करता था । इस तरह वे सुदा पुरुव-जिनमें बहुत्रचे तो पत्रो उसके ये-जिसना बाँचना, अंक्रगणित, मूगोस, रमायनगाल, और कड़े वर्तमान भाषायें आप सीखने सने तथा औरोंडो सिसताने लगे। "इस तरह उक्त संस्थामें लगमग १०० मनुष्योंचा जमान होने लगा। 53

दिनों के बाद उन्हें ब्याम्यान मुननेहा शीक संगा और उनमेंसे कुछ युवक मेरे पान भाषे । उन्होंने अपने पैरों रह खंडे होकर जो उद्योग और परिधन किया था और जिम नमतारे मुससे व्याम्यान देनेशे प्रार्थना की थी, उसका मुसदर क्या प्रमाव पत्रा भीर में जानना था कि आम समाओंस ब्यान्यान देनेश कुछ विशेष पत नहीं होता है तो भी भैने स्वास्थान देना स्वीकार कर निया । मैंने निधय किया कि हृदयत्री वास्तविक प्रेरणांन और समाहेंसे जो इछ कहा जायगा उसका उर्छ अमर पड़ विना न रहुगा । इस उद्देश्यसे मैंने उक्त सभामें कई ब्यास्थान रिये ओर उनमें अनह कर्मवार मनुखाँ है उदाहरण देवर बतलाया कि नुममें हे प्रस् मनुप्त, बाह बाह ना न्यूना श्वरूपमे वैसे ही काम कर सकता है। दुन्हारे आवामा जोवनदा मन और बस्थान स्वय तुमारे ही अपर श्रवतम्बत है, हर लग पुन्ह अपने आपना उपायपूर्वक विलित बनाना चाहिए, अपनेको समिने रराहर अन्छा आदतें डाउना बाहर, अपने मनहो कामे स्वहर बसना बाहिए श्रीर इन सबन बढ़कर अपने कतंत्र्यका पालन सवाडे और एक्नियांसे क्रमा बारहण, क्योंक मनुत्यके चारवृक्त मारी सुवियाँ उसकी कर्तक्यनिया पर ही

अवस्थित र १ "इम उपरागंग व काई नइ बात थी और न कोई नया विचार ही था-पुरानी

नवडी बाता हुइ बानें ही दोहराई गई थी, तो भी पुरुद्धीने उपदे बाद. रहे शाय पुत्रा । व बारना अन्वास बहात गर्ने और दह निश्वये उत्साहपूर्वह

परिधम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आतो गई और मीके मिलनेपर वे तरह तरहक रोजगारोंने लगते गये। उनमेंने कई लोगोंने तो अच्छी उमति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुपोंने होने क्यों। कुछ समयके बाद इनमेंने एक ऐसे पुरुपते मेरी मेंट हुई जिसने अपने उद्योगके वह पर अपनी अच्छी उमति कर ली थी—जो एक फारसानेका माठिक बन गया था। उसने कहा "में इस समय बहुत सुसी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे सायियोंके सामने जो समे दिक्षापद ब्याख्यान दिये थे, उन्हें में बाज भी छत- कहा पूर्विक समरण करता हूँ। आपने जो मार्ग पतल्या था अपनी हाफिन्मर प्रयान करके में अवतक उत्तीपर चल रहा हूँ और मुरे पदा विश्वास है कि उत्तीके कारण मुहे यह एत्रसर्थिकी प्राप्ति हुई है।

" इस पटनासे स्वावलम्बनके विषयको ओर मेरा प्यान विदेशस्त्रसे आक-पित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उफ्त नवपुषकोकी सभाके स्वास्त्रानोमें जो बातें कही थी, उनको इदि करना हारू किया। मैं जो इन्छ बाँचता, निरीक्षण करता अवचा संसारी काम-कार्जोमें एकदर अञ्चमब प्राप्त करता था, अवकादा मिलनेपर उन सब पातीका उतना भाग जो इस विषयके छए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विषय बका एक अच्छा संमह हो गया और बही संगई आज इस रूपमें प्रकाशित किया

जाता है।"

यह प्रन्य सन् १८५६ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्नाहल्य साहयन इसने अनेक नये उदाहरण सामिल करके इसकी उपयोगिताको और भी बढ़ा दिया है।

इस प्रन्थकी शिक्षार्ये ।

इस प्रन्यसे बया शिक्षा मिटनी, यह बाक्टर स्माइलके शायोंमें ही बतलाना संपत्ता होगा। ये कहते हैं:-"संसेषमें इस पुस्तकता ट्रेस्स निम्नतियत प्राचीन रिन्दु लाभदायक उपदेशीका बार बार दोहराना है। इन बातोंको जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोड़ा है,--

१ मुसी दननेके लिए असेक युवककी काम अवस्य करना चाहिए।

२ उदीम और परिश्रम के बिना बोई भी महत्त्वपूर्ण बार्य नहीं हो सकता है।

। बटिनार्थित हरना न चारिए, बिन्तु सन्तोष और पैर्देक साथ उनपर विजय प्राप्त बरनी चारिए।

 प्रत्येड सन्त्यको अथना वरित्र उत्तर्भेणीका बनामा वाहिए; वर्षो के इसके क्षित्र काराधिक बोम्पण निकम्भी है और गोगारिक सक्षमता दो कौडीकी है।" बावदर स्माहम्मने इन उपनेभों हो मैक्डों उदाहरण देहर ऐसी सरण धीर निकार के रातिने नवसायां है कि संकृष्य है जिलार उनका गहरा प्रभाव पहला है। इन्द्र इन कामने वृत्री नामना हुई है। उन्होंने रियम्ब दिया है कि इह जानिके और हर तरह है बाब बरनेवाले अनुष्य-नाहै, वशी, यमार, कम्हार, मनार, बहरे, जुगहे, सबरूर, स्वापारी आदि-और हर एक धेवी हे सन्य-अमीर मराच साधिक सबहर मागार व सहर ह आए- अपने उत्तीमने सपनी द्वानिमें ग० बारता प्राप्त कर सबने हैं । परिधान और धेंब ह सामन सब नरवृद्धी करिजाइयाँ पूर हो जानो है और इन युपान इस्त नाचने नाच और मुर्न मनुष्य भी मुख म क्ष बाग्रामान कर गरना है। दमाने और होया उन्हीं हमारे हैं। क्यात रहत का जाने पर्य जार तर होना व्योक्तार की अलीव होती हर-दवी रक्षणेकी वह दें। अलनकारी इस घन्यार प्रवादनी करी जाती शावरणwas & an arm and consens the series and the day of the बण इसदा अवनद्भव कर । । । । । । । । । । वहन वदन वपनारी प्राद्ध ent अस्तिक स्वाप्तिक विदेशी gent on the time to the time 45,0

por great

grant between in the form of another thanks the set of the set of

समें अनेन देशी उदाहरणं शामिल कर दिये हैं, जिनका प्रभाव हमारे हैया। तियों पर विदेशी उदाहरणोंसे अधिक पढ़ेगा; परन्तु इसके माय ही मूल पुस्तहमें जितने महत्त्वपूर्ण विदेशी उदाहरण हैं ये भी इस रूपान्तरमें रक्षे गये हैं।
अध्यायोंके प्रारंभ और थीचमें कुछ हिन्दी और संस्कृतके सुमापित बढ़ा दिये
गये हैं। इँग्डेण्डकी समाजसंबंधी बातींमें परिवर्तन करके उनकी भारतवर्षके
समाजके अतुकुल यनाया गया है। मूल प्रथम सातर्पी अध्याय—जो सर्वभा
इँग्डेण्डके समाज—वहींक सानदानी रईसोंसे संबंध रखता है—इस पुस्तकमें नही
रक्षा गया। इतना हर फिर करनेके साय ही मूल प्रथम भाषिमा करना पड़ा
सा करनेको चेदा की गई है। इस सायोंमें सुसको यह पायोंमा करना पड़ा
है। देशी उदाहरणोंकी रोज और सुनावमें बहुत समय राजे हुआ है। कही
कही तो छोडे छोटे उदाहरणोंकी स्तोज करनेमें मुसे यड़ी वड़ी वड़ी पहने आदो-

ų

पत्रिकाओंसे सहायता ली है जिनमेंसे मुख्य सुख्य ये हैं:---(१) ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका जीवनचरित ।

(२) सरस्वती (मासिक पश्चिका) के फाइल । (३) मिश्रवंधु-विनोद (हिन्दी-प्रन्थप्रसारक संडली द्वारा प्रकाशित) ।

(४) जानजीकीर्तिप्रकाश (मराटी)।

(५) बालबोध (मराटी माविकपत्र) के काइल ।

(६) अस्तोदय तथा स्वाभय (मनः बुखराम सूर्यराम त्रिपाटीकृत, गुजराती)।

(7) Biographies of Emment Indians. (C. A. Natesan & Co., Madras.)

(8) The Indian Nation Builders, in three volumes (Ganesh & Co., Madras,)

(9) The Annals and Antiquities of Rajasthan (James Tod.)

(10) The ' Leader. '

वर्ग्युष्क पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओंके देखकों तथा संपादकोंका में अत्यन्त वर्गकृत हूं। मराठा पुस्तकोंके पढ़नेमें मुझे एक मराठा सव्यनसे सहायता मिली है। अतएव में उनका भी आभारी हूँ। अंतमें में श्रीयुत पण्डित नाम्रामको प्रेमीके प्रति कृतहाता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इस पुस्तकका संक् फ्रिया है और अपनी बहुमून्य सम्मतियोधे मुझे बहुत ही महायता दौहै। उन्होंकी कुपासे मुझे भाज इस पुस्तकको भारके सामने रखनेका सौमाग्य प्राप्त हुआ है।

यदि इन पुरुषक्षे हमारे माहयोमें उत्नाहका कुछ भी संबार हुआ, तो मैं अपने परिध्रमको सफल समझूँचा ।

क्योदी वेगम, आगरा, १-२-१५

विनीत-सोसीस्टाळ ।

दृसरे संस्करणकी सूचना ।

इस पुस्तदका प्रथम सम्बद्धि रहे । यो प्रथम १ व.४ । यह हिन्सीप्रेमिक सीह अनुसरका नी पार ६ । १८ १० । १८ १० १० । १८ ६० स्थाप अब जब स सक्त भवता ।

प्रथम महस्याम भागभाव । ज वा १९४१ हु महिला हो गया या इत्र बार हम बजाव १४ १४ । जा व्याप्त हम मन्द्र रणम सह दर्गा उद्देशका १४ व । १९५४ व (व स्वाप्त हम स्वाद स्वाप्त व्याप्त है) १९७१ हुए । १९४४ व्याप्त हम

ब्याप्ट वेगम, अग्नान ३

मार्नास्त्र ।

्रिविषय-सूची । है पहला अध्याय।

. ⊲∋∞€⊳

जातीय थाँर व्यक्तिगत स्वावसम्बन ।

स्वावटम्यन्द्या भाव—प्रजा शीर टसके नियम—कैसी प्रजा कैसा राज्य—विक्रमादित्यक्षा सहारा शीर स्वावटम्यन—सब धेनियोंने धीर शाँर परिध्रमी मनुप्य
होते हें—स्वावटम्यन सँगरेज जातिका गुन है—रूमरोंकी व्यावहारिक शिक्षापर
ट्योगरील मनुष्यक्षा प्रभाव—जीवनवरितोंकी टपयोगिता—महापुर्य किसी
विमेष जाति या धेनामें टत्यम नहीं होते—नीव जातियोंमें जन्म लेनेवाले प्रतिद्व
मनुष्य—बहुतसंप्रतिद्व मनुष्योंसी पहली निम्म अवस्था—पंस्कृत और देशी भाषाकोंके अनेक प्रसिद्ध लेनक—माटजातिक प्रसिद्ध लेनक, प्रतिद्व राजनीतिक शाँर
सैनिक—प्रतिद्व स्वत्यामी मनुष्य—चेठ जावजी दादाओं वीधरी—न्यापारियों,
विद्याली वर्ता स्वत्यामी मनुष्य—चेठ जावजी दादाओं वीधरी—न्यापारियों,
विद्याली वर्ता स्वत्यामी मनुष्य—स्वत्यामी सन्वत्य मनुष्योंक टकाहरण
—तित्र धेर्गामें जन्म टेनेवाले प्रसिद्ध विदेशी मनुष्य—होक्सपियर—बहुतसे मनुष्यों सुष्योंको पहलो रिद्ध अवस्था—प्रसिद्ध ज्योतिपवालवित्या—हैसाई धर्मीपरोक्त होते प्रतिद्व पुत्र—उद्योगदील और टलाही मनुष्य—जाजेफ न्नोपर्य—विलि-वाम जैक्सन—राह नापम—मनुष्य अपना सर्वोत्तम सहायक आप ही है— पृष्ट र से १८ तकः।

दूसरा अध्याय।

आधोगिक नेतागण।

भारतवर्षके टिए ट्योगपंथियां आवस्यकटा—प्राचीन भारतके ट्योगपंथि— क्षेतरेलां इंट्योगफीटठा—स्थानका मतुम्पद्य सर्वोत्तन विश्वक है—दारिष्य कार परिश्रमके कारण आहें हुँदें केटिनाइया दुर्जय नहीं होती—तिन्न श्रेगीके मनु-दमिक किये हुए आविष्कार—मान्तके अंजनका आविष्कार—जेम्म बाट; उसका परिश्रम कीर ध्यानाम्यान—मैन्यू बान्टन—भारके अंजनने क्या क्या काम टिये जाते हैं—महीनको क्ष्यका चुननेका काम—आहेराईट; उसका श्रारंगिक जीवन







नीवाँ अध्याय । ॐेॐंं<

धनका सहुपयोग और हुम्पयोग ।

समयके सद्वयोगिंधे विवेक पृद्धिकी परीक्षा होती है—रगर्थनिरोपना प्रणअपने करर एसाये हुए देवस-नित्तव्ययता स्वतंत्रताके लिए आवरवशीय है—
फिज्लान आदमीकी देवसी-नितव्ययता एक सहस्वपूर्ण जातीय ग्रुण है—
रिचर्ट काबरेन और माइटकी सलाई-मजदूर भी स्वतंत्रता प्राप्त कर सहते हैं—
प्राप्तित हानरके पिताका उपदेश—सर्च आमदनोंक भीतर ही रस्ता चाहिए—
छाई वेकनका मत-पिज्लारची बरनेवारे—कर्जदार होना—हाइटनका कर्जकर्जके विवयमें बास्टर जानसनके विचार—जान लाक-राव्ययमें व्यापने विवार
रानटेकी सावधानी-पहुत केंचे दरजेके रहनसहनके विवयमें व्यापने विवार
प्राप्तित मननेकी चाह- नैपियरका आहापत्र—प्रश्लेमनी कामना करना—
धू निलर प्रलोमनि केंग्रे पर्च—हासर राईट-अपराधियोंका सुधार—हर एक
धंचा जो हैमानदारीके साथ हो सकता हो आदरणीय है—क्ययेका केवल
इकहा करना—पन मनुष्यके सहुणोंका सुन्त नहीं है—अनकी सांकिके विययमें
अतिहायोंकि—सर्थी प्रतिष्टा-पृष्ट १४३ तकः।

दसवाँ अध्याय।

•>>०<्र भपना सुधार-सुविधाय और काँडेनाइयाँ।

आस्मोद्धारके विपयमें एक विद्वान्ता कथन—डाक्टर अनेव्हका छिक्षण-काममें खगे रहना स्वास्थ्यदायक हूँ—मैलयसका पुत्रोपदेश—तन्दुक्तीका महत्त्व—सर आईक क्रयूटन—उडक्षपनमें आजारोंका प्रयोग—यहे आदिलयों के तन्दुक्तीको जरूरत—अमकी सर्वेत्र जय होती है—गरिश्रमको शिक्तके विययमें सर जीगुआ रैनाव्हत और सर काँगेवर वक्सटका विश्वास—गृहत्ता, पूर्णता, निगंवशिक्त और तरपरता—धैंपपूर्वक परिश्रम करनेका गुण—महत्त्वते जी पुरानेके हानिका-क्रम पर्वास पर्वास पर्वास विपयोंको पुरानेक हानिका-क्रम पर्वास पर्वास पर्वास विपयोंको पुरानेक पृत्र विहान क्रयूपिय अपनि सहययोग आर अनुभवि ही आसकती है, परन्तु पुदिक्षान सहययोग और अनुभवि ही आसकती है—पर्वास क्रयूपिय पर्वास प्रमुविव ही आसकती है—पर्वास विवास अपनि स्वास विश्वास है। स्वास क्रयूपिय पर्वास पर्वास प्रमुविव ही आसकती है—पर्वास विवास क्षयुप्योग और अनुभविव ही आसकती है—पर्वास विवास विवास विवास क्षयुप्य वहात क्षय पुरानेक पृत्र धी, तो भी वे महाराज विवास हो।



चारहवाँ अध्याय ।

477000

सदाचार और मुजनता।

मनुष्यके अधिकारकी चीजोंमें चरित्र सबसे बहुकर है-मेहिनका चरित्र-सदाचार शक्ति है-लाई इसेकीनके चारित्रिक नियम-जीवनका उद्देश ऊँचा दोना भाहिए-सचाई-मुंशी गंगाप्रसादके चरित्रके विषयमें निस्टर टीटाफोसका विचार-नुम दूसरोंको जैसे माछम होते हो वास्तवमें भी वैसे ही बनी-काम-काजमें ईमानदारी-आदतोंका असर-आदतोंने ही चरित्र पनता ह-आधरण-शिद्यचार और द्यालता—सबी ममता—विलियम और चार्ल मांट—छैठ राण रा-पर्जा-राचा सञ्चन-सञ्चनका एक गुण आत्मसम्मान-रानटेको स्वाभाविक न-प्रता—एखबर्ट फिजजिरल्ड---सज्जनोंके अन्यान्य गुण--ईमानदार जीन्स हानवे--टप्क आफ वेलिंगटन और निजानका मंत्री-उदारचरित बेलेजलीका १५ लायकी भेंट अस्वीदार करना-धन और मुजनता-निधनोंने भी बीर और गुलन होते हैं-एक उदाहरण-पाठीतानाके जनवोटिंग हासके मंत्री केंबरजीका शीजन्य भार स्वायाया-चन्नाद प्रांगिसकी मुजनताका उदाहरण-सजन मनुष्य संशा होता है-फेल्टनहार्वे-पाण्टबोंका बीरच्यवहार-बरशिन्टंड और टाइटैनिक जहा-जोंका हुबना और थीरता मुजनताके उदाहरण-सजनोंकी एक सुबी परीक्षा: वे अपने अधीनों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं-अन्या ला मोही और एक युवर-राल्क ऐबर कोम्यीका गुण आत्मत्याग—संघ सजन और कार्यकुराल मनुष्यका परित्र वंशा होता है-एष्ट २२३ से २४८ तक।



इंडरीदास, गोस्वामी	७,५७	95
वैदंग स्वामी, महारमा	99	फुटासिंह ६
द		फीरोजदाह मेरवानजी मेहता,
द्यानन्द सरस्वती, स्वामी	45	सर १०
दादामाई नोरोजी.	99	च
िनकरराव, रायराजा, शर	21	बदरहीन तम्यवजी, जिस्टम १९
रीनद्याल, राजाबहादुर	90	षटरामजी मेरयानजी
दीनसाह ऐदलजी याचा	90	मलवारी ७,६५-६६
देवेंद्रनाथ ठावुर, महर्षि	93	विमाजी रचुनाथ छेले १२९
द्रोणाचार्य	v	थीरवल, राजा ७,९९७९९८
द्वारकानाय	u	दोपदेव ५९-६०
B		बद्धान्द्रश्वासी, बहापुरुष १४८
धनीराम		31
न		
मरोग्द्रशास बग्नु, प्रारक्षिया		
राहापीव ६ ४		बाग्स विश्वसह ६४५
नरहार	v	श्रदद सुरमाधाध्याच । ५०५-५५०
meritie.		ग° र ज ।
सात्र पुर		₽.
Part + LAS A + 4 SE 1 41	54	attention and
4(A P 4)		and the state of t
$(\varphi^{(k)} \otimes \varphi^{(k)} \otimes \varphi^{$	٠.	8 e 411 6 .
Q		*** *,
CITE Y 4		4 2 Ec
Leech		#+ , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
Sec . 3 3		
V=1		
		are su .
3*14"	٠.	•

" राषधे बद्रकर यह बान है--जिन तरह दिनके बाद शत अगरेय आती है

वसी सरह जो मनुष्य अपने अन-बर्गके साथ सचाईया बर्ताव करता है गह बमरों हे साथ कभी कोटा बताँव नहीं करता । अ --- डोक्सपियर ।

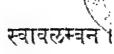
" यदि मही किसी नवयवष्ट्री उपवेश देना हो तो मैं उसमें यह ब्हैगा-

अपनेसे अच्छे मनुष्योंकी समझ हरो । तुमहरे पुस्तकोंने और अपने जीवनमें ऐसे ही सतुष्योंकी शरसर्गात बरना चाहिए, क्योंक तुम्हारा सबसे अधिष्ठ

हत्थाण इसीमें हैं । अच्छी वातोंको बदर करना सीखी, प्रोपनका सारा सु**ख**

स्मी बातपर निभंद है । यह दरा। कि महात्माओंने कन बानों ही दहर की थी।

उन्होंने महरदपूर्ण वानों हो कदर का थी। जो मनुष्य सहायोगवचारों के होते है वे मान वातीस प्रथम और शक्ति करते हैं। " --धकरे ।



· m Bat Hat Time

पएटा अध्याय ।

militarencies

जानीय और प्यक्तिगत स्यायटम्पन ।

4777 × 47.45

" वापन महास्य आप हो। होगा महास्य धनु सन्।, यम पादनसे ही शिमीओ सुख नहीं भिन्सा बनी। "

—कीपदीशस्य गुम ।

ं १४वी दशक, तुरान जलभे स्वव व्यक्तियोषी यायवामे होती है। ^{१९} ३ एक विकास

हा कार्यक्षा तीन-बायद बानुवान बहुत कुछ दानव विश्व हाह.

्या अर्थ संग्रह्म कार्यन हा कि हुआ उनकी संग्रह्म वस्ता है जो प्रत्य अपने संग्रह्म पर वास वस्त है हिस्स सामदी अनुसद्धा स्वार संग्रह्म सम्प्रास यह साव पेटा हा आगा है तो हुस्स आनीय स्वार्थ उन्यत्ति होती है नुस्त्रका सहायनाय वह ये हाति होती है पर्स्त स्वार्थ अराह पर वास वस्त्रम अवद्यस्य आण्या स्वार्थ होता है ये प्रि हिस्सा तानिय काम संग्रह्म अयद अस्त अस्त अस्त स्थारता हिया वह स्वार्थ अतीनक सम्प्रदार क्या वास क्ष्मदा उस्ताह कर हो तादा। आर



जातिकी उसति उसके पृथक् पृथक् मनुष्यके पिरुधम, उद्योग और सचादूसे निलकर होती है। इसी तरह जातीय अवनति प्रत्येक मनुष्यके आलस्य,
स्वार्यपरता और दुराचरणके समृहका नाम है। सामानिक क्ष्म्यामं मनुष्यके
दुराचारी जीवनसे ही पैदा होती हैं और ये तभी दूर हो सकती हैं जय
मनुष्य अपना जीवन और चित्र मुचार छे। यदि सरकार कानून बनाकर
दुन्हें दूर करना चाहे, तो ये क्ष्म्यामं फिर किसी दूसरे रूपमें प्रकट हो
जाउँगी। अगर यह मन ठींक है तो हमको नियमांको यदकने और अच्छा
धननिका ही प्रयत्न न करना चाहिए, किन्तु मनुष्योंको स्वयं उसत होनेमें सहायता और उत्तेजना देनी चाहिए; यही सर्वोचम देश-मक्ति और परोपकार है।

याद्य झासनकी अपेक्षा हमारा आंतरिक चरित्र हमारे लिए यहुत कामकी चीज है। किसी निर्देय राजाका दास होना यहुत ही छरा है; परन्तु अज्ञान, स्वार्थ और दुराचरणका दास यनना उससे भी चुरा है। ऐसे दास केवल राजा अथवा राज्यके यहलनेसे स्वतंत्र नहीं हो सकते। यह सोचना केवल अस है। स्वारितान चरित्र ही स्वतंत्रताका सूलाधार है और इसीसे सामाजिक रक्षा और जातीय उन्नति ग्राप्त हो सकती है।

मानवी उन्नतिके विषयमें हम अब भी भूकें किया करते हैं। कुछ छोग विक्रमादित्य और भोजकी बाद करते हैं और कुछ छोग सरकारी निय-मॉकी आवद्यकता समझते हैं। "हमारा करवाण उसी समय होगा जय विक्रमादित्य सरीला राजा राज्य करेगा।" जिन छोगोंका ऐसा विचार है उनका मतल्य यह है कि हमको कुछ न करना पड़े, कोई दूसरा ही हमार बहुले सब कुछ कर दिया करे। यहि ऐसे विचारको आश्रय दिया जाय, तो हमारे स्पतंत्र विचार जाते रहेंगे और अवनतिका मार्ग खुछ जायगा। विक्र-मादित्यका सहारा हुँदुना मानो उनकी शक्तिकी पूजा करना है और इसका फुछ येसा ही अकरवाणकारी होगा जैसा केवल धनकी मित्र करनेसे होता है। जातियोंमें फैलानेके छिए इससे कहीं अच्छा विचार स्वावक्रयनका विचार है; और जय महारा हुँदुने सामो उन्हति हमारे छोग हिसके अनुसार चरने छोंगे विचार विकार सामारित्यका आध्य करापि न हुँदुंगे। इसी तरह सरकारी त्य-मॉकी आवद्यकना समझना भी केवल अम हैं। हमारी उन्नति हमारे ही



जानीय श्रीर ध्यतिगत स्वादारस्यत्।

सारश्चित लिक्षा देती हैं। घरोंसे, बार्लीसें, बंबेंसें, बार्ल्यातींसं, केलेंसें, विरापतालाओंसें और अनुत्योंके निष्यंके ममनाममनेक क्यालींसें की जीवन-संबंधी जिस्स मिल्टली है यह पाटमालाओंबी जिस्समें कहीं जियादा ममाप-शालिनीं होती है। यह शिक्षा हमको सानपी जीवनके कर्लक्ष कीर व्यवहार शिरत्यातीं है—यह पुगावों हारा बदावि मास नहीं हो सबली। एक विहानने अपने सारगारित शाहरोंसें कहा है कि = अध्ययन करलेंसे हम अध्ययन के यह अध्यक्ष काराधित शाहरोंसें कहा है कि अध्यक्ष करलेंसे हम अध्ययन के वार सिक्त अध्या करलेंसे बाग दिला नहीं नीए जाते। यह जात से अध्ययनके उपस्थन बेचल जिला शाहर तियुल होता है। साहित्यकी अधेक्षा जीवन, अध्ययनकी अधेक बार्थ कीर जीवनधीरनोंके स्थायवावकी अधेका चरित्र मनुष्यनानिकी पुटिसेंबो सुर करते हैं और उपको सहैय उक्षम कार्ये रहते हैं।

तो भी बहे और विशेष पर नामन मनुष्यंकि जीवनपरित हुनरोशे महायाना गूपे उत्तेजना देनमें बहे निकायद और उपयोगी होने हैं। कुछ महामाओंके जीवनपरित नो पार्मिक पुरतकोंके समान है। क्यों कि वे अपने और नीमाक करना निकायते हैं। वे अपने और नीमाक करना निकायते हैं। वे अपने पैरेंपर आप गई रहने, अपने उद्देश्यमी पृत्ति पर्यपुर्वन रहने हैं। वे अपने पैरेंपर आप गई रहने, अपने उद्देशयी पृत्ति पर्यपुर्वन रहने अपने उद्देशयी पृत्ति पर्यपुर्वन रहने अपने उद्देशयी पृत्ति पर्यो मन्त्रों हमनो पह पत्रताते के प्रति प्राप्ति मान्यों पह पत्रताते कितनी हालि प्रति हि प्राप्ति मान्यों वह भी मान्य मान्या कितनी हालि भी प्रदेश हारा छोटेंने छोट मनुष्य भी मिन्हापूर्वन अपना निर्याह पर मान्ये हैं और पान्यिक यहा मान्ये स्वस्त हैं और प्राप्ति मान्ये यह सकते हैं।

यह बात नहीं है कि किसी एक जाति अथवा धेणीके ही मनुष्य विज्ञान, माहित्य और कला-कीशालमें विद्वान हुए हो । ऐसे मनुष्य विद्यालयों, कार-गानों और किसानोंके घरोंमें, निर्धन लोगोंके होपटी और धनाल्योंके मह-लोंमें—सभी ग्यानोंसे हुए हैं । कई वट्टे बट्टे धार्मिक नेना साधारण स्थितिके मनुष्य थे । कभी कभी अथवा निर्धन मनुष्य भी सर्वोच पदांपर पहुच गये हैं। बट्टी बटी फिलाइयाँ भी, जो अटल मास्ट्रम होती थीं, उनके मार्गमं याधक नहीं हुई। बिल



जातीय और स्यक्तिगत स्वावसम्बन ।

चाणक्य एक निर्धन प्राह्मण के पुत्र थे। वे स्वयं भी बढ़े निर्धन थे। चाणक्य जय पाटलिपुत्र (पटना) में नंदराजाके दरबारमें गये थे तत्र वहाँके पंडिताँ और दरवारियोंने उनके फटे और मलीन वस्त्र देखकर उनका वडा उपहास किया था। परन्तु चाणक्यने अपने उद्योगसे ऐसी इतिहतामें भी विद्या प्राप्त की। कामधेन और विद्यां मदैव फल देती है। अंतमें चाणस्यका यदा सम्मान हुआ । महाकवि गोस्वामी तुलसीदासके विषयमं बहुसम्मति यही है कि वे अस्पंत दरिद थे। सुरदास भी अस्पंत दरिद थे। वे आठ वर्षकी अवस्थामें ही अपने पिताको छोड्कर मथुरा चले आये थे। सम्राट् यायरके दरवारके हिन्दी कवि नरहिरके पिता यहे दरिद्री थे। संस्कृत और बहुभाषाके प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचंद्र विद्यासागर परम दरिही थे। हिन्दीके सुकवि कुरुभनदास भी बहुत दरिद्दी थे। वे बलुभाचार्यके शिष्य थे और एकबार सम्राट् अकबरने फतहपुर सीकरीमें इनका यहा सम्मान किया था। चैतन्य महाप्रमुने दरिद्र घरमें जन्म लिया था। इसी तरह गुरू नानक, अक्षयकुमार, द्वारकानाथ, कृष्णदास इत्यदि अनेक महात्मा निर्धन घराँमें उत्पन्न हुए थे। प्रसिद्ध मामिकपत्र ' ईस्ट एंट वेस्ट ' के मुयोग्य सम्पादक यहरामजी मेरवानजी मलवारी परम दरिह थे। वे याल्या-वस्थामें ही अनाथ हो गये वे और संसारमें उनका कोई आध्रयदाना नहीं था। प्रसिद्ध कोशकार वामन शिवराम आपटे अखंत दरिद्र थे। मदास हाईकोर्टके जज सर मधुस्यामी ऐयर ऐसे दृख्दि थे कि उनको १२ वर्षकी अवस्थामें ही एक रचया मासिककी नौकरी करनी पड़ी थी। कलकत्ता हाई-कोर्टके दुर्भापिया इयामाचरण सरकार भी वाल्यकालमें परम दरिद्र थे।



जानीय श्रीर प्यक्तिगत स्यायलस्वत ।

उनको बहुन पर्यम् विचा और उनकी विजी सुध बहु गई। इस बाममें सफानना पावन जावानि अपना एक प्रेम क्षेत्र दिया और उसका नाम ' निर्णयसार ' रक्त्या। इस फाममें भी उन्होंने पैसी ही चुनाई दियाई और देशी भाषाओंकी बहुन अच्छी पुन्नके प्राप्तेका काम प्राप्त का दिया। उन्होंने सब नाटके बहुन मुन्दर टाइप बनाये। फिर तो बम्बईबी स्पकारने भी अपनी बहुमूल्य संकृत पुन्नके इसी प्रेममें मजीनित बनाई। रहुनोंके दिल गुजरानी और महारावी पुन्नके भी बड़ी मजीनित होने क्सी। कार्जीके इस प्रेमको उपयोगी और उच्छोजीका बनाने में कोई बान क उटा रक्ती। वे स्पर्व भी बाजी नामी बिजानोंको पुन्नके मकाशित बरके बहुन घोड़े मूल्यमें बेचने करी। इसमें मर्ब साधारनमें निष्टाका बड़ा प्रचार हुआ।

उन्होंने अपने यहाँमें मीन सामिक कुनार भी निकालना आरंग किया, जिनके नाम धालयोध, काव्यमाला और काव्यमंग्रह हैं। इन पुन्तकोंने भी जनमाधारणकों बढ़ा लाम धूँचावा। जावजींने किननी मफलना प्राप्त थी, हमवा कुछ अनुमान इस यानसे हो सकता है कि जावजींके जीवनकालमें ही उनके प्रसंक सब कर्मचारियों वा चेनन मिलकर २०००)र मामिक या और अब यह रकम लगमग दुर्गा हो गई है। गवनेमेण्टने उनके कामसे मसम्न होकर उनकों ने० थीं॰ की उपाधिसे विस्तृपित किया था।

जायजीका चरित्र भी पट्टी उच्छेशीका या । ये बट्टे ह्यान्तु और उदार-चित्त थे । ये दीनहुविधाँमें बढ़ा प्रेम रस्तेन थे और उनकी सहायता करनेकों मदेव नत्तर रहते थे । एक बार उनके 'बालघोष ' नामिक पदकी उत्तमनासे प्रमुख होकर गायकबाट धीलवाजीराव महाराजने उनको १०००) रुपया का पुरस्कार दिया; परन्तु उदार्श्यत जावजीन यह रुपया भपने पास न रस्तक बालयोपके सम्पादकको दे दिया । जावजीके जीवनमें सबसे अधिक विचित्र यात यह है कि बहुत योदीमी शिक्षा पान्तर ही उन्होंने हतनी उद्यति कर ही। स्वयनायमें अपने उद्योग, परिवम और मचाईक कारण उनकी, आधर्यजनक वृद्धि हुई और ये सर्वनाघारणके प्रिय चन गये । उनकी मृत्युसे छापेडी करा और स्वयनायको पट्टी हानि हुई ।

ष्ट्राच्पापान्तीका जनम एक दुरिष्ट्र घरमें हुआ। उनको बाल्यावस्थाले ही अपने सिरपर नाजकी गटरी टटाकर बाजारमें बचने जाना पहला था। हे



चाह ऐट्राजी घाछा, पंटित आयोध्यानाथ और जिल्ला बद्रग्रहीन तत्रयप्रभीते पिता प्यापार करते थे। जिल्ला महादेय गोर्विद् रानहेंके पिता गांतिकमें एक साधारण कर्मचारी थे।

पंदित सद्त्रसोहन साल्यीय, महाग्मा तेलंग स्वामी, धीवुन गोपाल हाल्ल गोपाले, दावरा बाजेन्द्रालात सित्र, लाला हंसराज, ' एटबांकेट ' के सत्त्रादक सुन्ती गंगाप्रसाद चर्मा, बाद्गीनाय दर्ययक नालंग, मेर सालिकाचन्द्र हीराचन्द्र जे. पी. हत्यादिक पिता साधारण स्पितिक युक्त थे। धीवुन दादासाई नचरोजीक पिता प्रतेतिन थे, बिका पद कास उनके पंत्रीं कई पीदिबांने होता था।

क्रांतिक नेपोलियमके समान अनेक साधारण सैतिकोंने आधर्यजनक रक्षति कर थी है। मराटा-जिक्के स्वयस्थापक महाराज दिखाजी कीन थे है रनके पिता चाहनी बीजापुरके बादशाहके यहाँ मैक्कर थे। जियाजीने प्लामें रहकर युद्ध-कीलल सींग्रे थे। महाराज माध्ययराय सिधिया साधा-रण सैतिक थे। पहले पहल उन्होंने पानीपतके युद्धमें वुरु स्वाति पाई। फिर वे राजा हो गये। दिही और मधुरामें रहकर वे गुगल-सप्राद् ज्ञाह आलमके नाममें गुगल-राज्य पर भी जासन करते थे। उनके पिता राजोजी, बालजी विकास पेजवाके एक निद्ध सेवक थे। मैसूरके सुलतात हिन्द्रआही उनी देशके हिन्दुराजाके यहाँ एक साधारण मैतिक थे। यहमनी राजके संस्थापक द्वाह हुस्तन गंजू एक बाहाणके सेवक थे और असंत रहिन्दे थे। विहीके जासक और सूर्यकेक संस्थापक होरहाहि सूर एक साधारण मैतिक थे। दिहीके बादमाह कुनुय-उद्दीन पेयक गुलाम थे।

हुन लिए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उसितके लिए यह जस्ती नहीं है कि मनुष्य धनी हो अथवा उसके पास सब तरहके साधन मीजूद हों। यदि ऐसा होता तो संमार सब युगोंमें उन मनुष्योंका ऋषी न होता, जिन्होंने निग्न श्रेणीसे उपनि की हैं। जो मनुष्य आलस्य और ऐस आराममें अपने दिन विताने हैं उनको उद्योग करने अथवा कटिनाइयोंका सामना करनेकी आदन नहीं पद्ती और न उनको उस शिनका झान होता है, जो जीवनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए परम आवस्यक है। गरीबीको लोग मुसीबत समझि हैं, परन्तु बालवमें बात यह है कि यदि मनुष्य दद्दापूर्वक अपने



जानीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

शाह पेदरुसी बास्ता, पंढित श्रयोध्यानाथ और जस्ति बद्यहीन तस्त्रयशीहे, विता स्यापार करने थे। जस्ति संहादिय गोविंद रानहेंके विता नामिकमें एक माधारण कर्मचारी थे।

वंदित सद्तमोहन माल्डीय, भहतमा तिलंग स्वामी, धीयुत गोपाल एटण गोराले, दावटर राजेन्द्रालाल मित्र, लाला हंसराज, ' एडपेकेट' के मालादक मुन्ती गंगायसाद चमी, काजीनाथ टपेयल तिलंग, मेर माणिकचन्द्र हीराचन्द्र जे. वी. हत्यादिकं विता माधारण स्वितिकं वृत्य थे। धीयुत स्वदासाई नवरोजीकं विता पुरोदित थे, बब्कि यह काम उनके वंदामें कहें वीदिबंगि होना था।

म्रांसकः नेपोलियनके समान अनेक साधारण सैनिकान आध्येजनक उप्तानि कर ही है। मराद्य-शिक्षके व्यवस्थापक महाराज शिषाओं कीन थे हैं उनके पिना बाहजी की अध्येजनक व्यवस्थापक महाराज शिषाओं कीन थे हैं उनके पिना बाहजी की अपुरक्ते व्यवस्थापक महाराज शिषाओं की है। सिवाजीने प्लामें रहकर युद्ध-कीनल नीन थे। महाराज माध्ययाय सिधिया नापारण मैनिक थे। पहले पहल उन्होंने पानीपतके युद्धमें कुछ त्याति पाई। फिर वे राजा हो गये। दिली और मधुरामें रहकर ये गुगल-मग्रार्श हाह आलमक नामसे मुगल-गाय पर भी शामन करने थे। उनके पिता सानाजी विधनाथ पेशायके एक निरा सेवक थे। मैनूरके मुलनान हिन्द्र आही उनी देशके हिन्द्र सावाजी नी सेवक थे। यहमानी राज्यके मस्यापक शाह हसन गाँगू एक माध्यक सेवक थे। शिरा आयंत हरिंद्र थे। दिलीके शामक और स्तर्वक मस्यापक शिराह स्राप्त विविक्ष थे। दिलीके शामक और स्तर्वक मस्यापक शेरशाह स्रूप एक साध्याण मैनिक थे। दिलीके शामक और स्तर्वक मस्यापक शेरशाह स्रूप एक साध्याण मैनिक थे। दिलीके शामक और स्तर्वक मस्यापक शेरशाह स्रूप एक साध्याण मैनिक थे। दिलीके शाहकाह स्नुत्य-उन्होंन पेयक गुलाम थे।

हम िए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उद्यातके लिए यह जरूरी नहीं है कि सनुष्य धनी हो अथवा उसके पास सय तरहके साधन मीजूद हों। यदि ऐसा होता ती संमार सब युगोंसें उन मनुष्योंका ऋषी न होता, जिन्होंने निम्न श्रेणीसे उम्रति की है। जो मनुष्य आलस्य और ऐस आराममें अपने दिन वितात हैं उनको उद्योग करने अथवा कठिनाइयोंका सामना करनेकी आदन नहीं पट्ती और न उनको उस शिक्का झान होता है, जो जीवनमें सफलना मास करनेके लिए परम आवश्यक है। गरीबीको लोग सुसीयत समझने हैं, परनु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य इदतापूर्वक अपने पैरास नगर करे, में वही सार्थी समके किए अस्तानोर हो नकती है।
गरियों मनुष्यके समार्थक कम वृद्धके फिए तीवार कारी है सिसमें वचीर
हुए स्मेग अंग्या रिलावर रिवायन सिक्त को लागे हैं, वान्तु समाम्यार और
मधे हुएवचार्ग मनुष्य कम और विचायनुर्धक नगरे हैं और सम्प्रमा मार्थ करते हैं। एक दिहानुष्य कमन है कि "सन्वनांकों न मों अपने बनका प्रयोग जान है और न अपनी सीमका । कमने हैं नहान साहफ समाने हैं तिनाया उनाम वालयन नहीं है और सार्थकों ने उत्तरी करा नहीं बाते तिनायां उनाम वालयन नहीं है और सार्थकों ने उत्तरी करा नहीं कोर संक मार्थ अपना कार्यने नाजुक्त यह तिथा तिमार्थी है कि वह अपनी ही कमार्थकों रिति वाले और सर्वाय आसीरहरूकों किए और अपने विश्वसा

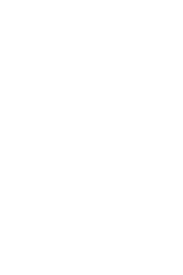
सुन्त भीर भोगिरमायां केया, जिन्दी भोर सनुन्त हरावारतः हुनते हैं, यह गेरा स्वाम कर्यारतः हुनते हैं, यह निर्माण हैं अब हुन्ते हैं यह सुन्त हैं यह यह हैं यह यह है के यह हुनते हैं वह रेप में ते सामित्रायां है हाए से हो यह ते हैं है हो हो है जिस होगिरमायां स्वाम उद्देशका अपना जीवन प्रतिकास कारणीत करते हैं। वह नुन्ति होता है कि हमारी होते के लिए प्रतिकास क्षारी होता है कि हमारी होता केया प्रतिकास हमारी होता है के हमारी होता है के हमारी हमा

पंताद्य प्रमुख्य भी अधिनाइ नहीं हो है । विद्यास जय सेहडा इराहरण मिलते हैं। भारतम भी क्ष्या इली ज्या वा जात है, जिन्होंने हिसी में हिमी हमा देवारिया का है आहे हिमें का जात पहिल्लामा अपूर्वांकी सिंधी प्रमुख्य करती चाहिए। माहित्यम वर स्वीहन्त्राया अहंदर मातिए, तिक्की मगरामें आहे भूम भी हुई है। आजड़ केसा महा समुख्य न्हमीचा सार दहा है। आपको स्वातान्य रूपवेडा पुरस्कार मिला वह सा असरे हार्तिनांक्सन दिवास्त्रक निमस्त हान कर दिवा । तैनानम असरे हार्तिनांक्सन देवार स्वातान्य का स्वतान्य कर सारकारी स

जानीय और ध्यक्तिगत स्वायसम्बन ।

देखकर मुरोप और अमेरिकाके घटे बड़े विज्ञानवेचा दौनीके मछे वैसाछी हमाते हैं। राजनीतिमें राजा खर दी, माध्यग्रायको लीजिए जिन्होंने दाव-मबोर, इंदीर और बदीदाने दीवान स्टक्ट उक्त साम्योंकी प्रणाका बहुत भारी उपवार किया और अनुक यण और सम्मान मास किया । आपने एक समू-दिशाही बादमें जनम दिया था । आपके पिता भी ट्रायनकोरके दीयान थे 1 क्षांचार देशभनीमें महापा मोहनदास करमचंद गाँधीक नाम नदा अगर रहेगा जिन्होंने अपने देशभाइयोंके दृश्येको दृर करना ही अपने जीव-मका एक मान्न उद्देश बना रक्ता है । आपके पितामह और पिता पीरबंह-रथे हीवान थे। जानि-हिनेपियोंमें नर स्टब्ट् अहमद्का नाम िया जा सकता है। उनके पितामह मग्राट आलमगीर (दितीय) के राजमंत्री थे और उनके पिताको सम्राट अकबर (द्वितीय) ने मंत्री-पद पर नियत करना चाहा था । उद्योग-धंधां और स्वापारमें जे. पन. टाटाका नाम हिपा नहीं है। दानी धनाद्यों में बम्बईके केट प्रेमन्यन्द रायन्यन्दको कीन नहीं जानना ? आएने अपने ही उद्योगसे विपुरु धन उपार्जन किया था। आपने अपने जीवनमें सब मिलाकर पचास, साठ लाज रूपये दान किये । आपने कई लाज रूपया कलकरीके विश्वविद्यालयको भी दिया, जिसके व्याजने ऊँची परीक्षा पास करनेवालींको एक छात्रवृत्ति दी जाती है, जो 'प्रेमचंद-रायचन्द्-स्काल्सिंप' के नामसे प्रसिद्ध है । अन्य समृद्ध कुटोंमें जन्म छनेबालोंमे श्रीयुत रमेदाचनद्वदस्त. सर तारकताथ पाछित, भारतेन्द्र बाब् हरिश्चन्द्र, महीपे देवेन्द्रनाथ हाक्षर, रावराजा मर दिनकर राय, मर मेट हुकुम चंद इत्यादिके नाम लिये जा सकत है। परस्य रसरण रहे कि इस समय ऐसे सन्दर्ध भारतवर्षमें इते-ពែក ស ស

अब विद्यास चिलिए। बिद्यास कई प्रकारक उदाहरण तो आस्त्रवर्षस सी अधिक और उसस मिलत है। बहाँ पर सेकटो तीच स्थितिक सनुष्योंने असित यदा प्राप्त किया है और अपन देशका ही सुख उज्ज्ञन तहीं किया है, किल्ल समस्त स्थारको लाल पहुंचाया है। आस्त्रवर्षस जात-पीतिका सेद यदा प्रवत्त है ह्मलिए यहाँ तीच मानिक समुख्य उटने नहीं पाने पर्स्त इस्लैंग्ट आदि देशोंसे, यह यात नहीं है। वहीं ऐसे सैकडी सनुष्य विज्ञान, साहित्य उद्योग, स्थवसाय इन्यादिसे बहुत वहीं प्रतिष्ठा प्राप्त कर गये हैं।



जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

करता रहा। चीर सर जान द्दाप्सबुड, जिसने क्रांसवालोंके विरद्ध पोतिअर्सके शुद्धमें विजय पाई थी, अपने आरम्मिक जीवनमें लंडनके एक दर्जीके
यहाँ काम सीखा करता था। परन्तु दर्जियोंमें सबसे प्रसिद्ध निःसंदेह युनाहदेह स्टेट्स अमेरिकांक भूतपूर्व प्रेसीटेंट पेंद्रप्यू जानसन हैं, जिनमें विचिन्न
चरित्र-यल और मानसिक प्राप्ति थी। एक बार जय वे वार्तिगटन नगरमें
अपने एक व्याल्यानमें चर्णन कर रहे थे कि में अपने राजनैतिक जीवनके
झुल्में चाहरका हाकिम हुआ था और फिर नियमस्ययस्थाके सभी आंगोंमें
होकर यहता चला गया, नव ओताओंमेंने एक आवाज आई, कि "दर्जीकी
स्रेणींने उठे हो!" जानसनका रवमाय कि वे ऐसी शुरकी लेंसे शुरा
म मानते थे, उल्टा उसको लामस्ययक बना देते थे। वस उन्होंने तुर्रत ही
कहा कि, " बाई सज्जब कहते हैं कि में दर्जी था, परन्तु में हस यातमें
विचित्र भी गई प्रवहाता, क्यों कि जब में दर्जी था, सामहामें और
करदे बनानेंमें मिलद था; में अपने ब्राहकोंने अपने वायदेमें कभी न प्कता
था और सर्दय उनमें काम करता था।"

यार्डिनार चुरुजी, टीफो कर्यचाहर, इत्यादि कमाई थे। भाकके अंजनंब आविष्यारके संबंधमें स्पूर्कोमन, बार और स्टीफिल्सनके माम प्रीमह है। इनमेसे पहला लुहार था, दूसरा गणिनसंबंधी आँजार बनानेपाला था आर नीमरा अजनमें बोचला होकनेवाला था। माइबल फेरिडे, जो एक स्ट्रास्व प्रथाय गुरुमें जिल्हा बोफनका काम नीवने रह और बाईम वर्षकी अवस्थानव बना पड़ा बनने रहे वे अब टार्डीनकोंके दिशोमणि है।

्यानि ताध्यक्षा उद्यक्ति बजनेवालीका लीजिए । योगिनिसका पिता छव व्यक्ति पकानेका घटा वस्ता था। वैत्यस्टर जर्मनावं एक स्टि-याका १८२१ था । ही यस्टिस्यटेकी एक विश्वतं स्वादियो पर कोई सामका दार सवा वर्ग कीर एक जिला । पालिया वस्त्रवालकी स्ना उस्त याक्ष्य उटा राह यो और स्थान स्थवा पालक पापण किया था हैस्सरेस एक दौरह विभागका लटका था।

प्रमापदभक्षक पुत्रोच इस्टेल्डक इतिहासमें विद्यापन रहारि । इसमेग ममुद्री युद्धाम हेक और नेस्ट्रस्तन, विद्यासम योस्ट्रेस्टन और



जानीय और व्यक्तिगत स्वायलम्पन ।

भी अभिमान है कि एक मतुष्य, जिसने ऐमी दशासे उद्यति की है, इस देशके खानदानी रईसोंके साथ समान अधिकारीं सहित बैठनेके योग्य है।"

राजसभाके एक सदस्य मिस्टर विस्टियम जीवसनका जीवन भी भारचर्य-जनक उन्नातिका उदाहरण है। विलियम जैन्सनके निता, जो एक धेरा थे, अपने जिन न्यारह यद्योंको छोडकर मर गये उनमें विलियम जैन्सन सातवाँ पुत्र था। पिताके जीवनकालमें यहै लड्कोंने तो अप्टी शिक्षा प्राप्त कर छी. परन्तु उनकी मृत्यु होनेपर छोटे लदकोंको स्वावलम्यनके मार्गका आश्रय र्देडना पडा । जय चिलियम जैक्सन बारह वर्षका हुआ तव उसका पाटशाला जाना धंदकर दिया गया और वह एक जहाजमें नौकर करिया गया. जिसके बाहरी भागपर सबेरे छः बजेसे रातके नौ बजे तक कठिन परिश्रम करना पहला था। उसका स्वामी थीमार हो गया और वह विशियमको हिसाब-किताबके कमरेमें रखने छगा । यहाँ विलियमको पहलेकी अपेक्षा भिधक भवकाश मिलने छगा । अब उसे पदनेका सुयोग मिल गया । एक प्रसिद्ध अँगरेजी विश्वकोश उसके हाथ पड्गया और उसने उसकी २६ जिल्हें कुछ तो दिनमें और विशेषकर रातमें पड़ दालीं । उसने फिर निजी स्थापार करना आरम्भ किया । यह भेहननी था, अतएव उसकी इस काममें सपाहता हुई । अय यह यहुतसे जहाजोंका स्वामी है जो ख्यामग सब समुद्रींपर चछते हैं और वह संमारके एगभग सभी देशोंके साथ व्यापार करता है।

इंग्लंडफ धनाह्य मनुत्योंमें आधुनिक दर्शनशासके जन्मदाना येकस, ह्यास्टर, घोईल सीर रोसी इत्यादिक नाम लिये जा सकते हैं। इनमें रोसी प्रसिद्ध पन्त्रकार हो गया है। यदि यह धनाद्य धरानेमें जन्म न लेता, तो कर्तााचन वह आविष्कारकर्ताओंका त्रिरोमणि होना । रोसी लुहारके क्षाममे एमा प्रवीण था कि एकबार एक कारवानेक स्वामीने—जिसको उसके धनाद्य होनेका हाल मान्द्रम न था—उससे एक वट कारवानेका प्रधापकर्ता कननेक लिए आग्रह किया था। उसने स्वय जिम टेलीफोनका आविष्कार किया, वह हम प्रकारक अन्य येथोंमें निश्चपर्यंक अधिक अपूर्व है।

लाई द्वीधमका अट्ट परिश्रम होक्प्रसिद्ध है। वे जनसाधारणसर्वधी इस्तोम ६० वर्षकी अवस्थास भी अधिक अवस्थानक योग देत रहे। इस अवस्थाम उन्हेंनि कानुन, साहित्य, राजनीति और विज्ञानसंवधी अनेक



दृसरा अध्याय । ॐः०ःस् उद्योगी आविष्कर्ता ।

" सर्वेत्र एक अपूर्व युगका हो रहा समार है, देखो, दिनों दिन यह रहा विज्ञानका विस्तार है। अब तो ठठो क्या पह रहे हो न्ययं मोच विचारमें ? सुख दूद, जीना भी कठिन है अम विना संसारमें ॥ "

—मिथिलीशरण गुप्त ।

" निम्नप्रेणीके मनुष्योंने ईन्लेंडके लिए आविष्कारसंबंधी जितने कार्य किये हैं जनको निकाल हो और फिर देखों कि केवल उन्हींके अभावसे इंग्लेंडकी हिसति कसी हो जातों है।" —आधर्र हल्स ।

" अय संसारका स्वामित्व उद्योग और विज्ञानफालके हाथ रहेगा । विज्ञानके पण्डित शीर उद्योगी पुरुप अपनी द्वाजिसे सारी दुनियाको यद्वीभूत कर हेंगे । ।

—इसाल्यान्दी ।



एक महं अनुभाव मानुष्यका काम है कि कहुँयं कहे परिश्रममं भी भानगर मिलना है और उन्हांन करने के माध्य प्राप्त होने हैं। हैंमामदारिक साथ परिश्रम महत्वेर सर्वेषतम किया मिलना है और परिश्रमकी पाइसाल सम्बद्ध उत्तर्भ करने स्वाप्त है। बर्ग परिश्रमकी पाइसाल सम्बद्ध उत्तर्भ है। वर्ग क्षिप्त परिश्रमकी पाइसाल सम्बद्ध अपने अर्थ के प्राप्त करने आदे पाइसाल के स्वाप्त करने के स्वाप्त करने के स्वाप्त करने स्वाप्त करने के स्वाप्त करने के स्वाप्त करने के स्वाप्त करने स्वाप्त करने के स्वाप्त करने स्वाप्त करने स्वाप्त करने परिष्ठ करने के स्वाप्त करने स्वाप्त स्वाप्

पहारं भाषायमें हम अनंब प्रतिष्ठित मसुत्यों भाम किल आये हैं, जिन्होंने अपने उद्योगके द्वारा निद्ध केथील उटकर विद्यान, स्थापार, साहित्य, हिर्म्य हुएयाहिमें स्थाति पाई है। उनके उद्यादरणीये मारहम होता है कि सार्गियों और प्रमाने आजाती हैं वे दुर्जेय नहीं है। जिन उपयों और आविष्यादोंची बहील्यन भेगरेज जाति एमी सारिताला किला और प्रवासिताला हो गई है, उनके अधिकांचके किए निस्मेंद्र आयंति निद्धा कर्षीय महत्योंक। आआर मानना चाहिए। इस संबंधमें ऐसे होतांचि जो पूरा क्यारी हिर्म क्षाय मानवा चाहिए। इस संबंधमें ऐसे होतांचि जो पूरा क्यारी हास प्रदेश स्थापत करा क्यारी सारहम होगा कि अस्य मनुत्योंक हास प्रान्तवमें बहुत ही कम काम हुआ है।

आविष्यार-वर्तांशिंक द्वारा समारक कई वह बहे व्यवसाय चलपहे हैं । उनव ्राम समारको आवहयक पहार्थ और सुरा नथा भोगविलासकी चीतिं प्राप्त हो। समारको आवहयक पहार्थ और सुरा नथा भोगविलासकी चीतिं प्राप्त हो। हो। जो हमार भोगविलासकी जानहों हैं, परन्त और सुराम और सुरामय हो गया है। हमारा भोगविलासको आनेहते हैं, परन्त प्रमार भागविला हैं, परन्त प्रमार भागविला हैं, परिवां भीगविला है, परिवां भीगविला है, परन्त है, गिर्च और विलाम हम क्या और जालपा प्राप्त करने हैं व्यास्थायन जिनम हम प्राप्त करने हैं, व जीता प्रकान होना है कर, कहात ह-परिवाहों भीति उड़ते दिनते हैं, व जीता जिनम नाना प्रकारकी चीते वनती हैं, जो हमारी आवहप्रकानोंकी हान करती है और हमको सुन्य हमी है—ये सब हमको यहुतस समुद्य तथा



उद्योगी बाविष्यती र

मारको बाल्यवालमें भी अपने निर्मानीमें विद्यानका दर्भन होना था । अपने विवास बर्मुस्तानेमें यदे हुए कै.चाई वायनेने थेलीको देनका उपने हिन्दिया और बर्मुस्तानेमें यदे हुए कै.चाई वायनेने थेलीको देनका उपने हिन्दिया और अध्ययमवा द्यांव थेदा हुआ । अपनी अस्तान्तिया और हिन्दिया और कारण उपने हारीर-लाखके हरस्यो जानना थाहा। और अपने आरायात्में सामों के अध्ये आरायात्में सामों के अध्ये इस्ता प्राप्त व्यवस्थानिका भीर हिन्दा कर्मा था, गय उसे एक चानेवी सरम्मावन बाम मिला। और क्यांव व्यवस्थान विचा बन्मा था, गय उसे एक चानेवी सरम्मावन बाम मिला। और क्यांव वामें श्वाप वामें स्वाप हिन्दी नाट के वाम निर्मा अध्य वाम विचा और उस वामें स्वाप हिन्दी नाट थे जा क्यांव द्यांव होते वाम वामा हुआ आपने के अंतर उसके वाम सरमानके लिए आपा वाम वामा हुआ आपने और अपने वाम सरमानके लिए आपा वाम वामा हो गाव, वामोंगिन के वाम वामा हो वामा और हमसे साम हो चेंच वाम साम को लिए नीचको लिए नाया हो चेंच विचा और निर्मोण-विचा भी सीचना हा। अपने अध्ययनके परिणागीके अपने वामन रिया हमसे परिणागीके अपने वाम के स्वाप वामें वामें वामें वामें वामें वामें की सीचना हमा। अपने अध्ययमके परिणागीके अपने वामन रिया हमा वामें वामें वामें वामें वाम अध्ययमके वामें व

इस परंतक वह पंत्रीको बनाना और उनके विषयमें विचार करता रहा। उसे आनीहन करनेके लिए आजाजी बहुत थोड़ी साथा थी और उसे उस्ता-हित करनेके लिए मित्र भी बहुत थोड़े थे। इसके साथ ही साथ घट पहुँ सहरे पंथे करके अपने युदुम्यका भरण पोषण करता रहा। यह उँखाई माप- मेंच पंथे करके अपने युदुम्यका भरण पोषण करता रहा। यह उँखाई माप- मेंच पंथे बताता और वंपता था, बाँगुरी और अन्य बात बनाता था, मका- मींची साप परता था, सहके सापना था, नहरीकी युदाईफ कामका निरीक्षण करता था, सरह जो काम मिल जाना था और निसमें कायदेवी पुरत दित्राई होंगी थी वही करने लगता था। अंतर्म वाटको एक पुषोच्य साथी सिल वाचा जिसका माम श्रैष्यू योल्टन था। यह एक पनुर, उद्योग- हील और इर्दर्शी मनुष्य था जिसने आफ के अंजनसे सब तरहके काम श्रेनका थाइ। उटा लिया था, और इतिहास अय उन दोनोंकी सफलतावा साधी है।

यहुतमे पतुर भाविष्कार-कर्नाभीने समय समयपर भाषके अंजनमें नर्ट् नर्ट् दाकियाँ बढ़ाई हैं और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सब तरहकी चीजें बनानेके योग्य करहिया है । क्लोको चलाना



चित्रक.—तो हीट्से क्षपने लायको पिछट्। हुआ देखते हैं---पृत्र कीर सफाने हैं, भीर हम बारण बाट, ब्हॉफिज्यन और आवेशहट वर्धाये समुष्यीको अपने स्थानहारित और सफाट आधित्वास्थानां होनेचे स्वर्धी और ल्यातिची बहुया रक्ता करती पटती है।

भाष बहुत्तरे वंग्रवारेवि समान आर्थ,राहरूने भी द्रविदी भवस्थाये रक्षति था। यह राम् १७१२ ईरवीमें प्रैयटनमें पदा हुआ। उसके मानारिता बहे बहार है और सह उत्तरे सेस्ट बालवीमें शबसे होटा था । उसने स्कूलमें कभी शिक्षा नहीं पार्ट; जो वृक्त शिक्षा उसे मिछी वट उसने अपने आप मास क्षी और यह क्षेत्र समयमक वही कटिनाईके साथ जिल्ले-पहुंचके योग्य हुआ। बाल्यकालमें यह एक माईके धरी काम सीत्वने लगा और जब यह यह काम सीम्य शुका, तथ बीस्टवर्मे रहने कमा । उसने पटींपर एक द्वावक मीचेका इस भैररानेके बाईके पास आओ-वह दी पैसेमें हजामत बना देता है।" इसरे माट्योंके बाहक कम हो घरे, क्यों कि व जियादा दाम रेते थे, अतः छनको भी अपनी मजदूरी घटाकर इसनी ही बरनी पड़ी । फिर आकराइटने, को अपने पंचेको चलानेकी किक्रमें था, यह घोषणा करदी कि " में एक ही पैसेमें अपटी हजामत बनाता है। " कुछ वर्ष बाद उसने वह सेपाबा छोड़ दिया और यह न्यान स्थानमें पुम-पुमकर बालोका रोजगार करने लगा। दस समयमें इंग्लैण्डके निवासी छम्पे बालीकी टोपी पहना परते थे और इन टीपियोंका यनाना नाईयोंक व्यवसायका प्रधान भंग था । आकराहट टीपियाँ धनानेके लिए इधर उधर पूमकर बाल गरीदने छगा । यह एक तरहका विजाय भी बनाने छमा, जिससे उसका धंधा खूब चलने छमा; परस्तु हतने-पर भी उसकी आदमनी कंपल इसनी होती थी कि वह अपना निवाह ही कर सकता था।

षुरु समयमें बार्टोकी टोपी पहननेके रिवाजमें परिवर्तन हो गया, अत्रष्य बार्टोकी टोपी बनानेबार्टीपर संबदका पहार टूट पहा, और आर्कराइटने शिसकी रुपि बंदोंकी ओर थी, अपना प्यान मशीन बनानेमें छगाया । उस समय कातनेकी करू बनानेकी बहुत छोगोंने चेष्टायें की थीं, इस लिए हमारे नाईने भी आविष्कारस्थी समुद्रपर औरोंके साथ अपना जहाज चलाना, —



उद्योगी आविष्कर्ता ।

अविष्कार दिया था, तय छोग उसके उपर टूट पड़े थे और उसको छॅकधरमें निकाल दिया था और बेचारे हार्गीकाने जब पानीसे चलनेवाली कातनेकी मशीन थनाई थी तय उपद्रवी छोगोंने उसे तोड़ डाला था । अत एव
वह नार्टियम नगरको चला गया और यहाँके सेटोंसे उसने आर्थिक सहायताकी
प्रायंना की । एक बार वह असफल हुआ, परन्तु एक दूसरी जगहसे उसे
हम दार्वपर महायता मिल गई कि वह अपने आयिकारसे कमाये हुए
धनमें उसको भी साही करे । आर्कराहटको अपना काम करनेके लिए एक
विशिष्ट अधिकार-पत्र भी मिल गया । पहले पहल नार्टियममें एक हर्दका
मिल बनाया गया, जो घोड़ोंने चलाया जाता था और कुछ दिनों बाद एक
हुसरा बहुत बड़ा मिल होमफडमें यनाया गया, जो पानीके जोरसे चलाया
जाता था।

परन्तु यदि आर्कराइटके आगामी परिश्रमका खवाल किया जाय, तो कहना परंगा कि अभी तो उसका परिश्रम शुरू ही हुआ था। उसको अभी नो अपनी मशीनके बहुनसे पुत्रोंकी पूर्ति करनी थी। उस मशीनमें वह निरंतर परिवर्तन और सुधार करना रहा, यहाँ तक कि अंतमें यह खुय काम-लायक और लाभदायक बन गई । उसने चिरकालिक धैर्यपूर्वक परिश्रमसे ही सफलना प्राप्त की। कह वर्षीनक नी निराधा होनी रही, रुपया भी बहुन वर्च हुआ और कोई ननीजा न निकला। जय सफलना निश्चय मास्ट्रम होने लगा तय लेकारके कार्गगर आकंगहरके विशिष्टाधिकार-प्रापर हम लिए हट पटे कि वे उसे फाट टाले । आर्कगहरको लोग कारीगरीका शसू कहने रूस और एक दिन पुलिस तथा शखधारी मिपाहियोंकी एक बलवती मेनाक रूपन रेप्यने लोगोंने आईगहरके एवं मिलको नष्ट करिया । लेक-शरके आर्टीमयोने उसके सुनकी खरीउनेसे इनकार विचा यद्यपि वह बाजा-रमे सबसे बटकर था। फिर उन्होंने उसे उसकी महालोके प्रयोगके लिए विविद्याप्तिकार न दिया और सबोने मिलकर उसे न्यायालयमे दलित कर-हना चाहा । सुविचारवान सनुष्योके ना-प्रसद करनपर भी आक्रेगहरका विदिशाधिकार गडबड कर्राटया गया । स्यायालयमे प्रशिक्षा हो चकनेके बाद जब वह एवं सरायवे सामन होकर—जिसमें उसके विरोधी हारे हुए निक्रण स्थाधा तो उसके एक विरोधीने आकंगहरको सुनानके लिए



निर्मित परसर विरोध है; सरन्तु आदिनावनाँक समके विषयमें वृष्ट भी निय नहीं है। यह विहित्यम स्त्री या और सन् १९६६ हैं-मिमें पैदा हुआ मा। वृष्ठ सोसोंका सन है कि उसके पास छोटामी नमीदारी थी और पुष्ठ रोम बहते हैं कि यह एक निर्धन विद्यार्थी या और उसकी सुम्से ही गरी-मित्रा सामना बरना पदा था। यह सन् १५७८ में भैनियमके माहुन्द साहि-समें भरती हो सथा। उसको भोजन, यक्त हुखादि याहिज्यों ओरसे ही सिल्ने थे। किर यह एक दूसरे बालिजमें भरती हुआ और यहाँ उसने बिल् एक बारिसा पास थी। यह एमक एक बी कक्षामें भी पदा या नहीं, यह दीक नहीं माहुन।

जिल समय छीने मोजा बनानेकी बर्याका आविष्कार किया उस समय पह एक तिरजेमें नीवर था। बहा जाता है कि यह एक युवर्गापर आलत. हो गया, परन्तु उस कुमारीने उसकी कुछ परवा न की। जब छी उस कुमारीके यहाँ जाता था, सब यह अपने मोजे युननेमें सथा अपने जिप्योंको हम कामकी शिक्षा देनेमें बहुत जियादा ध्यान देनी थी और छीकी वार्तोको न मुनती थी। छीको इस अपनानका घटा रावाल हुआ और उसने रात दिया कि अब में मोजा युननेकी एक मजीन बनाईमा जिससे हायकी अपेक्षा अधिक काम होगा और इस छिछ हायसे मोजा युननेका प्यपसाय छामहीन हो जाया। सीन वर्यनक यह अपने आविष्कारमें छ्या रहा। जब उसे सफलताकी आज्ञा सल्कने छाति, सब यह नीकरी छोदकर मजीनसे मोजा बनानेक ब्यवसायमें छम शया। इस कथाका समर्थन कई प्रमाणेसे होता है।

मोर्जेक्टी महीनकी आविष्कारसंबंधी घटनायें चाहे जो रही हों, परन्तु इसमें इ.छ संदेह नहीं कि आविष्कारस्तांकी यंत्रसंबंधी प्रतिभा बड़ी विरुक्षण थी। एक गिरजेके नीकरके टिए जो एक दूसरे प्राममें रहता हो और जिसका जीवन अधिकतर पुरन्कावटोकनमें हो व्यतीत हुआ हो, ऐसी स्हम और पंचीदा पुजोंकी महीन बनाना और उँगलियोंमें सलाहयोंसे मुस्तेक परे डाल-कर उनमें टोरा गिरोनेके धीमे और बंगलियों हामको मुस्तेनसे हातनेकी मुंदर और शीमपद्रतिमें एकट्स पटट देना वास्त्रयमें एक आधर्यजनक संगलता थी, जो यंत्रसंबंधी आविष्कारोंके इतिहासमें अद्वितीय कही जा



11 90 1 1 1 1

चलनेके लिए और वर्टोंके कारीगरीको मोजा यननेकी मधीन यनानेकी और उसमें बाम करनेवी शिक्षा देनेके व्यव अनुरोध किया, गय उसने उसकी द्यान सुरंत ही क्वीफार करायी । यह अपने आई और कई अन्य कारिगरी महित अपनी महीनको छेकर चला गया । शहन नगरमें उपका हार्दिक स्थागत किया गया और उसने एक वटा कारमाना श्रील दिया, जिसमें द्याची भी महीने निरंतर काम करने नहीं; परन्तु हुमी समय दम वैचारकी विषक्तिने किर था धेरा । फ्रांसका राजा हेनरी चतुर्थ, जो उसका संरक्षक धना था और जियमे उसको पुरस्कार, सम्मान इत्यादि मिलनेकी भाषा थी, मार दाला गया । हमने जो पुछ उत्नाह और संरक्षण उसे अधाक मिला था, यह सप जाना रहा । अपने स्वर्धोंको प्रबट करनेके लिए यह राजधानी मेरिसमें पर्हेचा, परन्तु यह प्रोटेस्टेंट सम्प्रदायका था तथा विदेशी था, अतुण्य उसकी प्रार्थनाओंपर कुछ भी ध्यान न दिया गया और नाना कष्टोंने संग आवार यह गौरपयान् आविष्कारकर्मा थोड़े ही दिनीमें पेरिसमें बड़ी गरीबी और आपति भगतते हुए इस संसारने उठ गया !

छीवा भाई अन्य सात कारीगरींसहित किसी तरह फ्रांससे भागकर इंग्लेंडमें भागया और मिवाय दो मशीनोंके अपनी सब मशीनोंकी भी हे आया। इंग्लैंटमें आकर उसने एक और आइमीके साय-जिसको छी ने मशीनसे भोजा युननेका यह काम सिखलाया था-साझा करलिया। फिर इन दोनेंबि और कारीगरोंकी महायतामें मोजा चुननेका काम शुरू किया और यहत सफलना प्राप्त की । जिस जिल्हेंमें यह कारखाना खोला गया था. उसमें भेट घहुत पाली जाती थीं और उनसे बहुत अच्छी कन मिल जाती थी। इंग्लंडमें धीर धार इन मदीनींका रिवाल बढ़ता गया, और अंतमें मदीनिसे मोजे पुनना एक बड़ा भारी व्यवसाय वन गया।

प्रसिद्ध विन्तु हतभाग्य जैकर्डका जीवनचरित यही उत्तम रीतीसे यत-छाता है कि चतुर मनुष्य-चाहे वे कितनी ही निम्न भ्रेणीके हों-अपनी जातिकी उद्योगद्यीलतापर यहा प्रभाव टालते हैं। जैकर्टके मातापिता फ्रांस देशके लायोन्स नगरमें रहते थे और बढ़े निर्धन थे । जैकर्डका पिता हाथसे वपटा युना करता था । अपनी गरीवीके कारण वह अपने पुत्र जैकडेको शिक्षा न दे सकता था। जब जकई बड़ा हुआ और इस योग्य हुआ कि कुछ धंधा सील सके तब उसका जिया उसको एक जिल्लू बॉवन्टेसान्डें पहाँ काम सील-में के लिए भेजने लगा। एक बहुँ गुमान्डेंने, जो उस जिल्ल्सातका दिसार दिया करता था, जिल्लेको कुछ सालि सिल्ल्या। जेकनेंद बोहूँ दो समर्थों चैन-विचारों भोर रिच प्रकट को और उसकें कहूँ कार्यों गुमान्डेंने बिल्ल्य कार्ट्सा। गुमान्डेने जेककेंद्र वितासे जैककंको कुछ और काम मिरलानेका कार्ट्सा । गुमान्डेने जेककेंद्र वितासे जैककंको कुछ और काम प्रित्तालोका कार्ट्सा थिया। जिल्ला का बनावी विचित्र सालिलांकी कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्य केकनेंद्र एक चाहु-केंद्री वार्यलेकोंद्र कार्टिक उसके साथ बहुत हार बर्गाय कार्ट्स कार सीलने कां। वायन्त्र उसका माविक उसके साथ बहुत हार बर्गाय कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स कार्ट्स

ह्मी भीक्यें बीकडेंके मालारिलाका नेहांग हो तथा, अलएक जैकडेंके सजदूर देविया नय दीन के दे सामिलें केलक कराइ व्हान्येका व्यक्त हुए करा रिया । यह दीन ही उन्ह सामिलें मुस्तारेंसे कमा तथा । अपने आरिक्यारेंसें बह ऐसा द्वापिक हुआ कि जसने व्यक्त पंचा छोड़ दिवा और वह वीक्र ही कहाल हो गया । इसके बाद उसने वपना चला जुकानेके छिए तामिलें केल दिवा में कामा कामिला कामा थी जानिका दिवारे उनके उपर कीर की आर हो गया । वह और भी गतिक होगिया और कर्यम प्रमान किस्त रिया उसने कामिला केल क्षेत्र केल क्षेत्र केल क्षेत्र केल करा कामिलें हैं अर्थ प्रमान केल कराना व हुई, परीक्ति कोगा व्यवस्थे में कि वह आसानी हैं और भारते भारिकारिक नाव्यंस भाषामध्ये माल व्यवस्था करा है । अगरें वह मिल सार्ति एक स्था जानिकारेंक स्थान में स्था केल क्षा कामी हैं और स्थारेंस वार्ति एक स्था जानिकारेंक स्थान करा है । अगरें वह मिल सार्ति एक स्था जानिकारेंक स्थान क्षा है ।

बुख बर्गोतक विकर्ड उन्नति करना रहा भीर काम उसने करना पुनर्वेकी मामिलक मानिकार किया । इस मानिकार विभाग थोग्योत राम विवर रूपमे बहा और उस वर्ष बाद लायो-म सामार्थ क्यों जा र इतार सामीर्थोने क्या होने लागा 'इसी बीच्यो विकोको एक पुरांग करना पहा भीर उसका काम कुछ दिनों तक कर रहा। कराविण वा सीकेक हो थवा रहना, पान्तु हम अस्वारार उसका बुळलीला कुत माना यांचा भीर वह लायोन्न नतार्थ अपनी कोई ताम सेर्योक्षा भावकर कीट भागा। । कुछ दिनोंगक वह वारी

उद्योगी आविष्कर्ता ।

टिपा रहा और अब उसे फिर अपने आविष्कारींका ध्यान आया। परन्त उसके पास इस कामके लिए, रूपया कहाँ था ? उसने एक कारीगरके यहाँ नीकरी करली जैकई दिनमें अपने मालिकका काम करता या और रातको अपने आविष्कारोंमें छगा रहता था। वह समझता था कि कपडा बुननेकी कलामें अधिक उग्नति हो सकती है। एक दिन उसने मालिकसे भी अनापास यह बात कह दी और खेद प्रकट करके यह भी कहा कि " मैं अपनी गरी-थीके कारण अपने विचारोंको कार्यरूपमें 'परिणत नहीं करसकता । " सीमा-ग्यवदा उसके द्यालु मालिकने उसकी वातोंका मूल्य जान लिया और इस कामके लिए उसको रुपया दिया ।

तीन महीनेमें जैकर्डने एक कल बनाई, जिसके द्वारा कठिन और थका देने-थाला परिश्रम जो कारीगरोंको अपने हायसे करना पडता था, यंत्रोंके द्वारा किया जाने लगा । यह मशीन पेरिमकी एक प्रदर्शिनीमें रक्ती गई और जैकडेंकी इसके पुरस्कारमें एक पीनलका पदक मिला। दूसरे वर्ष लंडनकी सोसायटी आफ आईमने ऐमी मजीन बनानेके लिए पुरस्कार नियत किया जिससे मछही प्करनेका जाल और राजुको जहाजपर चटनेसे रीकनेवाला जाल यन सके। जेक्टको जब यह समाचार मिला, तो उसने तीन सप्ताहमें ही ऐसी मही-नका आविष्कार करिया। इससे उसका इतना यहा हुआ कि ऋांसके सम्राटने उसको अपने यही बुलाकर उसका स्वागत किया । उसको रहनेके लिए मकान दिया गया और नये आविष्कार करनेके लिए उसका चैनस नियन करिया गया । यही रहकर उसे नरह नरहकी मधीने देखनेका संअवसर प्राप्त हुआ ।

उसन कर मंद्र आजार बनाये और फिर उनकी सहायनासे लक्डीकी एक घुटी बनाइ जो बिलवल टीव समय दती थी । एक छोटेसे गिरतेके किए उसने दबदनीकी कुछ मुर्तियों बनाइ जो अपन पखोको हिलानी धी और बंद्र मृतियो प्रजारियोवी बनाई जा गरजब सबबमे बंद्र सकेत किया करती थी। उसने और भी वह स्वयं वान वरनवाल खिलीन बनाय। उसने एक अद्भुत यतस्य यनाइ, जो संचा चतरंत्र समान पानीमें तेरती थी। खेल करती थी, पानी पीती या आर बोल राजा । उसने एक प्राचीन प्रथम वीर्णन घटनाके आधारपर एवं सोर बरुवा ता उसी तरह पूल्कार सारता और ⊾ानाधा जैसाउस <u>श्रुवसाल ल</u>ंह



तीसरा अध्याय।

घैर्यकी महिमा।

" संसारकी समरस्पत्तीमें घीरता धारण करी । चलतेहुए निज इष्ट पथमें संकटोंसे मत हरी ॥ "

—मेथिलीशरण ग्राप्त ।

" ध्रेयं या घोरज बीरताका छति उत्तम्, मून्यवान् और दुष्प्राप्य अंग है । घोरज सर्व भानन्हींका एवं सक्तियोंका मूल है । आज्ञासे मी, यदि उसके साथ अधीरना हो तो, बदापि सुख नहीं मिठता । "—जान रस्किन ।

इन्द्रम्मल जीवनचितिर्गेमं जो धैयेके आयंत महस्वपूर्ण उदाहरण मिछते हैं उनमंभे छुछको हम कुम्हारोंके हविहासमें पाते हैं। हनमंसे हम नीन सबसे विविध्य विदेशी उदाहरण छेते हैं जो फ्रांसनिवासी घरनाई पिछसी, जर्मनीनिवासी फ्रंडिंग्स वृद्धार और इंग्डेंग्डिनिवासी जोजिया धंजपुटके जीवनचित्रोंमें मिछने हैं।

यरापि अधिकाश प्राचीन जानियाँ चिकनी मिद्दीके साधारण यरतन दनानर्का कला जाननी थीं, परन्तु मिद्दीके बरतनींपर क्षोप या चमकदारलेप चढ़ाना बहुन कमको मान्द्रम था। इट्स्टियाके प्राचीन निवासी इस प्रका-रके लेपतार अथवा रहकदार बरतन बनानेकी कलासे परिचित ये और उनके बरतनींके नम्रन अब भी प्राचीन-यदार्थ-मब्रहींसे मिलते हैं। परन्तु इस कलाको लोग बीचमे कुल गये थे: इसका उद्धार अभी थोएँ ही पर्योसे हुआ है। प्राचीन बालमे इट्स्टियाके बरतन बहुन हामोसे आने थे; पर्दी तक कि मुग्नी: आगभ्यकं समयमे एवं बरतनवार मध्य उनीके वरावर तीलकर सीना दना पटना था। मुख्य लोगों बह कला मान्द्रम थी और वे सीनी-रागा इंपिम क्ष्य बरतन बनावा करने थे। जब मन ५५५५ ईस्पीम पिमायालीन के गामिन ले लिया नव व लटको और चीनोंक साथ मुख्य लोगोंक बनायेहुए वर बरतन काल गर्व बरदकों और चीनोंक साथ मुख्य लोगोंक प्रचार के प्रचान तिरकोंसे लगा दिया, त्रहों व बनक लगे हैं। हो हानाव्यिक्ष प्रधान इंट्सी-एस इस बरतनींकी नवस्वरंक लेपदार बरतन बनाने लगा।



धेर्यकी महिमा।

परेसारमे अपना टिवाना हुँद्में एटम । उसने चटाटे शैरवर्ष्मारी और धाना थाँ। यहाँ उसनो बाम मिट शया। यह बजी बजी समय निनाप्टर मुभिनो सापनेवा वाम भी सीया करना था। पिर यह उत्तरकी नरप घणा रामा और कह जगह जा-तावर रहा।

प्रितिश हम प्रकार हम वर्ष गढ मारा मारा फिरमा रही । हमके बाह हमने अपना पियान करिल्या, यूमना बंह वरिया और धेर्ममा मारक सगरमें रहवर होिंग्यर चित्रवार्धा और स्मिनी साथ वरमेवा वाम करने रसा । उसके बीम वधे हुए, जिनके पालन पोपणका भार उसपर आपहा और हसके साथ ही उसका कर्य बहुत बहु गया। चित्र भर बाम वरनेवर भी उसकी आमहानी उसकी कर्यमा बहुत बम होती थी। अत्रव्य उसको अपनी हमा सेभालना जर्यो हो या। उसके बुरू और अपना काम बस्तेवा विचार रिया और हम्मिल्य उसने मिहीके बस्तेवार चित्र बनाने और सेय पहानेके वामपर प्यान दिया। परन्तु वह हम बामको बिल्युक स जानका था, क्योंकि उसने हमसे पर्यक्ष किसीको मिहीके बस्तेव पराने पाने हुए में देशा था। अत्रव्य उसको सब वृद्ध अपने आप हो मीरका पड़ा। उसका वोहि सरायक न था परन्तु वह सफलतावी आपाम परिवृध या और मीरफोड़ा इस्तुव या। उसके निर्माम धीरज और अनेव संतेष था।



धेयंकी महिमा ।

पोरसरमें भएता दिवाना हुँदुने एटमा । उसने पहले मिसवर्माओं और यात्रा बी। यहाँ उसकी बाम भिल्न गया। यह बजी बजी समय निवालनर भूसिवी मापनेवा याम भी सीमा बजना था। पित यह उत्तरकों सरप, चला गया और कहुँ जतह जान्जावर यहा।

पीनिमी हुन प्रचार द्वार वर्ष नव सारा साम विस्ता रहा । हुम्ये बार उसमें अपना विवार वर्गित्या, मुसमा बंद वरदिया और मैनरीम नामक अगरों रायक इतियर जिल्हारी। और भूमियी साप करनेका बास करने क्या। उसके मान बच्चे हुए, जिनके पात्रन पीपणवा भार उसपर आपदा और हुम्ये साथ है। उसका कर्ष बहुन बहु गया। चानि भर बास वर्गवेश भी उसकी उसकी उसकी उसकी बहुन बहु गया। चानि भर बास वर्गवेश भी उसकी उसकी उसकी जान है। हो गया। उसने बुद्ध और अपना बास करनेवा विवास किया कीर हम्मिल उसकी मिही बरस्त पिन विदास वर्गवेश पाटानेव कामपर ज्यान दिया। वसन्त वह हुम्य वामकी बिलहुक व जानका था, वर्गीय उसकी पत्र बुद्ध अपने आप हा नीव्यत्य पत्र । उसकी कीर क्रियं पाटानेव कामपर जान है। हो अपना वाम वर्गवेश हुए न देखा था। असन्त उसकी अब बुद्ध अपने आप हा नीव्यत्य पत्र । उसकी कीर सम्माय न या पत्र सम्मानका आजाम परिष्ण था और मीव्यत्वेदा दर्शन या प्रस्थ विस्त स्था परिष्ण था और मीव्यत्वेदा

स्यायलभ्यन ।

मिट्टीके यरतन बनाचे और उनपर छेप करवेकी विधि जाननेकी आशामें मडकने छगा।

सहियों और क्योंतक पैतियां विशेषा परिभाद करना रहा। पहली भड़ीये जह काम स करना, नम उससे एक और आई पहले कार कराई । उससे जह सी भी पित एक लावियों जनाई, मिर्फिक समार्थ में समन नह दिक्त भी पित एक लावियों जनाई, मिरफ समार्थ में स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण में हिस्स मिरफ साथ में स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण में रिक्त साथ में अपने स्वर्ण स्वर्ण में रिक्त स्वर्ण में प्रत्य में स्वर्ण में रिक्त स्वर्ण में रिक्त मिरफ करना नहीं में स्वर्ण में रिक्त में में स्वर्ण में रिक्त में स्वर्ण में रिक्त में में स्वर्ण में रिक्त में में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में मिरफ स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में स्वर्ण में मिरफ स्वर्ण में स्वर्ण

धेर्यंकी सहिसा।

स्वर्यातकः राक्षे प्रकारे जाने ये श्रीत को उनके प्रत्ये हो श्रीमधे भी श्रीपक रूप था । हुकड़े पक जानेपर निकारे गये श्रीत यह उन्हें देवके गया; पान्तु उसे फिर शासकलना हुई। यसपि यह निवास हो गया नी श्री पाराण श्राह्मा; इसने उसी जाह पित गये सिरेसे बास हुट बरनेपा संकल्प बर्गल्या।

तर पून्त समय नक यह बाम व बर सका। बर्गीक यह शूम मायनेके कोई सरवारी बामके करनेपर मजदूर किया गया और इस कामबी इसे मजदूरी भी स्व मिली। इस बामने सुद्दी पाते ही यह अपने पुराने पाममें इने उस्तापिं साथ कम गया। उसने बील दर्जन मिद्दीके बरतन और मील केवर मोदं, उनके दुबद्दीय उसने कई तहके मनाले बातका दाले की पित उन्हें पकानेके लिए यह एक पामकी भद्दीपर के गया, जहीं हीता पा बाज गाया जाना था। इस बार इसे पुछ बुछ आता हुई। वीडोवी भद्दिकी केवा गारीने बुछ मनाले विचक समें, परन्तु उनका स्वेदद केव बचा।

बार हो वर्ष नक और परीक्षावे करता रहा, परन्त कोई गंतीपप्रह परि-णाम म हुआ। हुनी बीचमे भूमि मापनेसे उसे जी मजदूरी मिली थी पह सब वर्ष हो गई और यह पुत्र निर्धन हो गया। परन्तु उसने एक दार और भा जी-नोटकर योजिए करनका सकस्य कराँख्या और इस बार उसने सब उपाय अधिव बनाज मोट । उसन मान सीम भी अधिक टकडे झीडोकी अद्रीपर अज । इय और ब्रह्मेपर स्वय उनव प्रक्रमका पाल देखनेको गया । बार घर तथ यह दावता हहा और १९६३ वहा खोला ग्रह । तीन सी दिखरीममे कवल एवं दिकरका समान्य विधला आर यह निकालकर दश दिया गया । रदा होनपर समाला कहा हो गया और वह सफद-सफद नथा प्रिक्रनाया दिलन लगा । इस १८३१पर सफ्ड ह्या बंद गया भार पालमान इस अपूर्व सुन्दर ठहराया । हर्नना कष्ट उठानपर उस वह अवदय हा सुन्दर मान्द्रम उस लकर अपनी खाको दिखानक व्यव धर दादा आर उसम कहा 14 " सहा भाउम हाता है 14 अब म एक नया मनस्य हागया परना उसका सनारव अभी सफल न हुआ या अभी ना यह उसक भागा तर या । इस चष्टाम जिसका वह आज्ञाम समझता या. कउ सहस्रता हा जानम उसने और या पारआय की और उसका एक जनके बार असफन रताय हड़ ।



यनाये थे कहूं दिनोंतक आगमें पकनेसे अब बिल्कुल निकम्मे होगये थे। यह अपना रूपया तो सब खर्च कर खुका था; परन्तु उचार ले सकता था। उसकी साल अब भी अच्छी थी। उसके एक मित्रसे अधिक हूँघन और वरतन मोल लेनेक लिए काफी रूपया उचार ले लिया और वह एक बार और परीक्षा करनेके लिए तैयार हो गया। बरतनोंपर नये मसालेका लेप चढ़ाकर उनको भट्टोंमें रख दिया गया और आग फिर सुलगाई गई।

यह परीक्षा अन्तिम थी और सब परीक्षाओंसे अधिक साहसपूर्ण थी। क्षाग दहकने रुगी; गर्मी प्रचंट हो गई; परन्तु फिर भी रूप न पिघरा । र्रंधन नियरने एगा । अय आग कैसे जले ? बागका हाता एकडियोंका बना था । ये एकडियों जरु सकती थीं । इनको अवश्य विविदान करदेना चाहिए; इधरकी द्विया उधर हो जाय, परन्तु महती परीक्षाका काम न विगड्ने पाय। ये लकदिया भी श्रीचर्गीचकर तोड़ ही गई और महामें श्लोक दी गई । वे भी जल गई और बुछ न हुआ। लेप अभी तक न पियला। यदि दश मिनट और गर्मा लगे नो शायत पिघल जाय । चाहे सर्यस्य जाता रहे, परन्तु ईंधन वर्ताम अयस्य लाना चाहिए। अय केवल धरका लकटीका अमयाय और अलमारियो वाकी थी । घरमे चडचडानेका झब्द सुनाई दिया । खी और बचे, जो समझन ने कि पेलिया पागल होगया है, चिहाने रह गये और पैलियान मेजोको नोड-नाडकर अहामे झोक दिया। परस्त फिर 🎳 लेप 🛢 पिपना । अभा आलमारियो बार्का थी । घरमे लक्ष्मियोग चटचटानका डास्ट पिर मनाइ दिया आलमारियो भा नोटवर भट्टीमे झीव ही गई । उसकी म्बं और उद्यू धरम्य निकलकर आगे और पागलोजी नरह नगरम यह चिदाने हुए फिरन लगे वि 😬 बचारा पांत्रमा बावला हो गया है और हुँधनकेलिए घरका अस्रवाद नव नए वि.य टालना है !

पुरं एक महानम पेलियान अपन धारायस्य वृता भी न उतारा था। यह मृम्यकर विल्कुल काटा हा गया था—परिश्रम, चिन्ता (नरीक्षम और भूगम तम आगया था। यह कला हो गया था और विजाजोनमुख सादम होता या। परन्तु उसन अन्तम ग्राम रहस्य जान लिया क्योंकि गमाका आंतम प्रचढनामे लेप पिथल गया। जब साधारण सर्टमेल घडे भहीक टड पहुंजाने-पर उसमेम निकाल गया तब उसपर समुद्र सम्महार लग्न चडागया था। पुड़ा था, तो भी उसको उस ककार्य विद्वारणा मास करनेक लिए परीक्षानीतें कांड मर्द तक और निम साराना पड़ा। उसने वीरे धीर कदान्यद्वारा द्वारा कीरान्य और शिक्षण करता कांचा लिया और असान्यनारी क्यून पुछ करावस्तानिक द्वारा मास कांचिया। कांचा एक विष्याद्वारा देश तुम स्वाद करिया। । हा एक विष्यादनारी को तुम मास करिया। । हा एक विष्यादनार को तुम्मी हे विषय में मास अर्थी व्याद की तुम्मी के विषय कांचा केने के मामध्यों ने वह सार एक तुम्मी क्या केने के मामध्यों की दूर सार एक तुम क्या कांचा साराम्य कीरा करिया करि

परान् पॅनिमंदर क्होंदर प्रानी कम्म व अन्य था। स्थ समयश्च सांधर इन्द्रवस्त वहा और था। जिस्स स्वत्रहरूका स्वत्र हरण था, पार शह अनुस्य वर्षा स्वत्रपत्र व होत्स, तो उसके दर दिया जाना था। हमार अहसा इसी त्रपार्थ्य साईक ज्ञण हर्य कार्य था पीठवी प्रान्तवर

ाता सम्बन्धका या और वह अपने विकासको नयराव राहर उस्ट इस्साया । अनुष्य इसको पहडुनक नियासकार कामारी उसके सम

हरता था। अत्रण्य उसकी पहण्डक लिए वर्गकार कार्याः रनम इन प्रकार नवतक प्रवान ग्राप्त विशे रन रनम सार्याना नगा दृह एक अभित्रकाचा था, जिल्ला व्याम एक हेट या आर रनगर

48

बान्य एक एक्टब्रेस बना भा। वह रेडरेन । स्पर्धमें विक्री '

धैर्यकी महिमा।

षते सारे और उसके बातन मोट्टे षषतावृत् कार्यने गये । उन होताने उसे रामसे हो एक भेधेर बातागासमें से जाकर बंद करदिमा और ये उसके फीतीया बगाने जाने अपना जलाने आनेकी बड़ीकी मासिस करने होने । उसको जला देनेका हुकम जारी हो गया, परन्तु एक गामिताली जमीदारने दमे बचा लिया—दम लिए नहीं कि उसे पैलिसीसे निरोप मेम या, किन्तु हम लिए कि हंकोर्म नगामें जो निरास अवन बन रहा या उसका लेपदार हसी हमानेके लिए और बोर्ट गिल्यकार न मिस सकता था। इसी लिए यह सुक्त करदिया गया।

अपने दो पुत्रोंको महायताने बरतन बनानेके कामके अतिरिक्त पैतिसीने क्षपने जीवनके अंतिम भागमें बातन बनानेकी कलाके विवयमें कई पुस्तकें शिलका इस लिए प्रकाशित की कि उनसे देशवासियोंकी शिक्षा मिले भीर वे उन गुरिपोंसे यह मके को उतने स्वयं की थीं। उतने श्री-विचा, गृह-विमाण-विचा और माहतिक इतिहासपर भी पुस्तकें लिखीं। बर फलित ज्योतिय, बीमिया (स्तायन), जारू इत्यादिका करर विरोधी मा । इस बारम उसके बहुनसे शहु पैदा हो गये, उसे धर्मब्युत कड़कर उसकी निहा करने हमें और वह अपने बसेंक कारन किर केंद्र करिया गया । पदारि वह अद ०५ वर्षेक्ष बुज़ था, और अरना एक पैर करमें सरका हुछ या, पत्नु उसका दृद्ध पहलेके ममान ही बीर या । उसे सुदुका भय दिसाबा गया; परन्तु उसने अपना धर्म होइना स्तीबार न किया। यह अपने धर्ममें बैमा ही रह रहा जैमा कि क्षेत्रकों मोजमें रहा या। श्रीम देतके सम्राद् हैनरी तृतीय भी कैइन्यानेमें उसके पास इस लिए गये कि उसे धर्म पर्साने-पर राजी करें । मज़ारने कहा-" अले बादमी, दूवे मेरी माताकी सौर सेरी अवनक ४५ वर्ष में .. की है। येड़ है कि मू करना हठ नहीं छोड़ता है। इस हुए अब तक क्षमा करते रहे हैं। अब मेरी प्रवा और अन्य कोग मुसे द्वाते हैं, बत एवं में मबरूर हैं कि तुसे तरे समुधाँके हायमें धीद हैं। बारे सब भी तु भरना धर्म न बद्देगा तो कल जीता उला दिया आदगा ! " उस संदेव पूरे महान्यने उत्तर दिया,--" राडन् , में ईबर (धर्मे) के नामरर यान तक देनेको तैयार हैं। आपने कई बार कहा है कि हमको नुप्तपत द्या भाती है; परनु अब मुझे आपस दया आती हैं, क्योंकि सापने वे बाद्य कहे हैं कि

स्वायलम्यन ।

पुष्का या, भी भी दसको उस कटामें नियुक्ता मार कालेक किए परीसार्भीम आह वर्ष गढ़ और शिर सारात पड़ा। उसके चीर चीर अनुमनदारा हरन-कीमार भीर देशक कम मार करना सौन किया और समस्यार्भीमें बहुत इंग्र क्यावसारिक शाल माह करिकार । हर एक लिक्कानाने सो एक क्यान सिक्षा मिन्नानी थी। केम चीर मिर्टुकि स्थापक और मुख्यें नियसों और मरियों कराने मीर उसके साथ केनेक मार्थ्यों उसे हर बार एक म एक नई बात माराम हो आहं। थी।

निराम सीवाद कर्ष कर वरित्य करने के बाद वैजिटांकि बीमें जी भागा भीर उससे मारने भागकों पुनेसकार' जा 'कुमार का। दूर सीवाद करीं में यह उस करायों सीवादा करा। उस ने वादे भागकों कर वर्ष में यह उस करायों सीवादा करा। उस ने वादे भागकों कराय दिवाद की पायों कर वादे करायों के वादे भीर विवाद कर वादे करायों के वादे के वादे कर वादे

परन्तु पैनिर्माहे क्होंडा क्षभी करन व भाषा था। वन समयंत्र धार्मिक विद्वारम बहु। वीर था। विका मंत्रहायका त्रावा होता था, वार्द कोई नमुख्य वर्मी संत्रपालक न होता, तो वस्त्री देव दिखा जाना था। हतारी कार्या इसी अपनायम जीविन क्ष्या हिन्दे जाने थे। कींच्यी ग्रोटेक्ट (Protec-Lint) नम्मारायका था और यह अपन विचारों हो नम्बर्ग कोंडा शहर था। अन्यव उसकी वहत्वक रिंग नास्करी वस्त्रीता परह अस

भा तमाप्य द्वारका व्यवस्था । तमाप्य कमापार उपके पाम १ - १४ इतमा स्वय स्थापन विकास आयान नामी विकास तथ उतमा पेड़ पाम हुई एक छाडांची ने स्थास यो, जिल्ला न्यास एक कुट बा क्योर जिसक छाउक्यी बनी थी। वह पेटीक) स्पर्वमे विकास चले आने और उसके बरतन मोंडे चकनाच्य करिये गये । उन होर्गोने उमे रानमें हो एक केंग्रेर कारागारमें हो जाकर बंद करिया और ये उसके फोंसीवर चामें जाने अपना जहारे जानेकी घड़ीकी मनीका करने हमें । उमके जहा देनेका हुक्म जारी हो गया, परना एक शांगियाती अमीदारने उमे क्या हिला—इम लिए महीं कि उमे पैलिसीने निरोप प्रेम मा, किन्तु हम लिए कि ईकोर्न नगामें जो निगाल मक्त बन रहा या उमका लेपदार करीं हमानेके लिए और कोई शिक्यकर न मिल सकता था। इसी लिए वह

मुक्त करदिया गया।

अपने ही प्रभोदी सहायतामे बातन दनानेके बामके मतिरिक्त पैलिमीने अपने जीवनके शेतिम भागमें बाउन बनानेकी बचाके विवयमें बर्च पुननके हिलकर इस हिए प्रकाशित की कि उनमें ऐसावासियोंको सिक्षा मिले और वे उब लुटियोंने रूप सकें भी उसने स्वयं वी थीं। उसने कृषि-विद्या, गुर-विद्यान-विद्या और प्राकृतिक इतिहास्पर भी पुस्तकें लिखी। कर पालिय वयोगिय, बोमिया (बसायन), जारू हत्यादिवर करर दिनीधी या । इस कारण उसके बरुतमे पाष्ट्र पेरा हो गये, उसे धर्मपरूत बदवर उमबी निंदा बरने रंगे और यह अपने बर्सने बारन चित बेंदू बरदिया गया । पदारि वह अब ७५ वर्षक बुशु था, और अपना गृष्ट पैर कामें साका चुका था, परन्तु उसका हत्य पहलेके समान ही दीर था। उसे शुपुक्त भय रिलाया गया: पान्तु उसने अपना धर्म धोदना हर्यावार म क्षिया। यह अपने भर्मभें वैया ही दर रहा जैया कि शेपकी खोजने रहा था। क्रोब देतके सचाह हेनति मुनीय भी बेरामानेमें उसके पाम इस लिए गये कि उसे धर्म बर्लाने-पर राजी करें : महापने करा-" भले खारमी, हुने मेरी माताको और मेरी अवन्त ४५ दर्प सेदा की है। येद है कि नुअपना हठ नहीं छोड़ना है। हम नुष्ते अद नक समा बरने रहे हैं। शब मेरी मजा और सन्य लोग मुझे द्याने है, अप एवं में मजरूर हैं कि नुसे मेरे मजुमीहें हायमें छोड़ हूँ। यदि भवं भी मु अपरा धर्म व बहरेगा ही बल जीना जला दिया जायता । " उस अजेव . इरे अल्प्यन दक्त दिया,--- शत्त्व , अ ईश्वर (धर्म) के सामपर जात तक रमें की नियात है। आपन बर्द बात करत है कि हमकी नुसारत दया कानत है. पान अब भूम आपस दया बार्या है, क्योंकि बादवे ये दान्य कहे है कि

स्थायसम्बन् ।

'में मजबूर हूँ । 'शासन्, ये राजाकेमे सब्द नहीं हैं । इन सब्दींका प्रयोग भार भार वे लोग--जो भाषको मजबूर करते हैं--मेरे प्रवर नहीं करसकते। क्योंकि में जानता हैं कि सरते किय तरह हैं। " पैटिमीने वास्तवमें बुछ काल पाँछे अपने धर्मके लिए प्राण स्थोजावर करदिये, परन्तु वह जलाया मही गया । यह लगभग एक वर्ष तक केंद्र रहका कैद्वानेमें ही भर गया । वर्षीपर एक ऐसे वीवनका शांतिपूर्वक अंत हो गया तो अपने अवक परिश्रम, क्षमाधारण सहनतीलना, अटल मत्यतीलना और अन्य दुष्पाच्य सहजोंके-लिए विन्यान था।

चीनीके बरननेका आविष्कारकर्ग जान फ्राइटिक युट्टाइका जीवन देशितीके जीवनमें सर्थ्या भिन्न है । बृदयरका जन्म सन् ३८८५ हुँस्पीमें हुआ या । वह १२ वर्षकी अवस्थामें बर्लिन नगरमें एक अत्तारके यहाँ नीकर हो गया या । उसे गुरूमे ही रमायन-विधाश बड़ा शीद या । कई वर्ष बार स्ट्र-शरने यह शवर उदा दी कि मैंने स्मापनका अनुसंबात करिनशा और उसके हारा मोबा भी बना लिया है। उसने किया व किया चालाकीये अपने सालि-

कड़े मामने ऐमा ही करदिसाया और उसके बाकिक और अस्य हर्राकीको विश्वाम ही गया कि बुट्याने सचमुच गाँबेका सोना बना दिया। हिर ती यह अवर चारों भोर फैल गई और उस बज़न सोवा बनावेवालेकी देशते है जिय बुद्धानके सामने शोगोंके ठटके ठट समने क्या । राजाने भी उसकी

रेगने और उसमें बार्ने कानेकी इच्छा यका की । जब मशिवांक मधाद फैड-रिक्ष प्रभाको मोनेका वह टक्का टिन्यनाया गया. को बटपरका बनाया सभा बता त्रामा या, तब उसका बेहद मोना पानकी वर्या चाट लगी--वर्षोंकि उसके वेदाम उस समय रप्रवेशीयहाँ प्रमान यी-कि उसन प्रप्रापको नीहर रसकर वक्ष मा जिल्ला कर काला वाला बनानका सक्रम कार्रिया । परम्प प्र-प्रश्नाद्वम प्रतक्षा श्रक्ता हा गई और ज्यको यह जा जय हजा कि संग् इतर १ प्रथम इस्तित वर द्वादा सामाका सम्बद्ध सेस्पना स्थम

..... १६८ वर्षक साम शह शतार स्थवहा इताच नियम हुना। यर १३

मदार ४ कर कर रक्ष की विकास की आसाम्यको स्वयं देन समय रायकी



निकल मामा और शीन दिन तक यात्रा करके आस्ट्रिया देशमें पहुँच गया भीर वहाँ दमने अपने आपको सुरक्षिण समझा । परम्पु आगस्टमके भीकर उंग्लंडा वीजा किये चले आये । वे उसका पता कमाने क्याने वहाँ आगरे करों यह दहरा या और उसे परुदकर फिर दैसड़न से गये। इस बार उसकी लय श्रीदर्श की गई और बाह दिन बाद वह एक किलेंगें श्रेष्ठ दिया गया । श्रामे बहा गया कि राजाका श्रामा विलक्त साली पता है और तैरे शक्यों मेरे रोगांके विशाहियोंका विज्ञला वेतन गुकाना है । राजा कर्मके पास क्वर्य आया और कह होकर बोला, " अगर त हमी बल मोला बनाना शहर स करेगा, तो भौगीपर करका विवा कायमा ! "

क्यों हो समे, ब्रायरने सोना म बनाया, परना उसको चौराीकी समा म वी तर्षे । जसको सी माँवेषा सोना बनावेसे भी अधिक सहरवपूर्ण अनुसंधान करना था, मर्यात् वह चीनी मिर्दाके वर्गन बनानेकेलिए पैका हुना था । चीतके कुछ बरतम गुर्नगालवाके चीमसे काये थे, जो तीकार्वे अपनेसे भी अधिक शीरेमें विके थे। बुरवाका क्यान इस और वास्टाने आहर्तिन किया. को रुपयं बदा विद्वान और शिवद था । उनके बरपरये-तिये अब भी जीवीका का लगा था-कहा-"वरि तम मोशा शरी बना सकते ही बार भीर की करी, जीती बनाओं। "

बुद्धारने उसकी बात मान की और नह दिन राम परिश्ना करनेमें करा सथा । बहुन दिन हो गर्थ, परम्पु कमका सब परिश्रम निपाल हुआ । निपाल सरिया बगानेकेलिए उसके वाम कुछ काक मिट्टी आहे. जिससे वह श्रीक मार्गाप क्या गया । उसने देखा कि बह मिटी अग्निमें जूप नपानेने फीच बन जाती है, भवना आकार नहीं बच्चती और रंगके विचाय और सब बार्लों बार्नाह समान हो जानी है। उसने अवन्यान साम्बानीका मन-माराज करिया और यह उसक बरनन बनाकर उन्ह पानंत बहकर

---स्टब्स बन्दर प्रावता द कि अयन वानका सा यन दावा पादिय, र्षांक्य रूपन हुए 🖩 रहत्वहा भन्यास्त हरतह कि सामाय ग्रह er tor are all an about a transporter a ex faria Ta

उन दिनों मूरोपियन देशोंमें रूप्ये राम्ये यनावटी बार्लीकी टीपी पहननेका रिवाज था। सन् १७०७ हॅस्वीमें एक बार युट्यरको अपनी वालदार टोपी स्थिक मारी मादम हुई। उसने नीकरसे इसका कारण पूछा। उसने उत्तर दिया कि, " इसका कारण पह पीडर है, जो बार्लीमें रूपाया जाता रहा है।" यह पीटर एक मकारको सफेद सिद्दीस बनाया जाता था। यूट्यरने ही। ही अपना पिचार दीदाया। उसने सोचा कि कदाणित यह पढ़ी मिद्दी। ही जिसकी में रहोजमें हूं। यूट्यरने उसकी परीक्षा की भीर उसका अनुमान की कदाणित में रहोजमें मूं यूट्यरने उसकी परीक्षा की भीर उसका अनुमान की क उत्तरा।

इस धातका माल्य हो जाना पारस पायरके माल्य होनेसे भी कहीं जियादा महत्त्वका था। वयों कि इससे हमारे घट्टत काम निकलते हैं। अवह-धार सन् १००७ में उसने चीनीका पहला बरतर बनाकर सम्राद आगास्त्रको दिखाया। ये उसे देश कर बहे सुन्न हुए और सूट्यरको उसके हस आदि-ध्वारयी प्रतिके लिए सहायता देनेको सेवार हो गये। युट्यरने एक चतुर कारीगरको पुलवाकर चीनीके घरतन बड़ी सफलतापूर्व बनाना द्यस कर दिये। उसने अब सायनको सर्वया धोदकर चीनीके बरतन बनानेका काम उद्य लिया और अपने कारधानेके हार पर यह लिखना दिया:—" सर्व सासिन्याद हैचरने, जो महान विधात है, एक सुवर्गकार (सुनार) को कुम्भकार (सुन्हार) बना दिया है।"

अब भी पृट्यरकी बड़ी चौकसी की जाती भी, क्योंकि यह भय या कि सायद यह अपने रहस्त्रको दूसरोंके सामने प्रकार कर दे, अथवा स्वयं पान्यत हो जाय । अबे कारसाने और भट्टियाँ जो उसके छिए ववाई गई भीं, उन पर रात दिन शौजोंका पहरा रहता था और छः उच्चपदाधिकारी उसकी देख भाटके लिए उत्तरदाता बना दिये गये थे।

बृद्धरको और परीक्षाओं में-जो वह सिद्धियों में की गई थीं-वही सफलता प्राप्त हुई और जो पीनीके बरतन उसने बनाये उनका बहुत मूस्य मिलने लगा। भतण्य अब एक राजकीय बारसाना स्थापित करनेटा प्रयस्त किया गया। हम बानकी सम्राट्ने घोषणा कर ही और कारसानेमें काम करनेके लिए आहम। बलजाये। पूरवर कारसानेक प्रयंक्ती बनाया गया। परन्तु उमक जपा मम्पट्न भवने हो बमेंचारी नियन कर दिये और हम तरह ब्रुट-

स्यायसम्बत् ।

धर हेती ही बना रहा। वक वैभित्व नवासे कारावाय बनाया जाये कमा, गढ़ दूसरावे देशववणे वहाँतक सैनिक के पवे। बात समाग्र होने पर मी गढ़ सामके तालेंसे बेंदू कर दिया जाता था। इन मान वामीने पर मी दूरज हुआ भीर क्याने सामाद्वी बंधन कम कर देनेके दिवासे बनेक कार गढ़ मिर्ग 19 पर सो बड़े ही करणाजनक थे। एक परासे जाने किया वि से पहले आदिकारणोंकी स्रोद्धा कारिक कर दिगारों मा, यहि ग्रोगे इंडाईवार देशी जाता !

भन्तर करनेको सैवार था। परम्यु स्वनंत्रता देनेवाला स था। वह बृहपरकी

भएमा दास समझना था। इस तरह वह केरी इछ समयनक ही काम काठा रश्, पान्तु माल दो सालके बाद गुम्त पर शथा ! बद संमासी और अपने बारमें तंत भागवा और उसने शराब पीनंदी बारत हाथ ही । उसकी देशाईली सभी कारीगर शराब पीने छम गये; उत्तहरवका ऐया प्रमाद होगा है ! अब तो उन लोगोंने देने कड़ाई हागड़े होने करे कि बहुया कीने मानर हमदो शाल करनी थी। कुछ समय बाद वे सब, जिस्की संख्या धीन सीमें भी भरिक थी, धन्यत्र केर्जानेमें केर कर रिवे गये । विदान बृदयर बहुन पीडिन हो गया और सई यन 1912 में बड़ी मान्स होते छता कि वह अब मन और अब मता । राजादो भव हुआ कि करी सीनेकी चिट्टिया हायमे न जानी रहे, अतच्च उसने बुरवाको पहें के साथ गारीस हवा सानेकी भागा दी और उथ वह कुछ बच्छा हुआ, सी बमेकी कभी कभी हैगदन जानेकी भी आजा दी जाने नगी। समेज सन् 1918 हेम्यामे महारते उसे एक क्य किया जिसम उसने ब्रुवरकी मार्ग स्वर्वप्रता क्रमं कारण दिया परम्य अव क्या होता था । साम करने रहतेथे, शाय पत्रम जनम शाम सम्मय और डॉटन केट जुनमनम ब्रुप्तरहा शरी। भीर मानव प्रदासा हा गया था। इंड को लेप बच्चड बात गर ३०१९ होतीय

म पुत्र ३० मक क्लान सूच कर दिया । वैक्पतीक सरान उपकारक साथ

करता ही बसारित करों पर इसके हाता बड़ी आगी जाम कीती है शीह पर्रोक चोतीके परतन निःसीटर गरीलम कीते हैं।

भेतिनी वृंभवार छोडिया धैलयुक्ता जीवन पैनिमी क्षया प्रायक्ष स्वित्य क्षम विविद्य और अधिक स्वतन है। यह क्षमो युगमे उनाम गुमा था। असारवी सामित्रिक सच्य तक हैनीड क्षमाहीसायके विवदमें पूर्णके यहाति उनाम मेनीद हेनीम विवद्य हुमा था। उस समय भी हैनिटमें स्वापि चनुता वृंदान थे, पानु वे बहुत ही और बरान बनाते थे। अन्तव वहां प्रस्ते प्रतान परिसीमें आते थे। अमीत्रक हैनिटमें पीतिके ति धातल यन पिन्दों में पानल याने पानिक विवद्य हो। विवद्य भी तुर्ण्यते उनाम शा न वह मके । वर्ण्यत्य मान्यतिक विवद्य हो। विवद्य प्रतान विवद्य है वे स्वतिक । वर्ण्यतिक होने से व्यवक्ष स्वत्य प्रतान विवद्य है स्वतिक । वर्ण्य व्यवक्ष प्रतान विवद्य हुमा था। वर्ण्य व्यवक्ष स्वत्य व्यवक्ष स्वत्य व्यवक्ष स्वत्य व्यवक्ष स्वत्य प्रतान विवद्य हुमा स्वत्य व्यवक्ष स्वत्य व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष स्वत्य प्रतान स्वत्य व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष स्वत्य प्रतान स्वतिक स्वत्य व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष स्वत्य व्यवक्ष प्रतान स्वतिक स्वत्य व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष प्रतान व्यवक्ष प्रतान स्वतिक स्वत्य व्यवक्ष प्रतान स्वत्य स्वत्य

कभी कभी सामान्य धेनीमें भी ऐसे मनुष्य उत्तक हो जाने हैं, जो अपने उपीगतील परिप्रके द्वारा केवल काम करनेवालों हो परिश्वमको आहण दाल-नंदी व्यावस्थित सिक्षा हो वहीं ऐते, किन्यु ध्यम और प्रयंवा उदाहरण दिगलावर सर्व साधारमकी सब सरहवी बायेनुसलता पर बड़ा शहरा प्रभाव दालने हैं और जाजीय परिप्रसक्ती सच्छा योग देने हैं। पैडपुण ऐसा ही मनुष्य था। उसके तेरह माई ये और उनमें यह सबसे छोण था। उसके दिलामह और पिता दोनों उन्मकार या नुम्हार थे। यह बालक ही था, तब उमके दिना तीन सी रच्या छोड़बर सर थये। यह बालक ही था, तब उसके दिना तीन सी रच्या छोड़बर सर थये। यह मासीन परसालां दिलामत पड़ना सीसना था, पहन्तु दिनाई। होने पर उसका पाटसालां दिलामत पड़ना सीसना था, पहन्तु दिनाई। होने पर उसका पाटसालां सत्ता यह बरा दिया गया और यह सत्त्रने यह माईडो यतनन बनादेक साममें सत्तराता देन हमा। उस समय उसको अवस्था ग्याह वर्षदी थी। उस्त्र प्रभी वाद उसको एसी अवड सीनलां निकली कि उसके असरसे उसे जीवन-

र रह जो अरूपर उट भाना था और यह बहुन वर्षा पीछे पैरके हाटे जाने पर

स्वाद्यसम्बन्धः

गया या यदी यद्भुत करके उसकी नियुक्तकार कारण हुमा। उसने सोगा कि सै देसा बरुवान् और क्योगी करीगत नहीं कर बहुन में सै देसा बरुवान् और क्योगी करीगत नहीं कर बहुन्म दिवार्क कर बहुन पें हुएना हों भी जो उसका मदीम अर्कसीति जानवा है, यूना दूवा से भी किमी तरहका हो सकता हूँ, और क्या में जिलक मीरवान्द्र हो सकता हूँ हैं इस विवारने उसके समस्क्रम सकता हो। यह सम्मे शिवार्क नियमों और ग्रह्म संस्थारित विवार करने कमा। "

जब बेजपुर अपने माहेके लाय काम सीता चुका, तब वह एक और कारीगरके साथ साफ़ी हो गया और चाडुके हुन्ने, सन्दक और धरमें काम मानेवाडी सम्य धीर्वीका छीटामा स्वापार करते छता । किर उसमे एक भीर भारमीसे साहा कर किया और मामूकी चीजें बनाता रहा; परन्तु अपनक उसने सन् १७५९ ईस्तीमें अपना न्यारा स्थापार न शुरू किया, तवनक उसने बहुत कम उन्नति की । मधने व्यापारमें उसने बन्ना परिश्रम किया । बह नई नई चीनें बनाने लगा और चीरे चीरे उसने अपने व्यापारकी अच्छी उद्यति कर ही । उसने अपना ध्यान विशेषकर वेसे बरतनीके बनानेमें लगाया वैमे उम समय स्टैफईशास्में बना करते थे; साच ही उसने उनकी खुबसुरती रंग, चमक शीर सक्ष्मीमें और भी उच्चति करवी चाही । इस कामकी भन्दी तरह समझनेपर उसने रमावनशासका अध्ययन शास्त्रम किया और तरह तरहकी धातुओं हो गलाकर प्रवाही करनेके लिए जिल पदार्पका उप-बोग द्वीता है उसपर, वरतनीपर नाच प्रैमी चमक लानेके लिए जो तरह नरहर्चा भोष चत्राई जानी है उमपर, और तरह नरहर्की मिटिगॉपर मैक्टो परीधार्य कांद्र देशी । उसकी विशेष्ठण-शक्ति वदी तेत्र थी । उसके हाप एक मिटीका वर्तन लग गया। उसमें मिलिका बामक चक्रमककी मिटी मिला हुई थी। उमया प्रयोग करके देखनेमे साल्ट्स हुआ कि यह मिट्टी वरूले बाले रेगकी होनी है, परन्त नेज औष समनेमें सफेर ही जाती है। इस बात पर उसने सब विचार हिया। उसे विचास हो गया कि पर तन बनानम में तिम लाज सिहाको काममे माता 🚪 बहि उसमें चक्रमक मिनाइ ताह तो उसक यन्त्रव मण्ड हो आयेंग और यदि इस मिश्र मिटीके बरनन पदकर उन पर काल मराली समक्तार जिला सदाई बादें ती वे बरनम कुमकारकमाढ बहुन वरिया नसने बन आयेंगे ।

येज्यहको बुछ समयतक अपनी महियाँके कारण यहा कर उठाना परा; रान्तु यह कष्ट पेलिसीके कप्टसे बहुत कम था। तो भी उसने अपनी कठिना-ह्योंका उसी तरह सामना किया जिस तरह पैलिसीने किया था। बारबार परिशाय करनेमें और अटल-अदिंग धैर्ष रखनेमें उसने भी इद कर दी। उसने पहले पहल रसोर्ट्के बामके लिए चीनीके बरतन बनानेकी जी चेटार्प की उनमें स्त्रातार असफलतार हुई। महीनोंका परिश्रम बहुधा एक दिनमें नष्ट हो जाता था। बहुतमी पर्राक्षायें करनेके बाद, जिनले उसका बहुत समय, राया और परिधम वष्ट हुआ, उसे धेली चाहिए वैसी जिलाका पता समा। दरतन दनानेके शिल्पने उद्यत बनानेकी उसे प्रन हो गई और इससे उसने एक शतासर भी उपेशा न की ! जब यह कटिनाइयोंकी दूर करके धनी हो गया, तब भी अपने तिल्पमें नियुणता मास काता रहा। इमके उदाहरणका प्रभाव सर्वत्र फैल गया, उस जिले भरके होगोंमें कार्य-इप्राष्ट्रताका संचार हो राया, और भैगरेजी व्ययमायकी एक दरी शाला दड भीय पर स्थापित हो गई । उसका रूप्य सदैव सर्वोच उत्तमना पर रहता या शीर यह यहा काता या कि, " किसी चीजकी स्ताब बनानेसे पही अच्छा है कि वह दिलकुल ही न बनाई आद। "

बर्तमे शेष्ठ भीर सामितालां मनुम्मीने वैश्वप्रको हार्दिक सहायता हो।
सचे दिलमे काम करनेवालेको भहायको कीर जासाहदाताओंकी कमी नहीं
रहता। जमने सानी सार्टकेंड दिए स्मोर्ट्के वसाव यनाये जो इंग्लेडमें यने
दूर सानो पहले वातकीय करतान थे और इससे यह 'राजकीय पुंचकार'
बना दिया गया। जसे चीजीके बहिया बातन नकर करनेके लिए दिये गये
सीर हार काममें उसको असीनोक सहसा हुई। उसने बड़े वहे प्राचीन
कीर सन्दर करनोडी काक जीडी क्यों उतार है।

धेन्ददुक्ते समापनतास्य पुरातस्य और विश्वविद्यामें भी सहायना हो। उसवे वर्धन्त्रम मेन बामक विश्ववारको हुँद विकाला और उसकी विश्वदुशालगाका वर्णाम भागे बानतें हैं बाममें विश्वदुशालगाका वर्णाम भागे बानतें हैं बाममें विश्वदुशालगाने उसके महीरिय उसम बातन बनाये और उनके हारा प्राचीन विश्वविद्याको सर्वमाधालमें पैप्तामा। उसके सावधानीमें प्रयान व अध्ययन बाके यह प्राप्त हारा हिया विश्वदुशामें प्राप्त सावधानीमें प्रयान व अध्ययन बाके यह प्राप्त हारा हिया विश्वदुशामें प्राप्त सावधानीमें प्रयान विश्वदुशामें प्राप्त सावधानीमें प्रयान व अध्ययन बाके यह प्राप्त हारा हिया विश्वदुशामें प्राप्त सावधानीमें स्थान व अध्ययन बाके यह प्राप्त सावधानीमें स्थान व स्थान स्था

स्यावसम्बन्धः ।

समान कथ्य चीजों पर किय नाह निजयारी किया करने थे । हम कलाई बीचमं कोता दिन्दुस्त जून कार्य थे। उनकी हिम्मामं भी क्रेनक क्रानित्यां कार्ड क्यानि मास थे। यह सार्वेजनित हिनका बदा योग्ड था। उनके प्रयम्मे दीएक नहर बनवाई गई। उनने अपने दिन्देंगे एक अपने मुद्द कराई। उनके स्थानित चेहुतां काम दिने दिनमें उनकी स्थानि वजुन ही वह गई। उनके स्थानित किये हुए कास्साद देशबंके लिए सूरपके प्राप्त मार्ने दोगींक प्राप्तित सुत्रम सार्वे स्थान

ही गिरी हुई दशामें थी इंग्लेडकी एक प्रधान कला हो गई। बैजवुडके सम-यके पहले वहाँ वृसरे देशोसे बरतव आने थे, धरंतु अब इसके विररीन वहाँके बने हुए बातन अन्य देशोंको जाने हैं और बहुत विवादा सहसूल देकर भी वे पिरेशोंमें पदाधड़ विकने हैं । वैजनुष्टके समयमें ही कई हजार आदमी चरतन बनानेका काम करने छने थे। इस काममें वचरि उस समय बहुत उचाने ही गई थी, तो भी बैजनुइका मन या कि यह शिक्प भभी बाल्याव-स्यामें ही है और को उन्नान मैंने की है वह बहुत बोड़ी है । कारीगरींके निरम्तर परिश्रमसे, उनकी बुद्धिमत्तामे और इस देशकी प्राकृतिक सुगमनाओं तथा राजकीय महत्त्रमे इस तिकाकी बहुत कुछ उर्धात हो सदती है । इस समयमें अब तक जो उचनि हो चुकी है वह इस सतका समर्थन करती हैं। सन् १८५२ ईस्वीमें ईग्लेंडमें जो बरतन वहीं हे निवासियों के कामके लिए बनाये गये उनके अनिहिन्द स्थानम एक करोड़ बरतन विदेशोंको गये ! केवल यही बात नहीं है कि इंग्लंडमें बरतन बहुत बबने रूगे हैं और उनका सूच्य बहत होता है किन्तु उम देशके बुम्हारोंकी दशा भी सुधर गई है । जिल जिलमें बैजवुडने अपना काम शुरू किया या वहाँके छोग अर्थसन्य थे । ये निर्धन और अशिक्षित ये और उनकी संस्था कम थी । जब वैत्रपुषका काम बम गया तय वहाँ पहले जिननी आवादी थी उससे तिगुने अनुष्योंके लिए भरती मजर्रीका काम निकल आया; और उनकी संसारिक उन्नतिके साप साप मानयिक तथा नैतिक उश्वति भी अच्छी होने सगी।

ऐसे पुरुपोंको सन्य संमारके " औद्योगिक बीर " कहनेमें कुछ अप्युक्ति म होगी । इनके लिए यह विशोधन सर्वधा उक्तिन है । आवस्तियों और करिनान

वर्षेष्ठ उद्योग और वाप्रह ।

इसोंके समयमें को संतीरपूर्व कारमिक्षित्त कीर उधित उदेश्योंनी प्रितिक िल् सीर्य कीर सीर्व दिशालाते हैं वे उन जान कीर स्थानकों मेनाके नियारियोंने बम गरी होते जो सभी बहादुर होते हैं और संयारमें अपूर्व अरुमायातके उदाहरण होट् जाते हैं।

अध्याय चीधा। +>>>>>

समिष्ट उद्योग स्तिर काम्रह । "स्वत् देव बामने अपने वर्गा व वरता "हार," सीव्य पार्च एमें सामन बाहब रुग्ने तार ।

भीरत भारते एसे होगाना नातम स्टार्थ नाय । भागनानीरच श्रीवर भी सूच्या करना यात गीर, नारी विषय-सामनापीले संपना सन्द से योग स

-रामर्यातु ।

"अन्यान् प्रते ही कदना नाहिए या उद्योगी है। प्रदोगी शहुर प्रापेक प्रवान कदना नाम्याप्त है। नामद अपूर्णिय नाम्यान है। हम नाम्योक्ति ने सन्दर्भ कदने ही कांजिकामी क्षांत्र है। क्षांत्र नामति बीचारी है। ते असे नुदे दूर्वान है। ज्यापी बाद जनसैंक एक क्षांत्र नामका प्रमानता हुआ नाम मा असून हों। नामविक एक मार्ग परिमा करते नामद क्षांत्र नुदेश होते है।

-रायनार ।

The state of the s

हैं। यह बात सदाने कछी जाई है कि अनुष्य इन्तार्श्वक करारे काम करनेने ही जाना करवाण कर सकता है, और वे ही छोग सबसे करिक सफटना प्राप्त करते हैं जो सबसे करिक दशु क्वे रहते हैं और सब्वे इट्यमे काम करनेमें सबसे वहे दशों हैं।

स्रोग कहा करने हैं कि उकड़ीर कंती होगी है; परन्तु सच तो में है कि तकड़ीर इतनी कंती कर्षी करी है किवने सनुष्य । जिन होगीकी जीवनका हुए अनुमय है वे जानने हैं कि निस्त नाह इस और टहर्र करने महाहित पत्रचे इती हैं वह ती तह तकड़ीर सी उक्सी सनुष्योंक साथ देगी है। हमें महे कार्मीम भी मतमहारी, प्यावकीकता, क्योग, आजह हापादि साधारण गुण भी पत्रच कपोती मिल हुए हैं। बहुत्व कार्मीम मिलाड़ी आहरहरू मां भी हों होंगे, एतना चुंच वे महासाधाली मत्रुच्य भी हुन साधारण गुणोंने हाम केवा हुता तहारण गुणोंने हाम केवा हुता तहारण गुणोंने हाम केवा हुता नहीं सत्तकने। कुछ सनुष्य सी यह भी वहीं सावने हैं मिला करने की हिं उम्लेगा है।

क्तम रहात भीर भागहके हास यम अहुन कार्य हुए है कि बहुनम नामी गामी अनुस्थाका हुए बान म अहह हो गया है कि प्रांतमा कोई किन अभ अन के अभ्यादक विद्यान वास्त्रहेका जब है कि प्रांतमा समुख्यों भाग भागान अनुस्योग बहुन ही मोहा अंतर होगा है। वैद्यांका कहा करता

अवंड उद्योग और आप्रह I

या कि सभी मनुष्य कवि आरे वका हो सकते हैं। रेनोल्इसमा क्यम है कि
प्रायंक मनुष्य पिप्रकार और मूर्तिकार हो सकता है। प्रसिद्ध दार्गिनक छोक,
हेछपीटिअस, और डिडीरोटका मत है कि सब मनुष्योंमें प्रतिमाशाली मननेकी
एक सी शांक मौजूद है और बदि बुछ मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोंको
काममें लावर किसी कार्यको कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि और
छोग येस ही मुर्चाम और सापन पाकर उस कार्यको न कर सक । यदाप यह
सप्य है कि परिध्यम अजुत अजुत कार्य हुए है और बड़े यह प्रतिमाशाली
मनुष्योंने अहर परिध्यम अजुत अजुत कार्य हुए है और बड़े मीलिक मानसिक
शक्ति अरा उक्तम भागोंक विना चाहे कितना ही परिध्यम कितनी ही उचित
सितिस क्यों न किया आप, तो भी नुष्टसीदास, बराइमिहिर, चान्मस्ट
अयप सानस्तिका प्रादुन्गेव नहीं हो सकता।

संसारके महापुरुपोंने पहचा यह कहा है कि हमने प्रतिभासे नहीं, किन्तु निरन्तर परिधम करनेसे सफलता माह्न की है। महारमाओंके जीवनचरित हेरानेसं भी हमको पही माल्म होता है कि मुश्रसिद्ध आविष्कारकर्ताओं, शिल्यवारीं, विचारवानीं, और सब प्रकारके कार्यकर्ताओंकी पहुत परके अट्टट परिधान करने और बाममें निरन्तर छंगे रहनेसे ही सफलता मास हुई है। हन महाप्रमाओन सब चीजोको यहाँतक कि समयको भी सुवर्णके समान बहु-मान समझा था । एवं महारमारा वचन है कि संपल्या प्राप्त परनेपा गप्त रहरू अपन र रायपर अधिकार माप्त करना है । और यह अधिकार निरन्तर लग रहत ५% अभ्ययन वरनम्य प्राप्त होता है । यहाँ वारण है कि जिन लक्षान सम्मान संबंध अधिक इस्पाल मधाई है उनमें प्रतिभाव। माधा ्या १ १० १ मधी प्रतिका वह सब **१** हत्यी न थी जिनमी वि उनमें म ... : : । व याप्यता आर अट्ट पारध्य बरनवा ०० था । उस्म स्वाधा-विष क 🕠 न न ये जिल्ला कि व अपन बामम महनते साथ जिल्ला ंग रहत . ाव विधासन अपन बुद्धियान परन्न श्वासवाह स्टब्स विष-पम वह याचि अपसीय 'हससे कहा परिश्लस वर्गवा गुण नहीं है।' तारमका राहम एस वीदमान मन्त्यास, जो सभ वर बाम नहीं वर सकत्, जानवर्गः आरं सद्दरासी सनुत्य सी बादी रू दात है , इटली सापादी एक बराउर र रिस्पना आधाय यह है कि जो चीर धार परन्तु निरन्तर चला करते

स्यापलभ्यन ।

है वे बहुत मारों वह जाते हैं । संस्कृतमें भी ऐसा ही वचन है-"शर्निर्प्रयाः शरीर पन्याः।"

सनपुर मनुष्यका एक पहा उदेश यह होना चाहिए कि वह काम कानेका कामात करें । अब यह गुण कामायण तथ जीवनके लाते काम मुम्म मानून होने कामेंग । समकत निम्माल क्ष्ममाण करना चाहिए। शुमासता परिधामने शामाती है। इसके विना अर्थान साधारण काम और नहीं हो सक्या । इसते सब कठिनाइसों बूर हो जाती हैं। नव्हराणी विक्रोसियोक प्रमान सरिव सा दावर्ट परिश्व वाल्यकारों करमाण करने और बार वार प्रपान करनेत ही रामके रात वार गये थे। जब वे वालक थे, तथ उनके शिना उन्हें भेनके पास लग्न करके पहले निवाधी किये विचा ही व्याप्तान नेत्रका भाषामा कराया करते और हमलाकों है कि गिरमेंग मुखे हुए पर्मिप्त्रेमको वारवार नुहरीनोधा अभ्याम कराने थे। पहले तो हम कार्यमें प्रोदेश उन्हित हुई, परम्मु पीके गिरम्यत कर्मा कार्यका पुना जाने और भी भी भी देश के अपल्यों अनक्ष मा-गार्थीक समाम वारवण मुखा जोने और भी भी भी के अपल्यों अनक्ष सम्मान्यार्थिक सेव पुनियोग विचा मुखे अम्बा उत्तर नेत्र पत्र जाने थे। यह उन्ही तिस्ता प्राणित ऐसी अन्देर हो गई भी कि वे राज-म्यमान अपने प्रणिद्विचिषोको सब पुनियोग विचा मुखे अम्बा उत्तर नेत्र पत्र जाने थे। यह उन्ही तिस्ता करका मा जो उन्होंने अन्तर विचास व्यवस्ता पड़ भी ।

तो अनुत्य हेबा स्कृतिये काम काने हैं व धीरतक साथ प्रतीआ कर सकते हैं। बाम कानक किए जिल्हों प्रसक्ताकी बहुत आवायकणा है। इस्पव बडी हो को किए को हो हो को को किए जिल्हों के स्वाप्त बहुराईकी भारपक्ता होती है तक सुकर असकता और विकासने हो बाद होनी है। इस होनो यातोंको सफलता श्रीर सुरक्ती जान समझना चाहिए । जीवनमें सबसे अधिक भानन्द पायद उसी समय मिलता है जय हम सफाईके साथ उत्तम रीतिसे श्रीर जी लगा कर कोई काम करते हैं ।

पिरोप कर उन होगोंको जो सार्वजनिक उपकारमें हुए हैं पहुत सम-पतक और धीरतासहित काम करना पड़ता है। उनको तुरंत ही फल न मिलनेसे बहुधा निरस्साह सा हो जाता है। ऐसे मनुष्य कम हैं जो अपने कार्य अध्या विचारके फलको जीवनमें ही देग लेते हैं। स्वामी ह्यानन्द स्तरस्वती अपने कार्यका फल अपने जीवनमें न देग सके; उनके बाद अब हम उस फलको देग रहे हैं। बहासमाजके संस्थापक राजा राममाहन रायके विपयमें भी यही बहा जा मकना है।

आशा मनुष्यका सर्वस्य है। आसाऊँ न रहने पर उसकी कमीको कोई चीत पूरा नहीं बर सकती । आशा न रहनेसे मनुष्यका जीवन एकट्स पलट जाता है। एक बड़े परंतु दुग्री विचारवान्ते एक बार कहा था-" जब मेरी सारी आशा पर पानी फिर गया, तब में कैसे काम कर सकता हैं-कैसे प्रसन्त-चित्त हो सकता है।" आज्ञामें बड़ी प्रवल ज्ञानि है। इस बातके बहुत उदाहरण मिल हैं वि सर्वेषा निरात मनुष्योंने थोड़ी सी भी आता मिलने पर यह यह वार्य कर हाले हैं । मुख्योधस्याकरणके रचयिता शोपदेश पहले बड़े सन्दर्शात थ । बचपनमे जब ये पढ़नेकी बैठे थे, तब उन्हें स्याकरण बाह् वरतेम वन बणनाई होती थी । ३ थपना पान् बारवार याद बरन थे, परस्त त्र संगार । रसर तर इसको प्रतान समझात थ परस्ते प्रकल और स स्तरण र । एकं वह परिश्वस बहत पर की बीपताबी करा से आया। पर ा रिक्त प्रवाहर किस्ता हो स्थाप वा स्थापन सम्मार सिया कि अण्डिला मंत्र, स्वत्र वर्ष प्राप्त प्रिक्षसद्द भी कृत्र स्थान गाउँ। बारा वनना गागा सम्य है। श्रीप्रवादी स्था भारत्य किया । इत्र भारत्वय व्याप कियानु अत्र तथा । एतः क्रियानव्य स्वत्यवसूत्र - १४८८४४- वि. वायमञ्जूष वर्णा लागा चामू च म्या निम प्रस्ता र. ज राष्ट्रक प्राप्ताराध युक्त किए सेव द्वान किसी सक् हुआ हुआ सारी रात रहा। वाच सामा १ वह सहायह जाहर पुरेखे जिस पर सम





स्यायलम्बन । हुआ भी यही; सैने तीब वर्गेने किर सब विश्र बना हिन्दे । " धैर्यका यह कैमा सुन्दर उदाहरण है ।

क्या (पुरुष उदाहरण हूं) ।

सा अधूरण अपूर्व वे दाहण है ।

' हाइसण्ड' कर कर पुरुषा करता था। एक दिन शार्य समय श्रूटन दिसी
सामके लिए बाइ पर पाया और मैजार मोमान्त्री जावती हुई होए गाय।
मुत्ता करती अप्रेस रह पाय। हुउ नामय बाइ उत्तर करता है होए गाय।
भाषा कि यह एचाएक ऐसे जोरने मेम पर शारता कि जावती हुई बची और
गई भी साम बाता जिनके लिलाह नियाद सरमें म्यूटनके कई वो स्मा शीर
गई भी साम बाता जिनके लिलाह नियाद सरमें म्यूटनके कई वो स्मा
है , जावता असन है गाये । स्मू जा कर लिहाह साम और उत्तर वह माम
हाल वेचा तय जमे बात भी दून हुआ, परन्तु जमने ग्रीपम भाषा प्रति।
सास सर्थी। अपने पैदीने साम दिया और यह केवल हुनना है कह सर्थ
स्मा कर्या । सामक्ष भी मो दारि हुई दे उत्तर्थ हुनका केवल सर्थ।
कर्या आपा है कि इन बाममें मान प्रति। हिस्स कर हुनने हुनने

आगत होनवामा अस्तर बाहराहरका भी एक एना है समझक आसना हाना वारा था। कालोंगीन कारणों हो ताहरीकार्ग वर एक पुरस्क कियों थी। उसने उस गुलाके किये है हमागि निय बागत भरने बात से कारी वर रिवर में हुए खेंद दिये भी यह उसके बाद एक त्यार कई साता है कारी पर सं हुए खेंद दिये भी। यह उसके बाद एक त्यार कई साता हो कारी पर समझ उस आमी कारणा होने सारी और यह आएसम हुआ है तिकी स्व उस बागाजेंदी तरावा होने सारी और यह आएसम हुआ है तिकी स्वी कारणों, यह समझका कि कार्य पर हो बाता कर है है, उसके सात स्वान से बार्स सं स्व सार्थ कार्य पर हो बाता कर है है, उसके सात स्वान सो हि पर स्वकार बागीइन्सी नमा दया हुई होगी। याना स्व स्व दी बया सक्या था, विश्वाद इसके हिया औ सरका खात बदने हैं। अगतों में सो निया से तावस्त होने हिया औ ऐसा है। उसके में मार सो निया से तावस्त होने हिया औ ऐसा है। उसके में मार सो निया से तावस्त होने होने हमा से इसके होने सो निया से तावस्त होने होने हमा से इसके होने से स्व स्व स्व स्व होने की स्व साथे हुए कियों सी, माना स्वार पर स्वार्थ का स्व हिया औ हस्या वर्ष का माना हुए मार माना इससे से सार स्व साथ कर हाना से एक किया हुए कर हा है। बदं बदं शाविष्मासकर्गांश्रीके जीपनचितिर्मिं पैपंके उदाहरण सूच मिलते हैं। रेएके अंजनका शाविष्कारकर्गा स्ट्रीफिल्सन जब पुषा मनुष्यांके सामने क्यारपान देना था तब बहता था,—"र्जमा भीने किया है धर्मा ही तुम भी बतो-पैपंसे बतार हो।" हीकितान अंजन बनानेमें स्वयं पंद्रह पर्य तक स्था रहा था। धाट अपने आपके अंजन बनानेमें सीम पर्य तक परिश्रम स्था रहा था। धाट अपने आपके अंजन बनानेमें तीम पर्य तक परिश्रम स्था रहा था। धीट अपने आपके अंजन बनानेमें तीम पर्य तक परिश्रम स्था रहा था। धीट अपने आपके अनेक मनुष्यांने ऐता धीर और अग्राल स्थानित्यों पदने और समझानेमें अनेक मनुष्यांने एता धीर और अग्राल परिश्रम किया है कि सुनवर दानीत्यंत केंग्रिस द्वामा पद्मी है। उसके द्वामा स्थान केंग्रिस केंग्रिस केंग्रिस समझाने स्थान केंग्रिस समझाने स्थान है तिनकों सोग कभीके भूक पुक्ते थे और जिनकों पद्में आना स्थान थी। पंडित अग्रायान स्टाल हन्द्रजीने हस विषयमें बहा परिश्रम किया था।

साहित्यसेवियोंके चरितोंमें भी धेर्यनक्तिके अनेक उदाहरण मिलते हैं। याम प्रतापचन्द्र रायने 'महाभारत' का एक भेंगरेजी अनुगाद मकाशित करनेका निश्चय किया था । यह निश्चय इनना दद था कि बाह्य साधन म होने पर भी सफल हुए विना न रहा । उन्होंने इस काममें अपने एक मित्र केसरीमोहन गांगुहासे सदायता ही थी । ये महाराय संस्कृत अच्छी जानते थे । प्रस्तक योदी थोदी करके भी भागोंमें प्रकाशित की गई । परन्तु राय इस पुस्तकका ८४ वाँ भाग निकला तब प्रतापचन्त्रका देहान्त हो गया। उन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशित करनेमें बारह वर्धतक करिन परिश्रम किया और शार्थिक सहाबता पानेक लिए भारतवर्षमें चारों ओर अमण किया। उनको केपल भारतवासियोंने ही नहीं किन्तु यूरप और अमेरिकायालोंने भी धन दिया । प्रतापचन्द्र स्थमं धनाइय म थे; परन्तु उन्होंने इस पुस्तकके प्रका-द्वानमें अपनी गोंटका भी रुपया लगा दिया । सन् १८८५ ई॰ में उनकी अमण करनेसे शुखार आगया और इसीने उनके जीवनका अंत कर दिया। सायदास्या पर पदे हुए भी वे अपनी पुस्तकके विषयमें सोचते थे। क्या अस पन्तवक संपूर्ण दोनंकी बुद्ध भारत है। बचा मेरे जीवनका एक मात्र कार्य अपूरा ही रह जायगा । यहां चिन्ता मरते दम तक उनको मानसिक कष्ट देनी रही। उनकी प्रवल हच्छा थी कि पुस्तक संपूर्ण हो जाय । उन्होंने अपना प्रियपत्नी सुदरीबालाकी बुलामा और कहा,-"पुस्तककी संपूर्ण करना ।

स्यायलम्यन ।

मेरे श्रादमें घन मत ख्याना; क्योंकि उस धनकी पुस्तकके प्रकारानमें उस-रत पड़ेगी। जहाँ तक हो सके तुम साधारण जीवन व्यतीत करना और पुस्तकके लिए रपया बचाना । " उनकी मृत्युके प्रश्नात् सुद्रीवालाने अपने पनिश्री जालाहा पालन करना अपना धर्म समझा; केमरी मोहन गांगुनीने मी सहायना देनेसे सुँह न ओड़ा और एड वर्धमें वुस्तकका क्षेत्रांश मकाशित हो तवा । भाष्यियामहाणेष थीपुन नगेन्द्रनाच यसुका जीवन बड़ा ही शिक्षामेड है। उक्त महारायने बंगभाषामें विश्वकीश नामका कुक शृहद्द प्रंय कियनेका संदर्भ किया और उसे उन्होंने बड़ी बोम्बनापूर्वक २८ वर्ष तक निरम्ता कटिन परिश्रम बरके मकुषे किया । यह पुण्यक २२ किस्तेंमें संपूर्ण हुई है और मय नरहके ज्ञानका भंडार है । क्रिम समय बरोन्द्र बायूने यह काम भारंस क्रिया था उस समय उनकी अवस्था केवल इक्षीय वर्षेडी थी ! इति बड़े कामके लिए उनके पान घन न था। उनका वेतन बहुत घोषा या जिससे वे भएने वृद्यवका निवाह काने थे। पहले विश्वक्रोतका बाहकांन्या बहन 🜓 थोदी थी, परंतु जब इसके कुछ संक्र निक्छे नद स्रोग स्रोग्द्र बार्डी योग्यता पर मुन्ध होकर उनके प्रयक्ते आध्य देने रूपे । सरकारने भी उनकी सहायना करनेडे जिए बुख अनियाँ भोल लेना स्त्रीकार कर किया। बीचमें नारेन्द्र बाद कई बार बीमार हो गये और कई अल्पतिवियसियों केंग गये। परम्यु उन्होंने अपने द्विय कार्यको त्याग देनेका विचार अपने जीमें कभी न आने दिया। एक बार वे बहुत ही बीमार हो गये थे । उस समय वसकी द्यार यही 🗓 निराशास्त्रक थी । उस समय उन्होंने कहा या-"मुझे इस बातका बड़ा शीक है कि में विश्वदीशको समूर्ण दिये विना जाता है।" पास्त् अस्तर्मे यह क्षांत सर्व हो गया । इतन है कि हमक मिलनम नगरत शत्को प्रथाय हुआर पुस्तक देशको पढी और लगानग देवलाथ रूपया थय करना पहा । यह ब्रथ बग-माहित्यमें एक स्था है और समारक सभी विद्वानीन इसकी मुणक्रम प्रशासा की है। बगन्ड बाह्य पण्य और भी डा मलाशयान विश्व-कारतक जिल्लामका प्रयास किया ता पतन्त्र स्थलन्त्रा स हेतु । इस ही काम करन पर उनके वेयन बजाव न दिया । यह नगन्त कानका ही पेप । वा उन्होंने इतन समय नेड सरनांड रंपन्यम दर्द अमृतिशाओदा 88



स्यापादस्यतः । विच्योरियाने भी उनकी एक पालकको पता और उनकी बड़ी प्रशंसा की। गुर्वर-मादित्यमें उन्नकी पुस्तकों हा अब तक बढ़ा सम्मान है ।

कुछ काल बाद बहरामतीने "इन्डियन होस्टेटर" नामक पणको भगने अधिकारमें ने लिया और उनका संवादन करना शब्द कर दिया । वे केपड क्यका नेपारत ही नहीं; किन्तु उसके लंबंधी लभी काम करने से । इस क्यमें समात्र-पुरारके दिवनमें बहे उत्तम हास्वपूर्व केल निक्रण करते थे। इस पचके नगाने हे नित् बहरामती है बाग बधेष्ट चन म था; इस लिए एक बार इन्हें भागी साहे आधानम सब बेच देने यहे । वरम्म वे शबदाने नहीं। धैर्नेपुरेक निरम्बर परिश्रम काने रहे । शीर्ड ही कालमें उनके पत्रता हुए देशमें और विदेशोंने खूब मन्दार होने लगा । उसके बात्कीरी मंतवा बपुत क्षत्र गाउँ । मारमके गवर्गर जनरम भी उसे बड़े बावने गपने करे । जन्होंने

की यत्र और चलात । उनमें से युक्त "ईरट मुंड वेस्र" उसकी शुरपुक्त पत्रा",

अब तक निकल रहा है और उल्लब केशाब कर समाप्त आला है । बहुराम-सीने मामाजिक सुधारके निम्ह बहुन क्षम क्रिया । हिरवसमी है। युवा सुधार मेडी बन्दीन अनेक बार चेयारे की । युव काममें कीरोनि बहुन वासारें कारी और उनकी बहुत बुग शता बना, परन्तु प्रन्दीन किसीदी एक न सनी । में भारती पूर्व पंत्र थे : कीत कार्य में कि में केएक माम है निय बह काम काम है जीर इस सरह ने उन्हें बहुबाय करेंड निस्त्याह करना बाहते यह पान्तु उन्होंने मेरेनको बाने वाल और म करकने दिना । उन्होंने माल्तीय विश्वीकी रामिनी में लेका मुख्याका बाम विकास मार्थ के किया है क्षत्रमें निकास भी क्यार दिया। तिमाशक विका धर्मपुरमें सी समित्र

रिक्टियान्त्रम् सम्बन्धायस् रहे व होत्र हिन्त्र बता है पर भारते ही गरियमधा कत है यान्यान दश्य भनेत दारा हती तथा बन्दी रामन पृत्वीम परिदार म दी व नरम कार्र वास्त्र व स्वत्र दास न्यान वा वरसामीका क्यार-बाब बन १० व के इंका - इंक करण एक खंडल विसायन बालकर सामें P DE DE LE ERE P. MIS AND ENGINEE DES PE ETT THE er a die dan rant miett ein att an al regi gie nie fal. an armed to so all strate also will be been the र्काः मुश्तकीरे द्वारा सर्वसाधारणो समाजन्युवारका कीत्र श्रेतीत करण, बाध्यभीकी सरण कर निवासभीती त्यार सुवारियक भेटर करण, यासी त्रोका भी रिस्ट् ट्यांचि पुरूष कीर निर्द्योकी सार्व्यण करणा, रिस्रोटियोकी सारे सुन कर की अपने दी का कीए न स्थान, वे स्वय कार्न आगरी विसं-सार्विका एक सर्वार्का त्यारहरूवन त्यारहरूव हमारे सामने स्थान के रि

्रस्के बाद यह एक गाँवमें का रहा और वहाँ जूते सीनेवर घेषा परने रणा। हमी समय वीमेण्डमें उसने पडेवाधीमें हुनास वाया; हम बाममें यह इड़ा निषुण हाँ तथा था। एक बार उसने एक मनुष्पकों सहमूखी मालकों पोसंग ए जानेन महायता है। हम वायेमें उसकों जानतक वार्ष होती। यह हम बामम नागंव साथ हम लिए हागिक हो यथा था कि एक सी उसलिए एम सामान गाँव था जीए हमा उसकों आमर्जा वार्ष में धी हमलिए र स्वार्थ को ला येथा। एक बार इस समय नागंव यह यान माहाह र साल कि सामान माल को नागंव समय हम नागंव यह यान माहाह र साल कि सामान माल को नागंव सामान को स्वार्थ हम सम् कर उस नगर है शब पुरुष-को शाय: सभी सहसूची सामन्ही चौरीसे से जायह काने ध-माहक किनारे पर नये । उस अनुष्यते, जो अहसून बचानेक लिए भाग मान्त्रको भोगिने से बाना चाइना था, भागा अहात किनारेंगे कुछ कुर नत्त कर दिया । उसके सवायकों मेंने कुछ कीत तो कहानी वा संक्रेत कारे भीर मामका क्षिपानक निज्यादे हुई और मुख अक्षात्र वरमें मापीमें साल भाका दिशार पर कार्नेक लिए निवन क्षुत् । वैज्ञूचल कृत् कृत्री सहारालीमें ता । रात बड़ी फैरियारी थी । मोड़ा ही साम इताने प्राथ था कि भी मै नभा और समझ पण्डवारन कहा । जो कीय गांती वर वे क्रमीन धीरत चारण रिक्षा और नाम इनारनेके छिए जहाजने अभीनके किनारे शक्र कई पश्चर कराय । जिस्स नायम बृक् वा उसी नायमं बैठे हुए कुछ आनुमीकी होती हवासे हड गई और जो ही उसने भगनी उड़नी हुई रोगिको व्यवस्त्री चेट्टा की, मां हा उसका श्रोकन नाव भीती हो गई। नान शायुनी मां मान ही हर सर्थ । जा शय रहे वे पूछ दर नक ना मायन विपाद रहे, परम्मु जब प्रमृति कृषा कि मान दिनारकी बार म जावर समृत्ये और भी भारो बहती सानी है अब मैनमा राज कर दिया । व अमीतना को जीवनंत बाल दे था है। भीर केशर राव थी। इन्हीं नैशरवींने इय जी जा। यह बड़ी की करिनार्टिंग मेरे का आपन ना वन वर्राज्यां नीइन दिनार पर पहेंच रापर और वहीं संदेरे एक महीच विक्रुश हुना बडा व्हा : सबना होने पर अवशोगीन अर्ज नेवा सब पै इन्हें बालाम के सम । व न्यवह राय भवनरे की रहे थे । अब कुछ शराय रिक्राई गृह तब उनकी जानने जान बाई । सरीरमें कुछ वस ब्राजाने पर बुन् साथ करका बना गण मा तो तीबकी नृति का सा बरलायक व्याम ही इस प्रकार बार्माने वह आनेने प्रवाह स्वराहेशी men a gram munder unt & fa un mer aner a ett und uff uft

स्वस्त कार्य क्या रूपा का मी मीचनी नृष्टी क स्ता । मूर्यान्यक दुस्तम ही इस्त कारांड साधिन वह आनेते प्रयक्त पूर्वदेशी स्वाम को हा रूपनु कार्यदर्श साथ है कि यह मूझ नाव । उसी हानू में स्वाम कार्यान्त कार्या क्या कार्या क्रमा कार्या मीच सहस्वी सावधी मारिती के स्वान्यान्त कार्या कार्या कार्या कार्या कार्यों मीच स्वाम कि स्वाम कार्य कार कार्यान्त अभावनात्व हुए मिल्डक हुए है कि इस्ता हा अच्छा भीत कार कार्यों कार्यान्य कार्यों और हुमके बाद वह एक हुकान पर जुना बनानेके काम पर नौकर रह गया । हुए मरते माते चचा, शायद अब इसी कारण यह गम्भीर हो गया सीर उपहच फानेको प्रवृत्ति उसकी कम हो गई । बुछ समय पीछे धर्मीपरेशक शाक्टर ऐडम क्षार्कके उपदेशींने दूव पर बड़ा गहरा प्रभाव दाला और इसी समय उसके विताका देहान्त हो गया। इस कारण तो यह और भी अधिक शासीर ही शया । जमका स्वभाव विल्युक बदल गया । उसने किस्से पत्रना लियना शुरू का दिया, क्योंकि यह इस बीचमें प्रायः सब ही पुछ भूल खुका या । उसके एक मियके कपनानुसार उसके इस्नाक्षर इस समय ऐसे मालूम होते थे क्षेत्रे किया सकडीने अपनी टीगोंको स्याहीम हुमाकर और पागत पर फिरकर एक भारीय नरहके चिद्ध बना दिये हों । इंग्ले अपनी उस भागपत्री रियतिके सम्बन्धमें पीछे पीछे कहा था कि "जितना ही में पहता या उतना ही मुझे अपनी अनभिज्ञाका अनुभव होता या; और मुझे अपनी अनभिज्ञ-साचा जिल्ला पना कराना था, उतनी ही में उसे दूर करनेकी चेटा करता था । अवसारा मिलने पर में अपने हरणक क्षणको बुछ न बुछ पहनेमें लगाता था । मुहाको अपना निर्वाह करनेके लिए सजदूरी करनी पहली भी हम फारण पहनेके लिए बहुन योहा समय भिल्ला था, और हुसीसे में अपनी इस सम-वर्षी वर्मीको पूरा धरनेके लिए भीवन वरनेके समय अपने सामने किनाप क्तीलक्षर रार लेना या और बससे कम ५~६ प्रष्ट पड लेना या।" राय नामक क्षेत्रक निदंशोंको पर्वर उसरा ध्यान आत्मलानरी और आकर्षित हुआ। चमने कहा कि "इन निकंधोंकी पहकर मेरी मानसिक निदा हट गई भीर भेंने अपने बीच विचारींनी छोड देनेना पता संबल्य कर लिया !"

हनके बाद हर्नने घोड़ेसे रायोंसे निजी स्थवसाय शुक्त कर दिया । उस समय उसकी वार्यनणाताको हेल्यकर एक पहाँगी पशीवालेने उसको कर्क हे हिन्ना और इससे उसका स्थापार अच्छा पत्नेत तथा । इस उद्योगमें गृंगी सम्प्रात्मा नह वि उसने एवं ही वर्षके प्रधान साथ कर्क पुत्रा दिया । परन्तु इसके बाद उसके वर्ष एक्स काम पक्ट लिया । बर्जदार बननेसे उसे इनकी पर १९ १९ एक्स वर्ष पर्वात्म प्रभाव कर्म मान्यस्थ प्रस्ता । १८ १८ १८ १९ १९ १९ १९ १९ १९ स्थापन मान्यस्थ । सारम्यस्य पत्न

स्यायसम्बन्धः

कर्मन होना चाहना था । उसे हुम अक्निय थीर थीर महत्त्वमा भी हुईँ। तिरामा सार्गीत परिश्रम करते हुन भी उसने अपनी सान्दीर उपनि कर-ने के दिन गोल, हरिशाम और मान्यतान या क्यारावा क्याराव क्यार किया इसे वाप-नारका निशेष क्याराव करेंग्रेस सुर वहारा निला कि हम रियामें गार ने दिखाँकी अनेशा कम पुराने हेगाने की सारहासका थी। दुना बनाने कीर भारतासका अध्ययन करते का मार्ग पार परिशास

र्दर्भ काम भी बरने लगा। वसे राजनीतिने श्री होत हो गए। हमारी दुक्तन पर उस प्राप्त कारतीतिक होती कोर्सीक्ष शीष्ट्र होते कर्मा। वस वें मार्ग दे तस वह एक्य उनके प्रमुचनिक दिल्ली पर सानतीत करने भग जाना था। इस कामने उसका इनका समय करने हमारा कि उसकी कर्मी कर्मी दुक्ती लोग हुए समयकी कर्मीक्ष पूरा करने हैं लिए आभी सम् मुख्य करने पाएला था। गोर्चन कर केरा करने कारतीत कराती हैं किया करने थे। यह बाद कर हुए समय हमारा कर करने कर सान कर हमारा सम करने करका उसके कमारे भीगत रोगानी नेक्या केर द्वारा कर समीरा कराता सीर असान हुए कहा हमारा कराइ होंगी थाना में क्या हमारा सीर

बाम काना है और दिनमें हुआ उच्च गणे दोंदा बरना है।" यह बान इपूर्न

बुक समय बार कारन कह सिकारी बारी। विश्वने बुक्त-चुनाने द्वारा सुमारियों गिर सा पनाइ कोर्ड के लिया गायार को व जाया दिये हैं बुन्ते कार दिया-गायाँ, वर्षि कोर्ड मा बार्ड किंक्युम वाप्य कारत बेंदुकड़ी भाषात कारत मी जी हमा उपाय हमता कार कारवा वस्त्रावाद का दोगी, जिससे वार कह-केंद्र कर पार्टित कार्योग हुई में कि दासी कार्य कारत कारत की होंगा बार्ज बात कार्या कार्या है में नाव है। वार्य कार्य कार्य की होंगा के बहुई दा कार्या केंद्र कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कर केंद्र होंगा वह उपाय कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य मान सम्मा है कि दाया वह निकार कार्य कार्य

हत्त तथा चुम्पून तह स्वस्तिवह पत्र क्षेत्रहा आतं हहा। यह एपा प्राप्त ह ए तहा हो जन्म हा स्त्री तो । वित्र जीन हहा हहा वहाँ वहाँ हैंगा । इस जान होई तथा अप हो होई का लाग । हराहा स्त्रीम

अखंड उद्योग और आप्रह।

प्रेम पहले पहल एक कविताके रूपमें प्रकट हुआ। उसकी कविताके कुछ अंश तो अयतक मीजूद हैं यह सुचित करते हैं कि आत्माके अमृतिक और अविनासी होनेके मम्यंथमें उसके विचार कविना करने करते ही उत्पन्न हुए थे। उसके पानेका स्थान रसोईंघर था। वहाँ वह चूल्हा मुख्यानेकी धोंकनी पर किनाय रराजर पड़ा करना था। बचे द्योर मचाते रहते थे और धूमधाम करते रहते थे। तो भी वह अपने छेख दिगा करता था। उस समय पेन नामक छेखकत । बुद्धिना युग ' नामक पुग्नक प्रशासिन हुई थी। लोग उसे बड़े वायसे पहते थे। इस पुस्तकके ब्रीनवाइमें कृपने एक छोटीमी पुस्तक लिपी, जो प्रकाशित हो गई। यह अक्यर कहा बरता या कि पेनकी पुरनकने ही मुझे लेखक बनाया । किर तो बुछ समय प्रमाद ही उसने यहरी जहरी कई छोटी छोटी पुरुष्ट ित्य दाहीं। बुछ पर्योके बाद उसने ' मनुष्यना आग्मा भमा है और अमृतं हैं इस नामको प्रतिद् पुन्तक लिग्दी, प्रकाशित बराई और उसको १२० र • में देख दिया । इस रकमको वह उस समय बहुत जिपादा समझता था । इस पुरुवकी बहुँ आहतियों हो पुत्री हैं और अब भी उसकी बदर की जाती है। बहुनमें युवा लेगक अपनी घोड़ीमी सफलता पर भी फुल जाते हैं। अभिमान बरमें समें हैं; परन्तु हुएको शिक्षित भी यमंड न हुआ। प्रतिद्ध रेख-वींमें राणना ही जानेपर भी वह अपने घरके द्वारके आगेवी गलीको साहा बरता था और अपने किप्योंको जाड़ेके लिए बोबाने लागेम सहायता दिवा करता था। दसने कुछ समय तक तो साहित्यको, अपना रोजगार भी त बनाया था; वह मोचाबा बाम बरवे ही ईमानदारीये उदरनिर्वाह बरना था और उसम श्री समय क्यता था उस पृथ्य स्थितम स्थाता था । परन्तु पीठे यह भएना सारा ही संबद वर्गार बताय लगान लगा। उसन एवं भागितपत्रका संपादत . बार १३ १४ १ ११ ११ पुश्तकोत प्रकाशनका का यह प्रयोग करने हसा। उससे बर ११ व े अपन ते उनक भी नेम है नहें हमन वृश्च मा सि तिस IN NAME APPRIATE THE MEN ITTHE ATT IN IT I र व सन्दर्भना वस्ता रीचन व व (सनस्द्र्य) र रुप्त १ वर्ष १ वर्ष १३ के वर्ष प्रसार प्रशास

पाँचयाँ अध्याय ।

गापनोंकी सहायता भार सुयोग। ~~ं≫ः€>--

"भागी हाथ अपना कीरी मुद्धिती कोई महरवद्या काम नहीं ही सकता ! बाम क्यों और भाषजीये होते हैं + चुक्ति (सातथिक शक्ति) भीर हाथें (शारोरिक शक्ति) दोनोंको ये माधन एक गमान भावतृत्व हैं । "-----केसन ।

" न्योग के भिरते के बात आगे की बीर बात होने हैं, गीड़े हैं आहे हा नहीं है, याड़े ही बाद बाद का नहीं है। बाद सुवाद हा बाद का अगाये कि बाद की आगे की किए गीत है। की सुवाद हो की आगे की की बीर की की की बाद की आगे की किए गीत है। की बाद की बाद की की की बाद के बाद की की की बाद के बाद की की बाद की की की बाद के बाद की की बाद की बाद

हिंदी भावन्तिक परणा या तैयकी श्रीलाके शरीने जीपनांत्र कोई बड़ा काम नहीं दोला । नव रोक दें कि बाबी अभी शामा याने

क्या काम नार रामा । नार ठोक है कि कारी कारी रामा पान कारों के रहमा सूर्यों है। इस तारों कारों के रहमा सूर्यों है। इस तारों कारों का



ANTONIE POR I

भग रण रूपरेचे एवर सम्बने रिया और त्रश्चित्रवीने-भी प्रण समय केरण रेड की करेडर था उन्हें स्थानपूर्वत केला और प्रमुखी सामित समाने सार का मेरी कराना चार्य प्रश्नमंत्री मात्र गाँ । इन्हें बाच अब प्रमाने पन वर्ष रेक न मधन ओर बनन हिना गय क्रवी वह लोजब या वैश्ववस्था भारि-भार कर सका दिवन बारवांस और वातोवनारक्षां स्थापस अपूर्व सार्ग

मान तरन्य है : इसी लात संनिधिकोत प्रव वृष्ट बार यह सूना कि दियी रनक्यातन एक राजाम स्थ्य एक वेटी यनब (बारात) मनाई है पि निराम्य कृत्या कुल सम्ब दिलामाई कुल है, सम इसके ब्रम बातवी और काल जान बन्द्रमा और घलमं यह दूरनीनक सर्वेत्रका बरनेमें मार्ग हैं भा । कार राजिए।अर्थ नागका समने हत राज कर का व्यक्ती पान स्वता

ही 14 अन्य भा भग अहन अनुपेशन करानि व at सबने i कारत केंन एक क्यांकड़ी दिवाचा अन्यपूर्व किया काणा मा । मध क्षा पर का क्षाब परण साथ की पह मुख्याला पुष्ट प्रमाना पार्टमां पी है कर रेस १२ व कह आगार पुष्टत का हता था रेख आगी जे पूर्व क्या होरति मृत्रक प्रात्त्रक सक्रमण्डक माध्य पुरत मृत्या प्रत्य । प्रत्यक मृत्यामा मृत्यम ही

as see any to dive bard sugar and a pill appear are ment de maior à une grave citores que que des unes gret munte Lang. allorant et man manne que mouse un netret mai à fir Bur gr tre se dere ent an ate bede afr ma it an tert W A P TO THE ME WE WAS IN THE SEE ASS SET THE TABLE

with at it for the same to their design of the - 14 E E1 12 21 42 4 1911 1994

साधनीकी सहायता और सुयोग्।

तक युरुपवाटोंको अमेरिकाका पता भी न या। इस सफरमें कोटम्यसको एक माससे भी अधिक समय छगा। जब उसको जहाजमें घटने घटने घटने पहने विद्वादिन पीत गये, तब उसके साथी निराज हो गये। उन्होंने समप्त टिपा कि अब स्पष्ट फमी न आवेगा। उन्होंने निश्चय कर टिया कि अब फोटम्यसको समुद्रमें दकेल कर घरको छौट घटना चाहिए। उसी समय कोटम्यसके समुद्रमें तैरती हुई पास देती। उसको देतकर यह समग्र गया कि भूमि निकट है और सब उसने अपने साथियोंको मे समग्रावा। ये मान गये और पान्त हो गये। कोई चीज इतने डिटी नहीं है जिसकी तरफ से हम उपेशा कर सह और पह हो गये। वोई चीज ऐसी तुष्ट नहीं है जिसकी तरफ से हम उपेशा कर सह और कोई बात ऐसी तुष्ट नहीं है जिसका अभिगाय मातृम होने पर यह जिसी काममें उपयोगी न हो सके।

छोटी छोटी बीजोंका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना, ब्यवसाय, शिल्प, विज्ञान और जीवनके हर काममें सफलता प्राप्त करनेका गुप्त रहस्य है। मानव जातिका द्यान छोटी छोटी बातोंसे ही मिलकर बना है । ये बात पीढ़ियोंकी परम्पासे इक्टी हो रही हैं। ज्ञान और अनुभवके छोटे छोटे अंश बड़ी साव-धानीसे इकहे किये गये हैं और अब उनका बहुत बदा समृह ही गया है। यद्यपि ऐसी यहुतसी छोटी छोटी बातें पहले पहल महत्त्वहीन ही मात्हम हुई होंगी तो भी पीउसे ये बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई होंगी और तदनुसार उन्हें शानभंडारमें उचित स्थान मिल गया होगा । बहुतसे विचार जो स्वयहारसे सर्वेषा अतीत जैसे माञ्चम होते थे स्पष्टतया व्यवहारोपयोगी फलोंके नीजरूप सिद्ध हुए हैं। जब फ्रिह्मिनने माञ्चम किया कि आसमानी विज्ञकी और घर्ष-णने उत्ता हुई विधुन एक ही वरत है तब लोग उनका उपहास करते थे और कहते थे कि "ये दोनों विजलियाँ एक जातिकी हैं, यदि यह जान भी लिया तो इसमें बया लाभ हुआ। यह किस कामकी पात है।" इसका उत्तर फ्रेंकिन यह देते थे कि "एक छोटामा बालक किस कामका होता है ?" नम्हें सोचना चाहिए कि वहीं बालक एक दिन बालकोंका बार हो सकता है ' '' जब रालवनीने यह मालूम किया कि मेंडकरी दाँगके साथ भिक्ष भिग्न धार्ताको राज देनमे उसकी दोग जीव भागी है, तब यह किसकी समान था १३ यह बात. जा देखनेम नुष्य जान पडनी थी, ऐसे महरवपुर्य परिशाम पर करना परस्तु इसाम तार द्वारा समाचार भेजनेके उपायका

रिकाम दुशा, जियके द्वारा संभारके समस्य देशीई समस्या दूषारे क्या साथा करते हैं । इसी अकार उच्चीके तीये देवे दुए गुप्त और सर-स्थानियों के धोरे कोरी क्षीत्रीय शुदिसानीने मित्रामा सम्भावेने पूर्णायामा रिकाम दूषा और नाम भौतत्रेच द्वारा निकास क्या स्थावित स्

पानीकी हैंदियं उक्कमा जानिक भाषका पैदा होना सामात्म बार है। इस अपने स्मोदियनि यह बान जानिक हेवा हैं। इसी आरको जर प्र कर्तारमें नवाई हुई कार्नेड डात बानमें कार्न हैं, जर इगयी साफ होती पीदियों सिफंड बराव्य हो जाती है। यह अपने बचने गहुदकी हरोगी पीदियों सिफंड बराव्य हो जाती है। यह अपने बचने गहुदकी हरोगी प्रकारणों है और को बच्चे नुकार्यक सामग बस्तीय व कि है सिक्सें मिन सामिका मोने क्या अपना है, से आरक्डों हो सिक यह अपनोर्ट में मत्री गरित जर बुक्तीके भीतर बात बराती है जब बर्गेनीमिने नताम निक्सी है और प्रकारक कार्य दस्तीको कमाणवास कर देशी है जिससे मेगार्ट वितासने वर्ष वह आरंग परिकार्य हो आर है है

बदा जांगा है कि पहले एक सारकिया आहा योरवहरका भार मामकी मार्गिकों भोर मार्गिक गुमा जा । एक देशके दश (दिगेदा) में दिर या । वर्ष रण हु बद्दा मार्गि वागन पूर्ण पर पहां हुआ जा । दमने पती मींन रहा था । बाननके हुँछ एक बद्दा इक्कर नहां कुछ था । दमने पहां हु रेगा कि आपके नीरोंग एक इक्कर प्रमा कर पूर्व का पहां प्रमान पहांचे प्रमा मारकी मार्गिका जान दुंगा भीर दिन उनने करने हुए मानुस्त्रमा कर एक पुल्यकी क्यांगित करा दिला, निकास महत्वनकी करेड कोना मारकी पांचित मोत्रमें नाम नहें । उनके बाद नेपूरी, स्पूर्णन मार्गिक मारकी पर्याप्त मार्गिक स्वाप्त के अने निकार किया, निकास पहांचे पहांच प्राप्त मारकी

बारता नारा जगान आहर का का हो। यह बारच हा करा हा। में मुश्ति की की स्थारण है। में मुझ्ति किर किरोपित बारा करा, की जान है। हिमी की देशी किरी है। किरी की स्थारण बाराया बारजाएं है जा की है का मिर्चान करेंग्रेस स्थारण के की हैं, उनकी बायवार्थ का होते हैं, और बार्च करेंग्रेस स्थारण कर की हैं, की है का स्थारण करा की है। यह कर मान्यी करा करा की है। यह कर मान्यी करा की है। यह कर मान्यी स्थारण करा करा की स्थारण करा करा की स्थारण करा है।

नि कार्तिको, भारत्यकारी, और प्रदर्शनियीय माध्य कार्यवानीय हो। दिलान भीत दिल्लासंसेदी समसे काँउप बाग विशा है और यह रायान की राव नहीं है वि भी शतमें कांधव प्रसिद्ध गंग्रदार कीर कार्यायकार हुए हैं तुन्हींने तित्यक्तानाओं के किया चार्र थे। । प्रांतिक विषयम राज्य कविषयी के विस्त चित्रसारमधे बर्भा सिरम गर्भ पार्ट । आयरप्रवेग साविष्यार्थेवी सन्ती है । क्षाचीपु कावद्यवामाठे कारण है। सारे आधिष्ठात हुए हैं---ताशुचका किसके विता म चला उत्तीर्या यह गीत बनना नया। सबसे अधिव प्रस्तृतवह शह-शाला ! व दिनाई ! यी पाठमाला है । सेवर्टी और विश्वाहबीये ही नरह नर-हवे वाधित्यार होते हैं । बुध गर्योगम दिश्यवारीन बहुत शह श्रीशारीय बाध विया है। परम्यु बाद स्वस्ते वि मनुष्य भीजारीके द्वारा वहीं किन्तु अवली चतुराई और धेर्यंदे बारण शिश्यवार बनला है । चुरे शिल्यवारदे तिए अर्थ भी भीजार तुरे हैं । एवं विश्ववारने किसीने बदा कि, " आप अपने इस मान्द्रम नहीं किय विशिष्त्र शितमें मिलाने हैं । " उसने उत्तर दिया, " महा-दाय ! हैं। उन्हें कापने मस्तवके द्वारा शिलाता हैं । " दरमुक प्रशिक्ष वार्धकर्तांके विषयमें यही यात समगता लाहिए। पहरतास्त्राने अनेक अहुत बीमें -- कैसे लकडीया घटी, जो टीक घंटे बनानी धी--एक गाधारण चारूने बनाई। चारू वक ऐसा भीजार है, जो हर मनुष्यक चाम होता है। परम्यु अस्पेक मनुष्य पत्रमुखन मही होता । पार्नावा एक तमला और दो सापमापक धंत्र, क्रेयुक इन्हीं श्रीजारींने बारटर ब्हॅबाने अप्रवट सापका अनुसंधान किया, यह सिद्ध किया कि शृष्टिकी समाम चीजोंमें सुपी हुई सभी रहती है । दास्टर घोछे-स्ट्राने बहुतमे महरप्रपूर्ण धनानिक अनुसंधान केवल धायकी एक पुरानी रवायी, घर्टाके शीधी, बागज, एक छोडीसे सराजू और एक कुंजनीसे किये थे। बटक (उद्याम) निवासी सहामहोध्याय पं बान्द्रदीरार सिहने

बन्दः (उद्दारा) निवासी सहासहात्पाय पर चन्द्रहारार सिहले ज्यीतिवर्गबन्धा अनेक अनुसंधान साधारण बंशोंसे बर दाले थे। उनके पास एक जल्पटी, एक दिष्कण, एक एतोल, एक हांनु और एक हवर्षण्ड यंत्रके निवास पुछ न था। और ये यंत्र भी उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्योतिष प्रसावांची स्वयं पट् पड्कर बना लिये थे। आज कलके पश्चिमी बन्दोंका सो उन्होंने बहुत समय तक माम भी न सुना था। केवल प्राचीन संस्कृत प्राचीक आधार पर पुराने ढंगसे ज्योतिष विद्या मीखी थी; बहुत दिनों तक तो नये. पिस्ती त्योतिक-तावादी उन्हें हका तक कक्षी थी। चंद्रतेनार्गियारे बातवादासे मंदरूत काई जो थी। उक्सी मुहत्ये ही जर मक्षय वृत्यी रंग्योत प्रतिकारण जानके बाद्य शीक था। उनके व्यापत उनकी रंग्या त्योते आवादासे काव्य दिने के, इतने अधिक वे कुण व सम्या पर्व थे। व्यन्तीमर्शायत जब कीई सहस्य करणा काव दर्व ही संदरूत के कोरिन-मार्थोठ वर्ग के भीर मक्सवेदा समान हिल्ला और इस बार्श्य के कोरिन-मार्थीठ वर्ग के भीर मक्सवेदा समान हिल्ला और इस बार्श्य करों कर की सम्यान संपूत्र के की स्वतान मक्सवन्यवस्य एक बहिता वर्षाण की उन्हों के स्वतान संपूत्र के की स्वतान काव्यान कर करणा क्षाया की समान करणा। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या तब सम्बोद्ध स्वतान क्षायत और समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या तब सम्बोद्ध स्वतान क्षायत और समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या तब सम्बोद्ध स्वतान क्षायत और समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या तब सम्बोद्ध स्वतान क्षायत और समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या स्वाप्त समान स्वाप्त स्वीत समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वीत समत दिना। इसने वर्ष स्वीत कर नत्या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वीत स्वाप्त स्वीत स्वाप्त स्वीत स्वाप्त स्वाप्त स्वीत स्वाप्त स्वाप

करक-शांतिमक माणाया वायू योगायान्याची भेर यह शहरी जा रेंद्र' रोणायों हुं तब करें उनकी दिश्याची साम्बद वहा मामरे हुना। एक साधाया कामरे पहल केक वर्ष मुख्येदित वायुवायों हुना माण माण से तेना बोर्ड वोर्ड यान मांद्रा योगाया वायू वोषायु केंद्रे किए क्यों की स्था पूर्व भीर उनका माणोप्तमक उत्तर वाया। एक दिव सार्थित सामर्थ उन्होंदे युक्त कीर माणाव्य क्षेत्र पूरा : इस वा काम्योत्सरी मृति ही कार्य निर्द्या कर्डीची ज्यानक का मामर्थित मेशन दिवस भीर पूर्वाये देशी इस्त्रीय करण कार दृश्य के क्या कर्डिया किया है कार्य पूर्वेया दृश्या। कि बोगायाच्या उनको दृश्येया दिवसी है कार्य क्षेत्रमा इस्त्रा । स्वार क्षित सोगायाच्या उनको दृश्येया दिवसी है कार्य क्षेत्रमा इस्त्रा ।

 सीमाता पर बाना तोवर एसबी बात्यवीयाण्याण्यी ज्यारियों विद्यानि विद्यानि सुरुष्ठे अहं अहं ज्योतिर्वातिकात्रण भी इस संग्रहे सैन्यहर होतीह तरे सेवारी हुन्ती हैं। भारतवर्षम भी श्यायत बार स्वस्थान हुन्य र स्वति सेन्द्र-सेनि विरुक्त एवं सभा की शीर हुन्यमें आपने सिद्धानीनि स्वास्थान बहुत्त कार्तवर विद्यान विया । इस बाहाइका संगालमें न्यूय है स्वास्ट है।

कार्यान माधारण भवतमें पर भी मनुष्यमी उत्तरि करते हैं भी है भाषा माधान मिरा मश्मे हैं, यदि यह उनमें लाभ प्राप्त करने हैं लिए मापा है शिव अध्यापक लीवा ज्यान, जब वे बहुईबा बाम करने हैं, दिनु भाषामें लिसी हुई बाह्यिया है हिराक दिनु भाषामें सीमानेकी भीर भाकपित हुआ। उन्होंने एवः पुराना क्याकर मील है लिया और उस आवाबों वे स्वयं सीहाने ली । उत्तर प्रमुक्त स्ट्रोनमें, जी एक गरीव मालीवर स्ट्रका था, पुक महावाचने एता है, "तुम है दिन भाषाई पुराने प्रोप्त सीम्य है में हो गये हैं "तो उसने उत्तर दिया कि "बाद मनुष्य वेयल वर्णमालक स्वयं सारा सीय है, तो वह जो पुक वाहे सीमा सकता है।" स्थातारक प्रयात साथ पैसी और सुप्तांगोदा धमपूर्वक सदुष्योग कानेने सारे वाम सिक्ष हो जाते हैं।

इस सब उदाहरणींने मान्द्रम दोना है 🎮 संनारमें रेशबोत मनुष्यका ब्रममा सहायक मही है जिनमा उदेश थ निरंतरका परिश्रम है। निर्मन, आकृती और उद्देशरिक समुख्यों है लिये क्योंन्ट्रस सुबील भी दिली सामके सही है। से उन्हें तिरथैत समझकर उन पर ध्यान तक नहीं हैने। पान्नु यह आनकर आश्चर्य दोना है कि यदि दम कार्य और प्रयुक्त करने के श्रूपोर्गोही-की प्रमाही महैच मिलने श्रेष्ट हैं-जाने म र्च और उन्नाम की मी हिनमा बार्व हो सदमा है। बाद गणिनमञ्चन्धा श्रीमारों हे बनाने हा स्थापार करने हच भी हमायुक्तास्य और संप्रिकाका अध्ययन सरमा सर और विदायतिहरू एक हैंगरेजने जर्मन भाग मीत्वा करना था । शांतवान भेजनका आविश्वारकर्नी करी दिल्लाम दिवसे भेजवंदी भीकरी करणा था, रामधी भेदगाला और साफ विचार सीरमा करना था भीर दिवसे जीवनके लिए वसे जिनने समयकी सुद्दी किल्ली की प्रमानि कुछ किया दिखान कर कोयलेकी माहियों पर महियाने स्तिक्त समाज दिया करता था। धाँतुम हैस्तराष्ट्र सर्भावस्थि वर्षि वीहर से। वे दिश्या करता था। धाँतुम हैस्तराष्ट्र सर्भावस्थि वर्षि भी हुन समा कराज होसालको नार्मीका व्यवस्थित वर्षि से। स्ति हुन कर्मोंने बहुत दिसंतिक बैटिया बाके क्लक्रेमें यान एक हरिसाहर स्थाप्ति थी, त्रिपके हात देशका बहुत बड़ा प्रशाह की रहा है इ जी. यान, पार्वजार करके कहे विश्व के व बे मुक्त महाराबड़े वहाँ भीकरी करके प्रशबं साथ मासन चर्च गर्न । नहीं भाने मान्यके बामने



सांकर मिन्द्र सम्बन्धः हुग्गेस्तिने सम्बन्धः होते होते सेतीको सामने बाधन वस नम्म भीर योजनायालका संय क्लिया या । मोकासी, मेरीसा सन् वस जये को समय विकास या वर्षीयं यह जिल्ला सा । मोना ही, जैनितियों के सम्बन्ध केय प्रमा वस्त्रकों किस कर यह स्वाह्मकालिक मारोकी-निक्कों मेरे प्रमान पर्या थी-नगीका किया करती थी । दिख्डि बुर्विटने सुसार्व सामने सम्मा तर्याद बर्गा हुप ३० वर्षीय सामने सामने मेरी सुमानी मेरे सम्मानकित सामने बीनाई।

इस अनुन्योंने नगने बाजोंने को क्षेत्र कराना है वह अपून है। बान्यू है इण क्रमको 🗓 अपनी बादबताका क्ष लगाने के । देवीमानने पर ' राम्पेटर ' (१४१) नामक काके सम्बद्धमार हाथ बगाया सर्व प्रमे वर्तन व्यक्त रमको नेत्र बार किमान क्या, तब दरी बच्छा किसा गया । महुरुपरे बाजी एक पुनाब तार काहर बार किना की, तथ हमें बंगीर प्रभी भीते शिवनम् बच्नी पुलस्य ती सर क्रिकी हेस्सने स्टूम वर्षानस् अपिएम ३६ ब्रिंड दिशासन एउं : वन वर वालन करने क्यों कर बागा वर, तम विचान केनंद किए रचनसाथ काने बारता या, चीर बंद हुआरे और वंद सामा पी स्य गरिनका सन्दर्भ काहे कामा था । एँ० ईम्परसम्ब विद्यासामार रिमानमें करूब वा बंद बाम क बीर लेव बमयमें वा तो का बाने में मा भागन करामा गारि जन वाचकाक काम किया करने के। शामने * इंगी-इस्य हरिन्द्राम १६ वर्षे राथ चरित्रण कर्लड मिन्स वर्र शीमीद्रणस्पूर्ण with bid's the story armys and on first art or the " Th all gift alls at all a re and more it foreign framme if the first years Breath our care on draw man & to be one over or me ?! training all a meaning ages and treat all that \$4 and \$

thing facilities in a control of gauge congress which the above in a control of the control of t



स्यावसम्बन्धाः

जिन्नमाने इसा वनको जो बोडीमी नामदबी होती थी वह भी जाते रही और यह मिजहीन हो गया। कुछ वर्षोतक वही हाल रहा। परनु यह मिदाल, जिनसर हार्ड हमने कट सहब करनेपर भी परावर हटा रहा, धोर पेरी जागानी निरीहर्मोंने थिद होता गया और पथी। बढ़ि वार गो सर्वमाधारने उसे एक वैज्ञानिक निदाल मानक प्रदुष कर दिया।

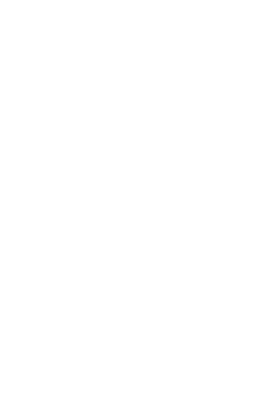
चेचक (शीतला) से वचनेके लिए टीकेंके अनुसंघानको प्रकाशित करने और स्पापित करनेमें बाज्य जैन्सको जिन कठिनाइचीका मामना करना पश था वे भी हार्वेकी कडिनाइपोंने कम न थीं । उनने पहले वहत मनुष्पेने गोपन-शोतला देखी थीं और स्वालाओंडी यह चर्चा मुनी थी कि जो कोई गायके यनकी शीतनामें पीड़िन हो जाता है वह चेचकमें क्या रहना है। इस पानको छोग एक तुच्छ रूप आवकर सर्वधा निर्योक समझने थे और उम नमय तक कोई भी इसकी खोज करना सार्थंड व समसना था जबनक कि संबीगवरा जैनरका ध्यान इसकी ओर न गया । यह युवक उस समय विद्यार्थी था । एक मामीन लडको जपने मालिककी दक्षानपर दवा क्षेत्रे नाई थी । उस समय उसने जो कुछ कहा उसमे जैनरका ध्यान इस और मार्क्सन हुआ । जब चेचकरा नाम लिया गया, तब लक्कीने कहा, " 🛱 इस रोगमे ब्रस्तित नहीं हो सकती, क्योंकि में गोयन-वीतलामे पीदित रह चुकी हैं। " इस बानकी ओर दीनाका ज्यान तरंत ही जाकरित हुआ और वह उसी सम-बसे इस विषयमा अन्येपण करने तथा देलमाल करनेमें रूप गया । शब इसने अपने मित्रोंसे गोधन-शतिनाके रोगनासक गुणींके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किये तब ये उत्पक्त उपराम करने सत्तो और उमको अपने समा-क्रमें निकाल देनेका भय दिन्याने लगे । सीभागवता जैनर लड़नमें जान हराके गर्ने विशाध्ययन करने लगा । एक दिन जब उसने उनके सामने अपने विज्ञार प्रकट किये तम जान हटरने बोध्यनावर्ण उत्तर दिया कि " कपल विचार है। ते करें।, चेशा करें।, चीरज रक्तो और वार्सकोम टीक काम करें। " हम सम्मतिमं तैनरको ठाउम वैधा और हमस उसके राथमें विशिध्यक स्रोत करनेकी सभी कला आगर्ड । इसक बाद वर घया करने और इस विपयमें तिरीक्षण आहे अनुभव करनेही इच्छाये अपने घर चला आधा । इस कामको वह स्मानर बीम वर्ष तक कम्बा रहा । उसको अपने अनुमधान पर ऐसा

साधनींकी सहायता और सुयोग ।

विभास या कि उसने स्वयं अपने विचार एक पुस्तकमें प्रकाशित किये और उसमें उन तेईस मनुष्यांको सफलतापूर्यंक टीका लगानेका हाल लिया, जिनको फिर किमी विधिसे चेचकका रोगी यनाना असंभव था। उसकी यह पुस्तक सन् १७७८ हुँ० में प्रकाशित हुई।

मधम तो इस अनुसन्धानको और प्यान ही न दिया गया और फिर इसका ब्रष्टपूर्वक विरोध किया गया । डाक्टर र्जनर टीका लगानेकी विधि और उसके परिणाम शाक्टरोंको दिखानेके लिए लंडन गये; परन्तु वे एक भी ठाक्ट-बको उस विषयकी परीक्षा करनेके लिए उत्साहित न कर सके और ध्यर्थ ही सीत सासतक प्रतीक्षा करके अपने घर लौट आये। लोग कहते थे कि वे गोधनमें से रोग उत्पन्न करनेवाली चीजको निकालकर मनुष्योंके शरीरमें प्रयेश-कराके जनको पदा जैसे बनाना चाहते हैं । इससे वे उनके तरह तरहके हास्य-पूर्व विद्य बनाते थे और उनको गालियाँ देते थे । पाइरी लीग टीका लगानेकी रीतातका काम समझते थे। गाँवके लोग तो छाती खेककर कहते थे कि " जिन बचोंको दाँक रूगे हैं उनके मुँह बैरूके मुंहके समान हो जाँपगे और उनके जो फोट निकले हैं ये प्रकट करने हैं कि उन स्थानींसे सींग फुटनेवाले है! उनकी सुरत गायके समान और आवाज साँदके उद्दारनेके समान हो जायगी ! " पान्तु टीकेमे वास्तवमें लाभ होता था, इसलिए धीर विरोध होने-पर भी होंगोंको धीरे धीरे उसपर धदा होने हगी । एक प्राममें एक सज-समें टीटेके कामको आरंभ किया । यहाँ पहले पहल जिन्होंने टीका लगायाया द्वनपर होतोंने पापर फेंडे और बुछ दिनोंनक तो उन्हें घरके बाहर न बिय-हते दिया । दो भमीर दियोंने, जिनका हमें आदरके साथ समरण बरना चाहिए हिम्मन करके अपने बढ़ों हो दीके खनवाचे और इससे और छोगोंने बहुत बुछ इठ छोड़ दिया। बाबदर क्षीत भी भीरे भीरे मान गये और जब टीकेका महत्त्व मात्म ही गया तब कई बाक्टरीने तो जनरके इस अनुसंधानकी अपना ही बतलाना चाहा । परन्यु जैनरकी ही अन्तमें विजय हुई । सर्वसा-धारणने उनका आहा किया और उनके कार्यका प्रतिप्रस्त दिया । ये अपने देशपैके कालमें भी ऐसे ही नग्न रहें, जिनने वे अपनी अपसिद्धिके समय थे। लोगोंने उनसे अनुरोध दिया कि " आप शंहनमें चलकर रहें। वहीं रहकर आप देर साल रपया वार्षिक पैदा कर सर्वेने । " पान्तु बन्हों वे उत्तर दिया





स्यायसम्यन ।

भूगोल-विधायकार समाई समाधि सर रोडेरिक मार्गिसतको कुउ वर्ष दुर रायदे होक सामक मुख्य सिखा जो एक महेपर काम करात था। परला भूगानेवार्तम वह विश्व क्या अब तो होरिक मर्थिनत उपये महे-पर सिले, जारों यह हेटे हैरवादि पकाकर करनी हुउर किया कराता था, तब उसने अपने सामके सरकन्यों बहुत्यानी सूनमं तथा भूगोलियानांकी वाले, बतदाई और उस समाधि के हैं पुरु क्याची मुख्यों के था भूगोलियानांकी वाले अपकार सिस्तेन्दर सामके के हैं पुरु क्याची मुख्यों के था है। जे उपने अपकार सिस्तेन्दर सामके के हुए क्याची मुख्यों के था है। किए हिन्दू में हैं प्रकारिका सामक्ष्य हुमा कि वह दीन महुत्य के था एक निद्मा हैं प्रकारिका सामक्ष्य हुमा कि वह दीन महुत्य के था एक निद्मा हैं प्रकारिका सामक्ष्य हुमा कि कहा कहा है। किए में यह जाकस बम् कतिया हुमा कि अहा स्वावकार वस्तिनांकार्त्त हुमें कही मिक्क जानकार रक्ता का अवका साम के स्वावका स्वावकार के स्वावकार सुका की मीक्क जानकार रक्ता सामके स्वावकार का स्वावकार स्वावकार सुका की मीक्क जानकार रक्ता का या तो स्वावकार का स्वावकार स्वावकार सुका की भी हों बसते भीरोंसि सिक्त में, और बुउ उनके काले सामते अपने परिस्तर्य हुके हिन्ने में । में महाने काले मान्य होंगे स्ववकार के सिता हुक में भीर उनकर उनके सिताकि साम किले में।"

छहा अध्याय । ⇔∞€⇒ कालकार ।

" यदि तुम रिती दृश्ही चीनहो महत्वपूर्ण समन वर प्राप्त वरो, परन्तु बहु ह्युपमें आंतरर महत्वहीन सिद्ध हो, नो और आगे वड़ो, तारीफ नो चेटा बहुतमें हैं, स कि शिद्ध से ।"—आर जस सिननीन ।

''वित्रं पन पनगप प्रतिकश्यमाना ।

प्रश्चामुमानवा न पार वजानन। " = — स पर ।

तिहरू स्थापना परिधा द्वित्र विवा कुछ की नहीं हा सकता।

परि चाह करा बंदास्थक हाम हो चाह और काह कम हा, विवा
दिन परिधा के उससे काल नहीं सिल सकती। एक सुम्हर चित्र सीचने

ै अपर अस्त विकास जाजपर भी उल्प्स पुरुष काम करना नहीं छाडते ।



स्यायसम्बन् ।

हैंग्लंड के वर्षत मांसद शिलाकार भी ऐसी रिवार्तन पैरा हुए हैं जो गिलाविषयक मिनामको उन्नतिके दिन्द विकड़क मामान्य थी। गिनावदी भीर पेकनके रिता हुकाई थे। वैदी एक मत्वापका स्टड्डा था। योनने भीर जोन्स वर्ड्स थे। नार्थिकीट पदीसाव था। जैक्सन दर्जी था। टर्नर नाईका स्टड्डा था।

हन मनुष्यिन सीमात्व कथवा देवने बही; वधीत और परिधासी गीरव ' पाता है। वधारि हमीने कुछने वथ मात किया, तो भी यहाँ उनका एक मात क्षात्र का क्रेक्ट प्रवक्त में बहुँ उनकी मातिक जीवगी बात-संप्रकृत कथा, क्रेक्ट प्रवक्त में बहुँ उनकी मातिक जीवगी बात-संप्रकृत और पुत्र वर्षप्रकृत परिधास करनेते दिवर न रुप्त सक्ता। काम का-नेता मार्गद हैं। उनके लिए मर्चोत्तम क्रम था वा जो वर्ष्ट निव्हा वह तो केवल संपीगाव्या मिल गया । बहुनने शिल्पास अपने काममें मात हमा परंद कारते थे, और अपनी बीजींडे दानींट कंगोंने क्रिकारित करता वर्ष्ट क करने थे। दर्ष्टामातिहोंदी चवनाई प्रेटिक का मायन मात्र करने थे। उनकी गोड रिवा भीर निर्मन होक्त परिधास करना परंद किया। जब मात्रका परं कमानेक लिए विचार देवां हो, पुणा नात्र, तो उनके वरह हि "यब तक वर्ष प्रवाद होनेकी इननी कार्यक गुण्या रस्तेया तक तक में समसना हूँ कि बड स्थित की होनेकी इननी कार्यक गुण्या रस्तेया तक तक में समसना हूँ कि बड

सार जोगुआ रेनाल्ड्सके समान, बाह्कक वृंताकोको थी उद्योगसाफिसें बढ़ी खदा भी उलका विधान या कि बढ़ि हास स्वरक्ते आराजुलाएं दिन सिंक काल करें तो मणकां चाहि जेंगि किछान कराना वहें, उसकी हुन्ह प्रतिमा प्रपारत सीची जा कराजी है। वह स्वयं दिना स्ववादक स्वरक्त करतेवाहा या, और अपने सहवीविगाँकी व्योक्त अपिक स्वरक्त कराज्य करता या। इसका काल वह या कि वह बहुन ही साधारत ओवन करता या। उत्तर बहुन क्यांग्रेस क्यां दला या, तब उसे रिट्से योदी तेरी और तास्तरी आवादकना होते थी। यह बहुन करते आपी ताली अपने काल करते करते करते होते करते करते करते होते होते से स्वरक्त हाम पुत्र कर देना या। शालको बहु स्वर्ण यह जाना या कि उससे उससे तक इससे करते वह स्वरक्त वह से स्वरक्त यह जाना या कि उससे उससे हम्म इस्तर करते या। इससे कभी बहु हमला यह जाना या कि उससे उससे तक इससे उससे करते हम्म करते वह इससे यह जाना या कि उससे



स्यायसम्बन्धाः

खगी, इस कारण वह अभिमानी होकर विशाइने ख्या। वादे ऐसा न हुआ होता, तो यह और श्री बड़ा चित्रकार बनता। उसकी क्वांति यदानि, अस्त्री हो गई थी, तथायि वह अध्ययन, यदान और चेष्टामे श्राप्त न हुई थी।

जब रिपार्ड विज्ञस्त मालक था, नव अपने रिजारे पारे द्वीसारित कर्या है करहाँसे सनुत्यां और प्रमुमंद्रित सार्वेद रुपार्थ कराजा था। उसने पर क्षेत्र कराजा सन्त्र भा था। उसने पर क्षेत्र कराजा सन्त्र भी पार्थ प्रमुमंद्रित आहते कराजे सार्वेद रुपार्थ कराजा था। उसने पर क्षेत्र कराजा सार्वेद आहे कराज कराजा करा



स्यायसम्बन् ।

और कभी कभी असकल होते थे । उन्होंने रंगोंके मरनेमें बहु। परिश्रम किया, परन्यु उनकी उल्लाहित करनेवाला कोई न या । सन् १८७३ में सिम्टर चिमहोस, जो सदामधी जिल्लासालके अधिवास थे, श्वनकीरमें पर्यार । रिश्तिमंदि बामको नेस्पहर और यह जानकर कि उन्होंने त्रित्रवारिकी शिक्षा कियी इसरेसे नहीं किन्तु अपने आप प्राप्त की है-उनकी बहुन आश्रर्य हुआ । उन्होंने यह सोचकर कि व्यदि रविषमीठा काम मेमारको ह दिन्याचा जायगा तो यह स्वर्ध जायगा' दिवसामि कहा कि महागरी प्रदर्शनीके लिए तम युक्त अच्छा चित्र वैचार करी । इचर शुवनकोरके महाराज रविद्यमांकी योग्यनाको जान चक्रे ये, इसलिए उन्होंने इस कामके विद्य राय-बर्माको यथेष्ट आर्थिक सङ्गयना नेना स्त्रीकार कर निया । कई सहीवे परिश्रम करके रवित्रमाने एक चित्र नैयार किया । यह चित्र एक नेर-महिलाका या जो क्यने वालांको कर्मलांके कुलोंक दारमे गूँच रहा थी । वित्रने प्रकारीकी शीकाको दिग्तित कर दिया । उसकी वही मर्शमा हुई और रवियमाँकी हमके उपण्ड्यम प्रदर्शनीकी श्रीरमे एक मुक्तनपुर श्रेट दिया गया । हमसे दसका सम्बाह बड गया-उन्हें दिशाम हो गया है में भी कुछ कर सकता है। हमारी बार उन्होंने एक शामिल-महिलाका चित्र बनाया । यह भी अच्छा बना आर इसके उपलक्ष्यमें भी उन्हें एक बद्दक मिला : इसके बार उन्होंने अपना 'बाइम्लका-मन्ननेन्दर' नामक प्रमिद्ध विश्व बनावा, जो श्रीतींकी बहुत ही प्रमुख्य भाषा और प्रशासक राजनेत्रे उसे अपने किए सरीह दिया । अप बर्ग्सेन पीराणिक क्या बनाना गुरू कर दिया जिनके द्वारा दिग्युमें के पीराfor ere कीर्गाई सामांके कामने वारीयमें दोने की । प्रमी ममय मा दी. माप्यापने उनदा वृक्ष विश्व वर्धाग्र-मेशाको हिम्मलाया । असे देशकर सहा-शाम बर्ग है। प्रवश्च हुए । अस्ति अपन राज्यान्तिक अस्तर पर राधक-सोडी मार्साचन दिया भीर उनका बडा सन्दार दिया । इसी ताद देनदी परिचय समुख्यास भी हो स्या भीर अन्तर्से वे सारनवर्षके अपने समयक सर्वाचम नियक्षा हो गये । आरनको उथक चित्रोंका भनियान है । इस नरह एक साम्यम बलक दिना किसीकी नशायना क बारने भाग ही तिथा एका और विश्वेषम प्रतिक्रम क्षत्र हमात्र मामन एक उलाम प्रशासन सीड त्याः इत्रदा अनुदान दरह वर्षेद वन् वासावाद युग्योगारायाय आहि सनद स्ता विकास समामितायाय समामितायाय

चेंपस नामका संगतराश उद्योग और धेर्यको कार्यसिद्धिका मूलमंत्र समझता था । यह स्पर्व इस मज़की आराधना दरता या और दूसराँको भी इसके अनुसार चलनेकी सम्मति देता था । यह बड़ा दवालु और भेमी पुरुष था, इस कारण अनेक उल्लाही युवक उलके पास सम्मति और सहायता लेनेके हिए जाते थे। एक बार एक रुट्डेने उसके घरका दरवाजा सटलटाया। जीरकी एउपराइट मुनकर वेंक्सकी दासीको क्षेत्र भागया । उसने एटकेको मृत्र धमकाया और पहासे चले वानेके लिए वहा । इतनेमें शोरगुल मुनकर मुक्त हार्य बाहर आगया । उसने देखा कि एक सहका अपने हापमें एक चित्र लिए पदा है और दानी उसपर काल-ताती हो रही है। पूछा, "लड़के, मुसमे क्या काम है ! " उसने उक्त दिया-" में आपके पास इस किए आया हैं कि आर पूरा करक मेरी सिफारिश कर हैं और मुझे शि^{ध्र}विधालयमें चित्र-विधा सीरानेके लिए भारती करा दें। " वेंक्सने लड्केसे कहा--" उफ विद्यालयमें भरती होना महत नहीं है। यह मेरे हायकी बात भी नहीं है। पर तुम्होर हायन जो चित्र है उसे की मुझे दिखलाओ। " चित्रकी अवही तरह देगाका वेशमने बहा-" लड्के, भनी उक्त विद्यालयमें भरती होनेके लिए क्ट्रन समय चाहिए । इस समय घर जाओ और अपनी पाठशालाका अध्यास जारी रक्ती । में समस्ता है तुम इस चित्रको छगभग एक महीनेमें अधिक अरदा बना होगे, उन समय-तैयार ही जानेपर-मुझे यह दिगला जाता।" रुद्दा पर चला गया और उस विश्वके समार करनेमें परिश्वम करने रुगा। पटलंकी भरेशा दूनी मेहबतमें उसने यह थिए सैयार किया और महीनेक भन्तमें वेंदमको जावर दियाया । विद्य पहलेकी अपेक्षा अच्छा या; पान्तु वेंत्रमने उसे फिर हीया दिया और बह दिया कि " और भी परिधम करें, भीर भी भश्याम बहाओं। " पुक सप्ताहके बाद लड्डा किर उसके घर गया । इस बार उसका वित्र बहुत अच्छा था । वृक्तने बदा-" सहके, इसस दी: माहम रण । यदि तु जीवा रहा ती सेमारमें अपना नाम कर जायगा। बेरमर्था भविष्यद्वाची पूर्व उत्तरी। इस रुद्देश बाम मुस्टेरेकी या । यह बरा नामी चित्रकार हुआ।

्रें नयेनुटो सैरिनी मामका एक और प्रमिद्ध विप्रकार हो गया है। उसका जीवनपरित्र कहा ही विकास है। यह केवल विप्रकार ही स सा

स्यायग्रहस्या ।

िम्म पुनार, गंगामास, नक्काम, इसारंत जावनेथे विधास आवनेसामा भंग करण मी था। अगके शिवा बादा बादाव बहुत प्रथम आवने ये मारे इसी बाम सर एक सामते बहुत बिला थे। उसकी समल कुमा भी कि मेरा कर्म मीसूरी बामतेश विश्वन हो जावा । वस्तु बनाई मीहते हुए गई भीत इस कारण उस्तु बन्धा इसारं हाम थी लेखा बहा। इस प्रश्नी किस मैरिकीको क्या स्वाताल कार्य कार्य मीमलेके लिए रून दिया। मिलिकीके सिलामे बार्म प्रमाण बन्दों हाम भीलोके लिए रून दिया। मिलिकीके सिलामे बार्म प्रमाण बन्दों कार्य मीस्तु कार्य मार्म कार्य मार्म कर्म सिलामेको कार्य पा, इस बारण कुमा कार्य कार्यों कार्यों मेरा भीत कर बारों के बिला सारंगे विकास दिया गया। तम इसमें दियों तम इसे एक भीत स्वाताल करना कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

इक काम नार जागरनालय जारार जान कार भार नार नार नार निर्माण की है भी कि वह पेतृती
प्रवास मीर्ग, इस किए देशिकों उपके सीमान्दें भी की कि वह पेतृती
प्रवास मीर्ग, इस किए देशिकों उपके सीमान्दें भी कुछ का पेतृती
देश उसकी पित्र के प्रवास की कार्य कर्म का नार निर्माण की स्थास के साम
देश उसकी पित्र का प्रवास की देशिकों जारित की स्थास के साम देशिक साम देशिक साम की देशिकों की स्थास
पूजा की स्थास की देशिकों कारित की देशिकों के प्रवास देशिकों साम देशिक साम
पूजा की साम बरित्र कि कि प्रवास के दिल की देशिकों की साम
पूजा की मान्द्र कि कि कर देशिकों के साम के साम देशिकों साम
प्रवास की मान्द्र कि कि कर देशिकों के साम
प्रवास की साम साम की दिल कर देशिकों के साम
प्रवास की साम साम की साम की साम
प्रवास की साम की साम की साम
प्रवास की साम की दिला कर साम की साम
प्रवास की की कि कर साम की साम
प्रवास की साम की साम की साम
प्रवास की साम की साम
प्रवास की साम की साम
प्रवास की साम
प्यास की साम
प्रवास की साम
प

संबद्धी बार रोजान उसका बार बानाव हुमा । वार्थकृत पोक्टी उसे सुना-क्या बास स्वत्य कीर बारा बार-देश देखा कार्य गरी बीएन रूप दिसा हुए स्वारी सामी रिक्टिकारिक व्यवसाओं बाहुका कीए उपकी बार्या हुए हैं पहुँचा किस्तर अपने डाइने बाराया बाराय स्वारा तुम्य का बादु व्यवसाय सामे वार्य कर्य भीर सोता, मोटी, पीचर भाटि पर सदये बहुबर बाम बहुता था। मीनेबा, भीर मुन्तासी तथा शीरीमें नववासीका बाम मी यह बहुता था। मी हो बहु हिसी श्राहवी किसी बाममें बहुई बहुता था, तो हो सेक्स बहु तेला दि मिलसमें बहुबर बाम बहुता। इस तहर यह किसी शृताको समानता पहंच बतारोंमें, हिसीबी जिला बन्तीमें भीर दिसीबी जनाहबाद सहसे बाममें बहुता था। बारवहाँ उसके स्वयंतायका ऐसा बोई भी भेग में यह हमारी यह इससीसे काम बहुनेबी हमारा वह स्थान थे।

हीरिजीमें जो जमा और उपना था, उमीके बारम यह हुएवा नियुत्त हीरिजीमें जो जमा और उपना था, उमीके बारम यह हुए मिराना है दिया बरता था। नदर बरा परिसमी था, जुल म कुल वाम निरागत ही दिया बरता था। नदर बराने किए यह हमेशा नियार रहना था। यह कभी बराने में हुआ, राम, अिक्समें मूम निरावर किर क्लोरेसमें गीर काना। धीनम और परिसमें भी यह बसी बराने हिएयाई देता था। वह अपनी बामार्थ माय पोएंपर ही बरानाथा, हमसे अपने साथ बहुतमा नामान कहीं से जा सकना था। अनग्य यह जाई जाता था पर कर्म करने साथ हताना नामान कहीं से जा सकना था। अनग्य यह जाई अपने साथ पर हताना नामान करीं से जा सकना था। अनग्य यह जाई अपने साथ है। यह अधिक बरता, नाहनाय, नाहनाय, और गहना था। उमार्थ अपने हाथमें ही यह अधिक बरता, नाहनाय, नाहनाय, और गहना था। उमार्थ बराई हुई प्रायंक चीजमें जमवी मिनावी एप कर्मी हुई है। उसे देगने ही यह मायूम हो जाता है कि उसमें साथ बरानियी उसीकों है। पूणा करों कि एक मतुप्यने जसका होया—स्वरंत्त बताई हो और हुसने उसी होयें अनुसार रचना वी हो। होतीमें छोटी चीज—क्मार्यहेश पक्सुआ, बरन, सुहर आदि भी-जसके हार्योमें आवर मुन्दर बारिसरीयर मसूना हो जाती थी।

...

इच्छा केहर एक नश्ना तैयार कर लिया । तिश्वात असी सश्ताने बारराने इस छड्डीड फोट्रेची सबस्तापूर्वक चीर शिया । सैनिनीने अनेक उच्छोत्तम सूर्तियाँ बनाई है । उसमैंने यूनानी हुम्झ्डेच

साधनीन अने क उत्तावित मूर्गियो कवाई है। उत्तावित वृत्तानी हुत्यूचे (प्रारत्य) की वीदीकी वृत्ति बहुत है। वश्वित है। वश्वित देशकी कीनेती मूर्गियो उत्तरकी कीर्तिको बहुतनेवार्थ्य है। यह वृत्ति उत्तवे क्योरितके साहर कारतोके नित्य कराई थी।

त्रव उपने गाँगियमधे मूर्निक यहका मन्त्रा भोगका बनाका हाहायाहण्को दिल्लाया त्रव उपहोंदे निवाब कान्त्र का दिया हि हम त्राहमें हैरोंदे बाल ने त्रमध्यव है—डीमेंचे दूननी बारोध नहीं वह तकती। यह सुनका तैरिकंतिको सोग का गया। उपने तण्काक ही गंडका कर विवा कि है हमें क कारोका के क्षण्य माण्य है व बनेता हिन्दू हुने वताकर सी हैंद्रिया। एसे कारोने निहीस होंने निवाद की और को आपको प्याधि देकर यका विवा । एसे कार उपने उपन संग्रेस कहा कर आपको प्याधि देकर यका विवा । एसे कार उपने उपन कर सोग कहा कर कार्य के क्षण्य करने हम कर करारी होंने सुर्वे कर बनाया चार पा । इस मोगके क्षण्य करने हम कर करारी होंने चार्य कार्य कर तम मुर्विक क्षणि कर स्था क्षण्य सार्य हमारी हम चार्य कर स्थाधिक संग्री कराई करा, क्षण्य हमी की स्वार होंगी हम अहम उपने की क्षण्य के क्षण्य कर क्षणा, अप मुर्विक सम्बद्धा सार्यो हम गया।

जिल मिट्टीमें बह मूर्नि इन्हरेगार्थी यो उसके बीचे एक गर्म बनाया ग्राम बा। इस ग्रामें कीनेकी चार्चे उस दी गर्हे और उसका दिवसा सुनारम बाह्य किन्दीर्थ द्वारा मीचकी बीचमें मोनेका बाद बहर दिया गया।

यान माराने के किए सहस्वति सहुत्या हैयन हुन्द्रा का निशा गया था। अहीं में जब मान मनाहै गो ने बह मनने उत्तरमा और हिन्ताय कि हुन्द्रामों मान कार्ना है भीर करवाड कुछ मान कर नाहर हुनी मत्तर भीची मा गहें बैसी ने इसी बाराने करवाड हुनने मानी बस हो गहें भी र सपूर्व में मान से मिन्द्रा स्त्रीतक हैदन का हैयन बीटमा रहा और सामको जनकिय सामा मान, बान्नी करनी और सामित्र करनी सही स्त्रीत स्वाही कर होगा कह

नावा भीर बीमार ही मण हिं उसे कांचे कांचेडी शिद्धि संगीर होने मगी। समये बाचार होच्य इच बामको बीजीडे मुद्दुई बर दिया और भार चान ९८ पाई पर पह रहा। मुठ कोम उसवी चारपाईक आसपास बैठे हुए इस हुःसमें सहानुभूति प्रयत कर रहे थे कि इसी समय एक भीकरने उसके कमरेमें आसर पहा-मद पाम विमाद गया, उसका सुधरना कठिन जान पहता है। पह सुनते ही सिटिबीनो जोत्त आगमा। बीमारीकी परमा म करके यह शुरन्त उठ सदा हुआ और अहाँके पाम चार दिया। बहीं जाकर देगा कि आगके कम हो लांकी पाल पाम पह है।

एक रहीतिके यहाँभे उसने मुर्चा लकहियोंका हेर उठम मैंगाया भीर उसका भागों हांकना हाल कर दिया। भाग फिर प्रधक्त उठी और प्राप्त सार्य लगां। एक्स लगां के से प्राप्त सार्य मानां के लगां। आगकी लगरं में बादा होकर मह लगांवार लकही होंकने लगा। भीर कभी होहेवी एड्में नमा कभी लग्ने चेंतिमें पातुको चलाने लगा। विदान पातु गरू गई। हसी समय एक भयंकर आयात्र हुई और विकित्तिकी भीरां। मानां में एक ज्यालाम हीसि किर गई। दुर्भारामें भटीका हैका। एट गया और एक ज्यालाम हीसि किर गई। दुर्भारामें भटीका हैका। एट गया और पातु बहने हमी भीर में किसी दीहिकर भर्म नहीं। वह देशकर कि पातु उपल चेंगसे नहीं बहनी है सिलनी पातु सहने लगी। यह देशकर कि पातु उपल चेंगसे नहीं और हेगांच्यों भादि-सम्ब उठा लांवा और उनकी उसने महीने हाल दिया! जिदान पातु वर्षेष्ट बेंगसे घटने लगी और पीत्यसकी यह मुन्दर गूर्ति वर्ष माई। पाठांकी चाद होगा कि पैलिमीने भी हसी सरह अपने परके असवाव्यक्षेत्र भट्टीमें होते दिया था।

ज्ञान पर्टिक्सरीन मामका एक और प्रसिद्ध शिल्पकार हो गया है। उसका पिता मिट्टीक साँचे बनाया करता था। वर्डेश्स्मीन बालकपनमें रोती रहता था-उसमें घटते फिरते म बनता था और अपने पिताकी दूजतमें तिन्योंके महारे थेटा रहता था। उसे पुस्तकें पड्नेका तथा चित्र सींचित्रका घटा जीक था। एक दिन चहु कु पुस्तक पड़ रहा था कि पार्टी मिट्ट उसका द्वान वर आया। उसने लड्डेम पुस्तकका नाम आदि पूछनेक पार करता "यह पुस्तक पुरुष्ति पहनेके योग्य नहीं है। में तुरहें एक और पुस्तक देश। "यह पुस्तक पुरुष्ति पहनेके योग्य नहीं है। में तुरहें एक और पुस्तक देश। उस पटा करना।" दूसरे दिन उसने मुक्तिब कवि होसरका एक

स्वावसम्बन् । दुकड़ा खेळर पुक्र नहतर तैयार कर लिया । विदाल असी नहतरमे द्वापटाने उस लड्डीडे पोडेडी वक्ततापूर्वक चीर दिया। सैलिनीने अनेक उपमोत्तम मूर्नियाँ बनाई है। उसमेंने युनानी इन्द्रदेश (जुपिरर) ही चाँदीकी सूर्ति बहुत ही प्रसिद्ध है। पर्नियम देवही काँगेकी मूर्ति भी उमकी कीर्तिको बताबेवाली है। यह सूर्ति उमने क्लीरेंसके ठाइर काश्मोके लिए बनाई थी। जय उथने पर्नियमधी मृतिंद्रा पहला नमुना मोमदा बनाकर वाहुरसा-हवकी दिखलाया सब उन्होंने निश्चय रूपने कर दिवा कि इस नम्नेकी कींसेमें बाज देता असंगद है-कॉसेमें इतनी बारीडी नहीं उठ सकती। यह सनकर सैलिनीको जोश वा गया। उसने तत्काल ही संकश्य कर लिया कि में इसके बनानेका केवल मयरब ही व कर्मगा किन्तु इमे बनाकर श्री होर्देगाः । पहछे उसने मिटीकी मूर्नि नैवार की और उसे कागकी महीसे

देवर पता दिया। इसके बाद उसने उम पर सीय चहुकर उसे शैक बैपा ही बाग दिया श्रीमी मूर्नि बाद कराना चाहता था। इस मीमके करर उसने एक प्रकारिक मिर्ग कराई भीर दिन कर मुर्तिक मेहाँने रहा दिया हमा मीम पिएक पाया भीर मिर्ग्रोक मोनी पर्चीक बीचमंत्र कोला बकतेकी पोछी बागर हो गई। इस मजार उसने मीचा विचार कर किया, अब सुनिक बाहाब मानी हा पाया। जिस सिर्ग्रोम पद सुनि वजनेवाली बी उसके नीचे एक गड़ा बनाचा गया था। इस गर्मेम कीमकी चार्चुमें रहा ही गई भीर उसका पिछा हुआ पर बारा करानी करानी कीमकी स्वाचने बानेक वार्यक हो पर्चा भीर पार्ज गलानेके लिए पहलेहोंने बहुनना हुंगत है बहुत कर लिया गया।

या। इस नाहेंमें बॉनिकी चाएंचे राव हो गई और उनका विषक्त हुमा रस सारित निन्मीं द्वारा मेंकिसी पोक्सी वालेका बार कर दिला गया। यान पाठानेक किए पहलेंसी कहामा हैंग्य हंद्यत इस्त क्रिया गया था। महीसे जब भाग जमाई गई तह उसने हन्ना और दिल्लाण कि बुकानों भाग स्मान है और उसरें दुका जाय जक जया। हमी समय मेंची था। माने मीरे हेंद्र भी बाराने क्या। हमने मानी कम हो गई और चाहुये ह गाव सदी। सीरेंद्री पेटेंद्रिक हैंपन यह हैंग्य सोक्सा हस और आपादी प्रमानित करा। रहा, वस्तु जिननी गाँच चाहिए उनकी नहीं शहुँच सही। यह ऐसा यह पाया और सीमार्ट हो गया कि उमे बारने कार्यक्री मिन्नियं संस्टेट होने स्मार्ट समने कायार होला इस कामको मीक्सीके मुख्य है का दिवा और आप चार-

पन्द्रह पर्पकी अवस्थामें परीवसमीन सरकारी करामवन या रायल प्रेवाहे-मीमें भरती हो गया। यदापि वह औरोंने अधिक मेल-जील रखनेवाला व या, समापि सारे विद्यार्थी उसे जान गये और उससे बडी बडी भाशामें करने रुगे। उनकी भारामें सफल भी जल्दी हुई। पहले ही वर्ष उसे एक चाँदीका पदक मिला और दूसरे वर्ष वह सीनेका पदक प्राप्त करनेके लिए परिश्रम करने लगा । सभी लोगोंका पह विश्वास था कि सुवर्गतदक फ्लेक्समैनकी ही मिलेगा: क्योंकि योग्यना और परिधममें उसमे धड़कर कोई स था। परन्तु इस पार उसे सकलना न हुई, यह पदक ऐसे विद्यार्थीको मिला जियका कि फिर कभी नाम भी म सुन पड़ा । युवा परीश्समीनकी यह अस-पलता उसके लिए उलटी लाभदायक सिद्ध हुई। वर्षोंकि परास्त होनेपर रदर्मकर्यी मनुष्य निराण नहीं होते, उनकी भन्तःशक्तिकी उप्णता चीट साकर भीर भी अधिक जोराये बाहर निकल पड्नी है। उसने अपने रितास बहा कि "महो समय दीजिए। अब मैं ऐसे ऐसे बाम करूँगा कि जिनकी प्रशंसा कर-भेमें स्वयं रायल ऐकांडेभीको अनिमान होगा।" इसके बाद उसने हुना और चीतुना परिधम करना शुरू कर दिया। उसने कोई भी सद्देशीर उठा म रक्षा । चित्र बनानेका काम यह रूमातार करने रूमा और धीरें धीरे उसने बहुत अच्छी उद्यति कर हो। इसी बीचमें उसके पिताकी आर्थिक अयस्या बहुत खराब हो गई। मिट्टीके मांचीके व्यापारसे उसका निर्याद होना कठिन हो गया। पुषा फ्लेंब्सनेन नहीं चाहता या कि में अपने चित्रविद्यांके पारेश्व-मको पुछ कम करूँ; परन्तु उसने हृदयको दह रक्षता और स्वापंत्राण करके भवने भस्यापके समयको कम करके रिताक बाममें सहायता देनो शुरू कर दिया । उसने होमरके काम्पको फेंक दिया और उसके बदले अपने हायसँ क्दी है ही। " मेरे विचाया और मेरे मारे बुदुस्यका घोषण जिस स्थापारसे हो, यह गुरो सुनीसे करना थादिए। इस बातकी विन्ता करनेकी झरुरत वहीं कि यह क्यापार किननी हरूकी दिस्सका है। जैसे बने सैसे दरिद्वताकी पाम म पटकन देना ही मेरा काम है। " ब्यापारके सम्बन्धमें यह शहसर पदी बहा बरता था। बहुत समय तक उसे हुमी तरह अपना समय स्तेना पडा, पान्तु इसमे अमे लाभ भी हुआ। यह स्थिततापूर्वक काम कानेका आही हो गया और उसमें धर्मगुणवी हुद्धि हो गई। इस तरह मदीनिम्रह

स्यायसम्बन्धः ।

थीरसार्ण काय्य छाकर उसे दे दिया । छड़का उसे वड़े चादसे पार्ट जा उसने मन-दी-मन संकरन किया कि मैं भी इन बीरोंडे फिन अंकिन करने यान करेंगा।

जैसी सब युवकोंकी प्रथम चेहायें होती हैं वैसी ही एकैसमीनकी रचनों मी हुई। यब वे एक विकासकों दिखाई गई सा उसने उनसे बड़ी ना मीत सिमोड़ी। यानु फलैससीन हटनेवाला व या; उसमें चेपटे जानम मीते पियों मानु फलैससीन हटनेवाला व या; उसमें चेपटे आपना मीते पीर्य था। उसमें चानी सिही, मीम भीर मिरी सितीन वानोंने अपनी वाल्डिका उपनीत किया। उसके बनावें हुई पुरे तसी मिरी सितीन वानोंने अपनी वाल्डिका उपनीत किया। उसके बनावें हुई पुरे तसे मिरी सितीन वानोंने अपनी वाल्डिका उपनीत किया। उसके बनावें हुई पुरे तसे मिरी सितीन वाल्डिका वाल्डिका प्रथमित किया । उसके बनावें हुई पुरे तसे मिरी सितीन वाल्डिका वाल्ड

पन्द्रह वर्षती अवस्थामें परीवसमैन सरकारी कलागवन या रायल ऐपाई-मीमें भरती हो गया । यद्यपि यह शीरोंसे अधिक मेल-जोल रसनेवाला म था. समापि सारे विधार्थी उसे जान गये और उससे बड़ी बड़ी भारामिं करने लते। उनकी भारायि सफल भी जन्दी हुई। पहले ही पर्य उसे एक चौदीका पदक मिला और दूसरे पर्य यह सोनेका पदक मास करनेके लिए परिधम करने हमा । सभी होनोंक यह विकास था कि मुयर्गपदक फ्लेक्समैनको ही मिलेगा। क्योंकि योग्यना और परिश्रममें उसमें यहकर कोई न था। परन्तु इस बार उसे सफलता व हुई, यह पदक ऐसे विधार्थीको मिला जियका कि फिर कभी नाम भी न सुन पड़ा । पुषा परीक्समैनकी यह अस-फलता उसके लिए उलटी लाभदायक निद्ध हुई। वर्षेकि परास्त होनेपर द्वर्तकारी मन्द्रव निराहा नहीं होते, उनकी भन्तःमनिकी उष्णता घोट खाकर और भी अधिक जोशमें बाहर निकल पहनी है। उसने अपने पितामें कहा कि "मुझे समय दीजिए। अब भें ऐसे ऐसे काम करूँना कि जिनकी प्रशंसा कर-केमें श्वयं रायल ऐकाहेमीको अभिमान होगा।" इसके बाद उसने दना और चीतुना परिधम करना गुरू कर दिया । उसने कोई भी तद्दीर उठा न रश्ची । चित्र बनानेवा बाम यह लगातार करने लगा और धीरें। धीरे उसने बहुत भर्का उत्तति कर की। इसी बीचमें उसके पिताकी आर्थिक भवरया बहुत खाब हो गई। मिहीके सीचोंके व्यापारसे उसका निर्याह होना कठिन हो शया। युवा पर्छवर्गमन नहीं चाहता या कि में अपने चित्रविद्याके पारेश-शकी कुछ कम करूँ। परम्पु उसने हृदयको रह रक्ता और स्वार्थन्याग करके अपने अभ्यासके समयको कम करके पिताके काममें सहायता देती हास कर दिया । उसने होमाके काल्यको पांक दिया और उसके बदले अपने हाधारी वर्ता ह हो। " मेरे विशाका और मेरे सारे बुटुन्यका पोपण शिस ब्यापारसे हो, यह गुरा शुर्वाचे बरना चाहिए, इस बानका चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं 14 पर स्माप र विजना इत्या किस्मवा है। जैसे बने तैसे दरिहताओ ्र ज प्राप्त इना हा मर काम है। स्थापारचे स्वत्यस्थमे यह अक्रमर ्र १८ वरण भा बहुत समय तब इस इसा तरह अपना समय स्रोता .. १ १ सम्बन्धिक लाज जा हुआ वह सम्बन्तापूर्वक काम करनेका र ११ १६ कोर उससे धेरान्यवा बुद्धि हो शह । इस नाह सर्वानिधह

करनेडी कमरण वहले हो उसे कटिन मानून हुई होती। परन्तु अन्तर्ने उसे उममे राज बहुन हुआ।

मीभाग्यमे क्रीक्समैबडे चित्रचातुपढी बात बीजिया बेजपुडके कार्नी तह जा पर्देची। उसे चीनी मिटी और मिट्टीके बर्तनी पर अच्छे अच्छे पियोंके ममने बतानेके लिए प्लेक्समैन जैसे पुरुषकी बड़ी आहि जरुरत थी । उसने इस युवा विश्वकारको अवना सब काम गाँव दिया और यह वही बुशलनायै बसे करने लगा । क्षीवयमैन जैसे युजन कारीमरकी मचरि इस तरहका बाम मुख्य मान्द्रम होना होगा, परन्तु वान्तवमें देश्य भाव नी यह ऐगा न था। मामुला प्याची, मुराहियाँ अथवा हुने ही अन्य छोटे धर्नेनींतर जो विवकार्य किया जाता है इमारी समझमें वही इन स्थातरका सचा बाम करता है। क्योंकि जो वर्तन लोगोंके विनिद्धिक काममें आने हैं, त्यान-पीते उडते-कीने हर समय तिमकी अमरत पहली है, बनके अपरके चित्र लोगों है लिए हम रिचाडी शिक्षांक सापन कर जाने हैं, इतना दी नहीं वरिक अमडी निजी गुवारकी शिक्षामें भी ने नपुम्बन सहायना देनेवाले ही जाने हैं। जिस शिक्स कारकी अपनी उक्तरिकी बहुत नहीं भाकांता है यह कोई आही बहुतीश्रम-साप्य बहुम्लय चाँत बनानेकी भोजा इन छोटी छोटी चौत्रों हो बनाहा अपने देशवादियोंकी अधिक स्वावहारिक मार्स्ट पूर्वेचा सदस्य है। अपनी इन होति-मींने वह भगने गमाम देशवानियों हो पुरुषार शिक्षा दे सहता है, बच कि बही चीजकी तो कोई एंक चनाका लगाए कर बाने तृत्वेश बरपूर्ववर्ती रल केता है जहाँ उसे जनसामान नो हैन और नहीं शहने। वेजपुरके समयके बहले मूरोरमें बानों भीर सिटींड बर्ननीडे बाडार और उसके प्रयक्ति सिप बड़े भड़े होते थे। इसिंग उसने इस तीनी क्षानीने उक्षति बरनेका रह मेक्का कर निया था। असके प्रथ संकारको कार्येस परितार कार्येके निर् क्रियमीयम् त्रितना कर सक्त उत्तना अवन्त हिला । यह वेत्रपृष्टको समर्थ मानपार अनक प्रवारक मिहाक वर्ननेंद नमन नीर नवान बनावर देशा रहा को बर प्राचीन बाग्रों थीर इतिभागंद बारार पर नेवार बरमा था । इसेर सर्वा बहुत्तर अब जी भीत्रण है के गीरमात्र और माहतीय उपके पाटम बनाय हम बारवादार बवारों वापन है। एउपनिवादाओं विवाद वर्गन जिन्हें बार राज्यतिक वारावार्यात क्षेत्र राज्य राज्येत्रप्रवासीक वर्गीते

ारोंक समान, प्राचीन कारीगरीकी नक्छें बना-गा। वहाँ जितने केंगरेज यात्री आने थे, ये सब और जो कुछ काम बनवाना होना या हमीसे उसने होमर काहि बविषोंक प्रत्योंके आधारपर नाये और उन्हें बहुन ही मस्ने दामींदर येखा। गमना १२) रू मिल्ला या। परनु यह केंग्रल रपरोंक और अपनी बनावो उसन बरनेके लिए उसके पिप्रोंचर लोग मुख्य होने एनो और उसके हमी पमय जनके बहुँ यह यह आदिमियोंकी कर-आला 'आदिक प्रसिद्ध पित्र बनाये। यह अपने यर गथा कि हमी समय करोंगर और कर्रांगरी करा-रका करा तिया।

ांम जराने भी पहले पहुंच गई थी, इस बारण जरे ना बाम मिल गया । उसने गाडे मैन्सपीट एकी बाइ-नाई जो पार मिनिस्टांम भाज भी वर्षा सामने साथ नावी बीवियो मिनद्र कर गडी हैं। उस समयक समये हम मार्निने देलकर बहा था " यह छोटा मतुष्य सो !"

रेमीचे सभामदीने कीक्समैनके आनेका हाळ तुना और मैम्मफीत्रकी गांति देगी, तब उन्होंने उसे बहे आएरके त लिया और यह एक मत्यान पुरुष बन गया। यह प्रवा-तिसने सीचे येखनेवालेडी दुकावमे विद्य बनानेका र समार्थासास्यका आचार्य समझा जाने स्था और वादक-रूपन वह शिया गया है रामचे बहकर और बोई हा महरू पन अनव प्रकारके मो कनक प्रकारके के कहन पर विद्यव पास वी

स्याचलञ्चन ।

कठ ऐंडीसी बादिकी बनाई हुई अवभीस वस्तुभीकी म देल से । देनाश

कार नहीं हो सकता जब तक कि यह होम और वंशीरेंस बगरीमें जाहर मा

काय कारता । "

इन सिदाम्मोंकी सभी जानते थे। इनका क्षित्र काके परे प्राप्तिने कहा " सं मेरी इच्छा मामी शिक्पकार होनेकी है। " क्तीने कहा-" भार नामी शिक

कार अचदय बनेंगे और रोमनगर भी जरुत देखेंगे । " पतिने पूछा, = पर

यह क्षेत्र हो सकता है है भेश शी आर्थिक अवस्था इतनी शक्ती बड़ी है।

पंत्रीने बहा, " बाम करी और मिलन्यवी बनी । में इसमे हर तरह गर

बता देनेंड लिए तैयार हूँ । में यह नहीं चाहती-बीई यह भ करे कि एन ज्ञान क्लैक्समैनकी विविविधामें उस्रति न होने दी । = इसके बाद उन दोनी

द्वित धन जमा हो मानेपर रोम जानेदा बदा दिवार कर दिया मी

करिक्तमैनने कहा, " में रोम का मैगा और देवारवादी दिलका मेंगा कि वर्गा पुरुष्त्री दानिक किए नहीं किन्द्र कासके किए होता है। प्यारी एम, सुध में

क्षम ग्रेमी जोडेने अपने माधारण बरसे खेंच वर्ष पैर्च और माधारी बाध व्यनीत कर दिये। परन्तु रोम आनेकी बात उनके सामनेसे कम

कुछ बड़ी भरके लिए भी पूर व हुई । अनका एक पैरा भी आपस्य कावीकी छोत्रकर निर्वेष कर्ष म होता था । अपने संक्रमका प्रमान

दिनीय किक की न किया । शतक वेकारेकीये की उन्होंने सरावता । माँगी, वे अपने धेर्य, परित्रम और संस्कार ही अवश्रीवण रहे । हम बीच

क्टेक्स्स्मन करून ही थोडे किय जनावर क्षेत्र । नदीन करियन क्रिके जि

श्रीतास्त्रास्य वाहिए, वरम्यु उत्यंक वास प्रमना ज्ञान्य स शा कि जित्यारे नीरामास व्यक्ति सह । इस किए उसंद्र काम को ब्रोर्निक्स बनामेंके बाईर हमेंग माने थे, उन्हें ही बनाकर वह अपना निवाद करना था। इस समय भी बा

केंप्रकृषका काम किया करना था, पंताकि वह सम्रहतिका यन वापीराण रे देना मा । सहज वह कि हमकी वान्यमा एडवीरिय बदनी गई और वह सुध कारत और दसराम गाँग्य बाना एया इनकी शालका की रिकार दिन बहुती हाई। बहाद कार उसका पत्रक आहर देशने करा चीर घरन समाप्त

वर्ष व्यवस्थान बाका राज्य बना कर सुका तक सरवी क्रिनीचीय राज्यक्ष रहान को तथा। यह क्ष्मुंबर वह विवासमूचक सम्बाध कार

निराम की कारण मन स्टेर कम्पूर्य हुंबार कि कीने नाकी सामा की साथ कीपन क्रमाह संत सहस्र। है। मुर्ग दिव इक्क्यों बीलावा मार्डिंग कीत प्रतिथम इन्नान कार्नाम । इन उन्नी राशम शब् शिमानो बन्दिन मारा मारे कार कीर लग् बागा गह बन्म बारी बान प्रश्नाती बागा की बाधा है। प्रश्नादी हुए। बागादी कीए काँग्रे की, बाह रीहें। इताबें बालू मान रेख जराजपा काता करने जाता कीन जाएए ही जाए। فيتاطنه وينط عليا ومتطبع بالمامة فدمنا والماء والماء والماء والماء والماء साम ते बरहारा तर क्रम की वारत पासर मामान का भी र हुमारी ते हुमारको है जिस्सा का समास री । बार्च्या जनारे क्षा कामने किल मुहोत्तने कर्ते हेर्नानी कामा के जीत सम मिनारी शिरोबा व्याप्त वाच्ये वाच्ये कराई। व्याप्त व्यापा व कृत प्रश्न वृष्टा व्यापा alle Will unte monie fere verft mit globt fam, biet memb nie

परेस्समैनने बहुत वर्षों यक मुख और शानिन्तूर्यं जीवन स्थाति विधा । इत्तरीं उसकी प्यारी की चक्र वसी, जिलका बने बड्डा दुन्यां दुन्या । इसमें बाद यह और भी कई वर्षे धीता रहा और इस श्रीममें उससे, स्थाति स्वति सर्विक सुन्दर और आवर्ष्क विश्व बनावे ।

महुतसे शिक्षकारोंको अपनामा प्राप्त करनेके पहले अहे वहे कह उतने पड़े हैं जिनसे उनके साइस और सहनजीकतादि गुणोंका पूरा पूरा परिचय मिलता है। मार्टिनको अपने जीवनमें बहुत ही असहा कष्ट सहमे पहें थे। जब यह अपना पहत्ता थहा चित्र नैयार कर रहा था, तब उत्तरा कई बार भूतों भरनेतकही नीवत मा गई थी। कहत हैं कि एक बार असके पास केवल एक रुपया रह गया था । इसे उसने उसकी चमकके कारण रस छोड़ा या । इस दुपवेको लेकर बहु दुक रोशिशकेकी तुकान पर गया शीर एक रोडी मोल लेकर जब वह जाने क्या तब वृक्षानदारने उससे वह रोदी ग्रीम की और वह रचमा उस विश्वकारके निरमें फेंक्कर मारा। इस तरह उस चमकदार रुपयेने उसे अस्टतके क्क घोला दिया-वह सीटा निकला । भूका विश्वकार घर आया और अपने सम्मूचको शाहकर देखने लगा कि उसमें कोई दो चार दिनका खुला सुला रोटीका दुकरा मिछ आय तो मूल कुछ शान्त हो आव: वर तेए कि वह भी म मिखा। मार्टिनमें उत्साहकी बड़ी ही जयकालिनी सक्तिथी। यह अपना काम वैमें ही उद्योगके साथ करता रहा। उसमें काम करते रहने और मनीझा करने रहमेशा बधेष्ट बल या । जब उत्तका यह चित्र बनकर तथार हो तथा और क्षोगोंने उसे देखा, वो उसकी बड़ा ही बीमीब हुई । बीर बीर प्रीय विश्व-कारों के समान उसका जीवन भी नहीं जिल्ला नेता है कि वरिस्वितियाँ बाहे वैसी बुरी हों; परम्यु प्रतिमा, परिकास और उद्योगकी सहायतासे एक र पृष्ट दिन भवदय सन्दरूना होती है । यूकी सनुष्यको बस्तमें सवदय हो स्थानि मिलती है चाई वह देरमे ही जिले।

जब तक तिस्पद्धार स्वय नयने काममे बिला नहीं स्थाना है तब तक परमालवी जनमम जनमा मिला तीर मामन उनकी तिस्पद्धार नहीं बना सहन । उसको भएनी मिला नाप सी हमना चाहिए। स्वतिस्थार विश्व हम नार रा मकता। जब यूगिन लग्न रहनाह यादा शहर पर कनानेकी कामी



यह घट देना काफी है कि आवेजातिका माचीन हृतिहाल जल्याह और पीरालोक उराहरणीले स्थर पढ़ा है। परन्तु अब बढ़ी आपेजानि उल्लाह्मूल हो गई है। कैंगरेक ह्लादि जातिबींस उल्लाहकी साह्य बहुन वही हुई है और वही गुण जनकी उच्चतिका काल है। उल्लाह और साहसकी बसी ही क्ष्मारी दीनताका गुरुब काल है।

अपने उत्पादको बदाते रहना बहुत जरूरी है। सबरियका आधार इसी बात पर है कि इस अच्छे कामोंके करनेदी प्रतिज्ञा करें। उत्पाह मनुष्यकी बड़ी बड़ी मुनीवर्तोंसेंसे निकाल कर ऊपर उठाता है और उद्यतिके मार्गपर पटाना है। मतिमाशाली समुख्यकी अपेशा कलाही अनुष्य नियाना काम कर' सकता है और उसे आधी भी बिराशा शया भवका सामना नहीं करना पहता । किसी काममें सफलता पानेक लिए सुबीम्यताकी उतनी भारतन-कता नहीं है जिननी संकरप वाशिकों है। कोरी काम करनेकी पालिसे ही काम कहीं चरुता, किन्तु उत्त्वाहपूर्वक रुगालार संहयत करनेकी हक्ता भी होगी चाहिए । इच्छा करतेकी शक्ति अनुष्यके चरित्रवस्त्रका केन्द्र है, या गाँ कहिए कि वह मनुष्यका सर्वेश्व है । इसी वाणिले आदमी काम करनेमें शमा रहना है और उसकी हरफ़ चेटामें जान सी आजाती है। सबी माशा उसीपर निर्भेट है-और शीवनको सर्वेशिम बनानेवाकी चीत्र आधा ही है। निरू तिमरं हुन्तारं वाद्यकार तथायान नारायाच्या यात्र भारता हो है। रुप्ताही मतुष्पका दुनियों में कहीं भी ठिवाना नहीं। दिख्की मत्राहाँके वर्षा वर दूसरा मुख्य बढ़ी। याद्रे मनुष्यका, प्रधान तिष्ठक भी वर्षा वाप, धी भी उसे इस वादमे संनोच मिळेगा कि मैंने वयाशक्त प्रयत्न किया। मो मनुष्य धीरम रावकर मुनीवर्गाकी शेलता है, हैमानवारी पर भारूब रहता है, और कठीर दुलमें पहकर भी अपने उच्चीगके बळवर लड़ा रहना है, उमे वैसकर दीन मनुष्योंमें भी जल्लाह और हर्ष वेदा होता है।

परन्तु केवल पूष्ण करते रहता युवस्के स्वरुक्त होरायो बना देश है। इच्छामेंके शीध ही व्यवस्था परिलय करना चाहिए। एक बार हिनी करने कामक रहता करके करते हिना दिवस्थियों हिना है। इस दायना पाहिए। जीवनकी शिक्कांत परिश्चित्योंने कह बीर मेरे बनको हार्योंक बाथ बाद लेता चाहिए, वस्त्रींक क्षेत्र करने करने करने भीर प्रचीती पिता स्वन्ति है। दिया कोर्र काम सिद्ध नहीं को सकता । काम करनेये कामी कुँड के भीड़ता चाहिए । बासाहभीय होनेसे कुछ भी वहीं हो सकता ।

उम्पादपुर्वेक काम विमे विना कोई महायानों काम कहीं हो मक्या ।
महायाकी उपारि मुग्य करके अपनी ह्यामि उपीम करने और कि महुपायें का सामना करनेमें होनी हैं और यह जानकर आध्यों होता है कि बुप्या के सामें तो रेगावेंमें असंभाव भी सामून होती हैं ऐसा करनेमें संभाव हो जाता हैं। लंग आधा स्वयं एक ऐसी चील हैं कि वह संभाव कारोंको प्राथक कर रिलागी है। इसारी एएजामें माद्रा उन कार्मोंको सुचव होती हैं। जिनको हम कर गड़ाने हैं। परन्तु कामर और उन्होंकोन मनुपर्गिके साथ यह चाल नहीं होती। ये हर एक कामने असंभव चाते हैं जिसका मुन्य कारण यही है कि वह काम जनको असंभव मा गाया है। हो आपका एन एका है कि वह काम जनको असंभव मा गाया कि " मेरी प्रवेश एका है कि के जांसका मार्गिक और एक प्रसिद्ध नेनारीन हो जातें।" उसकी यह तीन हया उसकी सफलामें असंस्वा सार्गिक हो यह पुषक एक मुसमिद्ध सेनारित हुआ और अनामें असंस्वा सार्गिक हो गया।

र्पार्में हुए ऐसी पाकि होती है कि उसके द्वार अनुष्य की होता बाहे वहां हो सकता है। एक संन्यानें हुए करना था कि "वैया तुम चाहों पेता ही वर सकता है। एक संन्यानें हुए करना था कि "वैया तुम चाहों पेता ही वस सकते हो, क्योंकि हुएएक हापिया पेतर साथ ऐसा घरिए संघर है कि इस साथ दिक्रमें के हुए होनें की हुए होने हैं। ऐसा कोई नहीं है दिनाकी दूस हुए होने के साथ होने हैं। ऐसा कोई नहीं हम हो नहीं है जो तथा। " बदने हैं कि एक समय एक वहां है एक सम्पायक हमें हम हमाने हमान

" व इंप्सिनार्थस्वर्तिश्वयं सनः

वयम मित्रानियुनं महीरने । ""

इप्लाक्त स्वन्यां विवयमं मत्ताक्षियां मार्च से मित्राल्य हो, पान्य यह हर एक महारीका भनुत्राय है कि मनुष्य मुस्सापुत्र कालीहें चुन्तेमें सर्वात्र हो, पान्य सहारीका भनुत्राय है कि मनुष्य मुस्सापुत्र कालीहें चुन्तेमें सर्वात्र है कि मनुष्य मुस्सापुत्र कालीहें चुन्तेमें सर्वात्र है कि मनुष्य मुस्साप्त मार्च काला है कि मनुष्य मुस्साप्त हों मार्च है सित्य होता वह पूर्व के सम्बन्ध है भी कालीहें काला मनुष्य कर सम्बन्ध है भी कालीहें है। सर्व स्वात्र मुस्साप्त कर सम्बन्ध है कि स्वत्र के स्वत्र काला है कि सम्बन्ध स्वत्र करने के सित्य स्वत्र के तो करने साम करने हैं एक स्वत्र है भी काल स्वत्र काला है कि सम्बन्ध स्वत्र काला है कि सम्बन्ध स्वत्र काला स्वत्र स्वत्र के साम स्वत्र की हमार्च स्वत्र स्वत्र है तो करने साम करने हैं एक स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत

६० वस्तुच्य प्राप्त व्याप्त महत्त्व वस्तर मनवस्त्र व प्राप्तवाच्या जलक्ष्यः
 वातका कीत राक सकत् हाँ

उत्साह और साहस्री

मार बाम बरनेमें स्वतंत्र ही नहीं तथ किमी निश्चित मार्ग पर बैसे घछ सकते हैं। नियम दिम बामके होने यदि सब लोगोंडा यह विधास म होना कि मानुष्य उनका पालन कर सकते हैं और बरते हैं है क्षण क्षम पर हमारा अंतर-बरता वहां बरता है कि हुम्पा स्वतंत्र है। हुम्पा हो एक ऐसी चीन है जिस-पर हमें पूरा अधिकार है और उसकी द्वाम अध्या सार्ग पर चलाता हमारे अपर पूर्वत्या निर्मर है। हमारी आहरें अध्या हमारी हम्पार समारी स्वार्ग हमारी कहीं है दिन्तु हम उनके करने सुरा अधिकार करने क्षाय हमारी हमारा करना है। वहां है किन्तु हम उनके करने सुरा आप सकते हैं और अगर हम उनके क्षाया बरना है कि हम उनके क्षाया सकते हैं। सारा हम उनके क्षाया हमारी बनके हमारी बनके हमारी हमारा करना है जिसके समिया हम उनके क्षाया हमारी बनके हमारी बनके हमारी बनके हमारी बनके हमारी हमारा बनके हमारी हमारा हमारी बनके हम

एक विद्वालंक एक बार एक सब युवनमें यह करा था-"इस व्यवस्य शुमको इर एक बाग विश्वय कर लेली चाहिए; नहीं तो शुम पीठे पहनाशीने कि देने अपने पैरोंने अपने आप क्राहाई। मार्ता । इच्छा एक ऐसी चीज है जो अपन्य सुनामतामें हमारी आइतमें हालिल हो जानी है। इस लिए हरू इच्छा बरता सीत्रों और उस पर आप्त कने नहीं । इस शिविसे अपने अतिक्षित जीवनको विश्वय बनाओं और जिस नगह हया चरनेसे सुन्धी पतियों उड़नी रिक्ता है उस तरह अपने बीयनको हाबोडोल सन होने हो। "

स्यायलस्यन ।

चर्यना इग्यू बानवी गुंधी गहेगी कि तुमने देना संक्रम किया भीर उनके गाया। " निर्ते कुछा बेखक नियास करवा दुनाका जाम है-तह या उनके अपित नार्यना का निर्मे हैं के सुद्दे हुएसा इनिट्योंडी नियन्त्रामने मंत्रि छात री जान, तो वह राजनके समान इतिकास्त होगी भीर दृदि भी अपके साम दुन्दमें कारे कमा वारणी। चानु चिद्द करेंचे काम कानेत्री ए। इन्या दो जान, तो कह समाने समान लानगुषक होगी, और दृद्धि मार्यों कहरिस समान होगी।

" बड़ों चार है बड़ों राह है, " वह लुब प्रथारी और सची बड़ाड़ा है। ही मनुष्य किसी बामके करनेका दर संकार का लेना है, वर् अपनी मिनिः शांब्र क्षणने ही मान नवावाँकी दूर बर देना है, और अपने बामकी पूरा बर बालना है । इस लग्ड कामडे बोल्य हैं, इस बानडा विचार माल करना मापः मील्य बनना है । किनी कामको पूरा करनेका पक्षा इराजा करनेने दी बनुषा वर बाम पुरा किया या सकता है । धार्तुतने अवत्रवकी वप बारेगी प्रतिमा कर भी और उन्होंने यह काम कर ही कामा । स्टुयारी उम सागिते जिसको असमस्याम होनी थी, कहा काने वे कि 'नुव केनल साथी प्रतिगा कर सकते हो ।' के जुरीएके प्रतिद्ध बीरिना रिकिमी और प्रशासित मेरीजिन बनके समान ' नर्यमण ' शहरकी कोर्गामें विकास हंबा चारने थे। 'से क्षीं कर सकता ' भीर ' सर्मनव ' ये देने शहर हैं जिनने के सकते जिनारा बुका करत में । वे जिलाकर कहा करते थे,-" बीलो ! काम करें ! कीशिय करें। " प्रवेश बीचन इम,नानवा प्रन्यक्ष प्रशासन है कि सन्त्य धारी श्रमियोदी प्रमादक्षेत्र प्रश्नां करके करून मुख कर सबना है । हार्य भारतीने शक्ति गुलबको मीक्र श्रमी है । केल्ब प्रवक्ते प्रशाम साने भीर रचांत नमेदी करण है। काण्य सम्भित शीविन्य रामप्रेडी भगनी क्षतिला और प्रयक्तर क्यानने हीं क्या व्यतिमा वा । वे व्यव दिनी परिश्रामें क्ष्मित हान व नव का माध्य किरोप्त हुछ व बहुने व परन्तु हुन्छ गांची and and talk tales anima are animal as mount that di matu se una um es ust a la "si es at est use fu A Res et cer ge eine be fe 'a gua bent ber ber &' sa a competent C fue see cas con es mel!



नाड सारा सहस किया हि बहु बात बुनेहासां आवल अस्त्यानी तिनी अने स्थी है। इस मुख्ये बैलियटनने अपनी अितास बीर दृष्टिमसादा यी-पद देश घर बण्या दिया हि वे बड़े आधी लेनासीत तिनेड असाल पड़ अपने सारानीत और वे देशसादाल को विद्यारित हो आगत्त है। सारानी इस बहने कंपरपालका बनना लगात हहता था कि वे बाने निजासो आपने दल बहने से और नृत्ये कोनोडी बही आगूस होगा था हि उनमें सहस्ती-कार इस्ट्रूट का मंदि हा आर-ब्युडिंड ब्यूडा, लीम, क्या दियों अंधा अपनुष्टा के लेमाया भी उनके बारामें क्या। और बैल्याराने भारी बन्नु सार, बाराना, माहस भीर धीराके हारा में कहानूबी बीटी इनके बारा इस्टा बारा कार हो तथा

जिम मनुष्यम उथ्माद है वह काम करनेकी हमेगा तैथा रहना है भीर

को दुछ करना पाइना है उसे भूरत्य ही निश्चय कर केना है। अब पानी लेडपाईम एस गया 🌃 " तुम शासिका आनेको कव तैयार हो सकते श्री ? " तथ उपने नुरम्य ही जलर हिया, " कल बाम-ब्राफ ही " भीर मन अर्थित्युमें पूछा शया कि " तुम बहावर्त संचार होने है दिए इस देशार होग, " तब उन्होंने इन्ह दिया, " अभी । " अब मगम समाद प्रश्नवर ने बैरामभीको दिला करक शामको बागडीर स्थवं क्याने बायके की, तब परे स्वतारीय सवपरक निरुष्ट निर्देश कावेदी शर्वा : श्रीनपुरमें ग्रीप्रमीने, मानवेस आहमानीने और कहासे शासका नीने विशेष करते व्यर्थन होगा बन्दा । यान्त बाहवा बाने वेरियोंको बळवान होनेका बजी अपना म रैगा बा। यह मुख्य ही बात दिया और हयाब रहत कि वे मोता सरती स्राती बना इक्ष्म कर सक इक्त एक क्ष्मा वाचा किया भीत इक्स दिस्स WE HART SAME AND BUTE SAME WIRE AT A de fa as graft Ben e une Bet enne bred ne bat det bilbatet Bill current and an existence of the second and a series were are seen are a weekly

is at essent referred to mile at

क्षण भी स्वयं न्त्रो देनेसे आपतिको आनेका भीका मिल जाता है। भैते आरिट्-यात्रार्टोको केक्ट हमी वजहमे हरा दिवा कि उन्होंने समयकी कर्र कभी न की ! जब ये अपना समय व्ययं गैंशने लगे तभी मैंने उनको पराहर किया !"

पिउली सदीमें भनेक भैगरेज अफसरीने भारतवर्षमें बड़ा उग्साह भीर साहम दिलाया था। सर चार्ल्स नेपियरमें बहुत माहम और भैकरा था। उन्होंने एक बार केवल दो इजार मैनिकोंने, जिनमें केवल चार सी भेंगरेजी सिराही मे, पेतीम हजार बलवान् और राखधारी बन्दवियोंका मुकावला तिया । यह सचगुच बड़े साहसका काम था, परन्तु नेनियरको अपने जपर भीर अपने शाद्रमियोंपर भरोसा था । बल्हचियों ही मेना बुछ ऊँचे पर थी । नेपियरने उस सेनाके मध्यमाग पर भावमण किया । तीन घेटों तक घोर बुद्ध होता रहा । मेपियरकी छोटी सेनाके हर एक सैनिकने बड़ी दूरवीरता दिलाई: क्योंकि उन सबमें अपने सेनापतिका सा जीवा भरा हुआ था। बल्ह्या बीमगुने होनेपर भी भगा दिये गये ! युव्म ही नहीं किन्दु सभी कामोंने इस तरहके साहस, दब्ता और आप्रदसे कामपावी होती है। कुछ ही अधिक साहम करनेसे बाजी मारी जाती है। योड्न ही और आगे यड्नेसे मोरचा जीत लिया जाता है; पाँच मिनिट तक और धीरता दिखानेसे छड़ा-हमें विजय होती है । चादे तुममें शक्ति कम हो, परन्तु तुम अपने शयकी बराबरी कर सकते ही और उस पर विजय पा सकते हो, यदि तुम अधिक एकाप्रचित हो कर कुछ देर तक और सड्ते चले जाओ। एक किसानके सड़-येने अपने पितासे यह शिकायत की कि "मेरी तलवार छोटी है," पिताने उत्तर दिया कि "एक कदम बड़ कर मारी।" यही बात जीवनके हर कामके विषयमें कही जा सकती है।

वाराग हमीरने विजीहका उदार साहम और रह मेक्स्से ही किया। हिम्मशं नाम पी दि यह बालक जो देवल नामका राजा था—जिसके पास न प्रमाण न मना पी और न राज्य था—नेम वहें कामको कर सकेगा है परन्तु र नाम उद्योग और माहम्यग् रिकाम था। सादम वहीं पीज है। स्माणक मनावार जिल्लान द्वासको अवस्थान मी मिनिशों के स्माणक मनावार जिल्लान द्वासको अवस्थान मी मिनिशों के स्माणका प्रमाणको वहीं नारा नमान समानाक प्राचन अवस्थान सुगलों की

नहीं भारी सेनाके जिल्हा हक्ष्मीपाडकी जसिद्ध कहाईमें खड़ा कर दिया मा र राता टोज्यसम्बद्धा जीवनश्रीत सन्ताह और मादमका विशेष बताहरते है। उन्होंने एक दरिज बार्से जन्म किया था। बचानमें ही अबके गिगड़ा रेशम्म दो गया । उनकी मानाने जनको बहुन बोडी शिका ही । जब रोहर-मान कामका नो में हुए तब वे जिलीकी और बीक्रीकी नजारामें चर्च रिये । बहे दिन बाला करनेके बाद से हिली पहुँचे । भूने प्यामे धर्मगाणार्ने टिक रहे । बूमरे दिन धेना हैंबनेके लिए मगरमें किरने करों । चलते किरने में एक वादगारी युक्तरके पास का निकले । वहाँ में मौकर ही गये । में योजामा दिसाच किमाजका काम जानने ये । यक्नकालीने उसकी परिप्रा भी भी । उस समय कुलारमें की चार आदमिवींकी जमरत भी थी । वहीं रह कर दोहरसमान काश्रपंत्रमक उश्चार को र दूस तरह दोहरसमाने मृत्र समय मक लक्षाद् भेरणार्के वहीं काम किया । श्रीरमारकी मृत्युके काद शूर्यगर्ने क्रमजोर राजा होने करे । शुनार्युने आकर तिलीके नामापर फिर काजा कर फिया । इस बडलांड कुछ महाने बार हुमार्चुंडी सुन्यु दी गई भीर सम्बद्ध अक्षा रिशायमाध्य हुन् । शेष्टरमण भडवरके वही मीकर ही गये । युप् नामय नाए अक्याने देशों अपने एक मुख्य पण्णाका बाम मिनुई दिया। इम बाह्य होत्रमानने अपनी वार्ववभूता और बीत्यमाद्य स्व वरिवय रिया, समाद बद्दार उन्हें सामने बनुन अनक पूर् । अब मी डीडरअण्डी और भी बड़े बड़े बाब मिलन कते ।

महे बार बार्गाएने होहामण्डे पुत्रामार बार्ग बारेंड तिए मेगा।
भी होहामण्डे महामार ही और उन्होंने दिया पर्टे। सब होहामार
भी होहामण्डे महामार ही और उन्होंने दिया पर्टे। सब होहामार
का स्थान बार्ग डारेंडे तिए केरी गरें। हैंग बार्म उन्होंने बार्ग
का महामार बार्ग डारेंडे तिए केरी गरें। हैंग बार्म हैंग। बार्ग अपना महिला की अपना महिला की महामार की स्थान हिला की उन्हों महामार दिया की उन्हों अपना महान दीवार दिया दिया। परित्र हो सम्मार दिया की उन्हों की महामार महिला किया। हम बार्गों हो सम्मार हिला की उन्हों की महामार की किया। हम बार्गोंं। हो बार्गोंं हमार हैंग हम बार्गोंंडे की महिला की बार्गोंं हम बार्गोंं। हो सम्मार हमार की साथ की बार्गोंं हिलायों कि बार्गोंं की हा हो हो। हो सम्मार हमें महामार की बार्गोंं हो सम्मार की बार्गोंं की साथ हो।

राता कर रिया ! अय रोडामणने राज्यभूतिके समायको स्वरात गुरु की । अय तक इसका करोई मरोज्यार स्वरंभ न था । उन्होंने समल राज्यको मुश्लिको नार दाता करोई मरोज्यार स्वरंभ न था । उन्होंने समल राज्यको उन्होंने उन्होंने सम करेर राज्याको अनुमार उसके रिकास कर पाने । किर उन्होंने जनेवारियोंकी करेर राज्याको अनुमार उसके रिकास कर पाने वसून करनेवारे कर्मवारियोंकी सामोज समाय निवस विवा और समाय वसून करनेवारे कर्मवारियोंकी

स्वरात की।

राज बीरवारक जीवनवारित की इसमें कुछ कम रिरोध नहीं है।

राज बीरवारक जीवनवारित की इसमें कुछ कम रिरोध नहीं है।

राज बीरवारक जीवनवारित की इसमें कुछ कम रिरोध नहीं है।

राज की एक निर्धन वाने करते करते की राज महार अववार करती में

राज की हों। यह सब एक निर्धन वारक के सहस्य की उद्योगक वाल

राज को हों। यह सब एक निर्धन वारक के सहस्य की उद्योगक वाल

राज का हों। वाल मां गुनने हैं कि एक बार महार अववार वाल

राज का नहीं वाला। मुनने हैं कि एक बार महार अववार मा या या कि बार

राज का नहीं वाला। मुनने हैं कि एक बार महार अववार मा या या कि बार

राज का नहीं वाला। मुनने हैं कि एक बार महार अववार मा या या कि बार

राज का नहीं वाला। मुनने हैं कि एक बार महार अववार मा या या कि बार

राज का नहीं वाला। मुनने हैं कि एक बार महार अववार मा या या कि बार

राज का नहीं का ना वाला के साम के साम है साम के सा

स्वायसम्बन्धः

यहुरूपियेको इनाममें है थी। सम्माद् कक्ष्यत्वे बालककी इस चतुराई भी पुन्तासतामो देखकर बड़ी अनकता मध्य की और बीरकको भाने पर्र मीकर रान निया। बहु कमा सेक हो बान हो, परनु पर नियद है। वीरक स्वाप्त की सामक्ष्य करा निकास के प्रति की की काममें और विशेष का कथनी हाजिल-कार्याये बादमाहको थोड़े हैं। समस्त्री दिया दिया।

बीरकार्य पुंत-कीमाल भी सील लिया। वे कहूँ बाद पुक्रपर भेते गये भी। बादमार्थ उनके साहक और वीरकारी भूरि यूरि मार्थना हो। सन् १५५५ ऐसपीमें से पुनाममं दलमार्थ पुनास्थ करावेटे लिए और गये। इसी पुत्रमें बीर-बात काम भाये। बादमार्थको उनकी सुन्धुमें जो बीठ जुमा बाद करवायेट है। बीरकार करिया भी कपाड़ी करते से भीर बादमार्थने जनके करियारची पहारी में थी। बादमार्थने उनके एक मार्थार भीर भी। बादमार्थने करावे हुगना बाहते से कि से उनको कसी भारती लॉलॉर्ड सामसेने जुह न

भीर वानोंमें भी जो मुद्रमें भीरक वानिनपूर्व भीर काभरूपण हैं अबेक समुत्रामें है कुछ कम जमाद भीर ताहल नहीं दिल्लावा । विश्व नगद भीर बोहर नहीं दिल्लावा । विश्व नगद भीर बोहर नहीं दिल्लावा । विश्व नगद भीर बोहर करने हैं। वे को प्राप्त करने हैं कि देवाई परिवाद करने हैं कि देवाई के देवाई परिवाद करने हैं कि देवाई परिवाद करने है

उत्सात और साहस ।

। हन्हीं गुणोंके फारण वे सब सरहकी मुसीबर्त सह हेते हैं और किसी तारका भव गरी करते । स्नार अपने काममें उनको सीतका भी सामना करना पटे तो वे बड़ी शुनीये अपनी जान दे देते हैं। येले ही बीर मनुष्योंके हुता ईमाई पर्मका हुनता प्रचार हुआ है। फ्रान्सिस जेवियर ऐसे ही पीर प्राम थे। उनका सम्म एक पृष्टीन वरानमें हुआ था। मुन और शहवाटकी उपा का अपने किया । होगोंने उनकी प्रतिष्ठा भी बहुत भी। पान्त इन्होंने सार मुख और धनपर लात मारी और यह दियाला दिया कि संसा-रमें बहुतमी बात हेमी भी है जिनके मामने प्रतिष्ठा अववा धतकी छठ अमिरियत वहीं और मनुष्यको हिली ही बार्लोको और रुख्य रामना चाहिए । उनके आचार और विचार दोनोंने ही अल्पनसाहन ट्यवनी थी। वे पीर थे, प्रतिरुक्ति पात्र थे और उदार थे। वे कुमरोंकी बात सहजर्म ही मान होने थे, परन्तु ये उत्तवर अपना ममाय भी ठाल सकते थे । वे आयन्त घीर, रदनि-क्षयी और उत्तमाही मनुष्य थे। जब ये पेरिसके विश्वविद्यालयमें दशौगतास्त्रके अध्यापक थे, तब उनकी उम्र बाह्म वर्षकी थी । वहाँ लायोसामे उनकी गहरी मिल्ला हो गई और वे अपने मिल्रको धर्मीपरेश करनेके काममें ायता भी देने छते ।

उमी समय पूर्वतालके सम्राट् जान नृतीयने भारतवर्षमें हैमाई पर्मके त्वार करनेका संकल्प किया । इस कामके लिए बोबाटिशा नामक महा त्याः प्रतिवादा पारमु वे अचानक थीमार पह गये, इस नित्त जो का उनको सींचा शवा था उनके हिए नुसं आहसीकी तलाश की गई और ह बत जिम्झ पुत्र लिये गये । जैविश्वर अपने साथ बहुत घोडा सामान हे नुरत्न हा जिल्ला समस्यो चार दिये और किर वार्तिय सारतवर्षको रा र तय (तत जलाजमं वे वेट थे उसीम तोआ (कबर मान्य) के त क्ष के का मान क्षा के किया मा सामाना क्षा करते जा के . अरथ रहनाये देशा जहरतासे एवं व्यव्यक्त आशा ना राहे प्रस्त ्रा त्रीवर व स्थली थार दशकर थार जनावर बाहर च्युर भारते ज्याचे त्रांच तेत्रः त्याहरे मा ज्यान 32.5+84.8 . 8.4 . 84.4 . . 3.4 , , 4

स्यायलम्यन ।

विनोर्डे मामान इकडा करते ये, और रोगिवॉडी संदा ग्रुपूण करने थे। इसमें महाद उनमें बड़ा प्रेम करने क्यों और उनकी भारत्की दृष्टिमें देखने क्यों।

जब जिरियर सोजा पर्टूच गये, तब उन्हें बहिंड होनोंडी दुर्गी दरा देत इर बहा सोड दुआ। वे सोध्य नास्त्री सहाई बीर सहिनोंसे सितरे हो। में अपने हारणे पूर्व देते तहने में उसे कानों कारे में धीर होनीने सित्त बंध तियेत्व करते थे हि " बार कोण करने बबांडो हमारे पाम प्रदेशे किए भेनिए।" चुछ ही तास्त्री जहाँने बहुतने विकासी हस्ट्री कर किये। उन्हों वे इर रोज क्ष्री माध्यतिकों बाद करते हैं। हम्के साथ ही साथ में सीरियोंडी भी सेचा करते और इतियोंडा कर दूर बतरे में। हमिलींडा हाल सुनने हैं वे उच्छी भाष्यतिकोंडी क्यू रार्ट्य जाते थे। एव बार उन्होंने मतारने मक्टी एक्टनेवालोंडी दुर्दास्थ्य सायावार पाया। क्या में सुत्तर ही जबके पास पहुँच साथ। उन्होंने उन्ह कोरोंडी ईवाई बवाया। उनकी सित्त

उत्सार साहस !

क्ष्मके मतुवासी हो जाते थे। उनके हर्यमें देसा इसामान था कि जो होग करण पुरस्त का साम पूर्व के उनमें भी हवाका सेवार हो जाता था। उनमें देती में उनमें बार्ने मुंबते ये उनमें भी हवाका सेवार हो जाता था।

यह मीपका कि प्रचाका काम पहुत दश है और काम करनेगाले कम के जीभा वहींने महाश और जायानको यह दिये। यहाँ उनको तिहरूह ह जावतर पराण मराका जार जापायका पुरा राज वाहर जाहर भी उन्होंने बहुं वातियां मिलों जो सर्वया नहुं आवाँ बोलती हो। वहाँ जाहर भी उन्होंने बहुं वातियां मिलों जो सर्वया नहुं आवाँ बोलती हो। वहाँ जाहर भी उन्होंने रूर आराजा मारा की भीर लोगोंकी है साई बनामा । वे मूरत, प्याम, अब और रातावाका त्या कर त्या रातावाका क्यार व्याप व्याप व्याप विके स्थितिके बार स्था इस सहन कर होने हैं, एकों में हैं ! निश्चन स्थार व्यक्ते स्थितिक बार स्था कर प्रथम कर हुए या गर्म में यू (रामान ग्रास्ट प्रमुख साम और उसके है फोरकी और जा रहे थे राहोंमें ही उसकी द्यांने आ ह्यामा और उसके

हेरिक बर्मारदेशक स्वामी विवेकानत्वे वीयनमें भी इंग्रहम उलाह भीर साहतक दुर्गन मही होते । क्रान्सिम वेनिव्यक समाब वे भी एक प्रति रित और बनार बाम उठक हुए थे। बनमेर्सदेश प्रम उनके महाक्रम ही उटा कार्त थे। उनकी वृशंबताक्ष्में बड़ा प्रेम था। थे । ए । पास करवेड द्विदिव जनकी भेंद्र स्थानी रामहत्त्व दानहंसले हो गई। उन्हें उन्हें उन्हें स्थानीर्व बान देवी कुछ प्यंत्र आहे कि वे उनके तिल्या हो गये और उन्होंने वेश संबंधमं उनने बहुतमी बात मीती । इस बंबिम स्वामी रामरूम्य परम और भी अबेक रिल्प हो गरे। मन् १८८६ में स्वामीबीका देशाल हो उनके अनेक शिष्योंने संसाहि मुखाको स्थात कर उन्होंके समान ब्युतित इरनेका संकल का लिया। विषेकारन्त्वे भी यही संस्थ श्रीर हु। समय बाद वे स्वान और अस्वयन करने के लिए हिमाराय ार उर्ज शहाम हे निक्यको वहां गये और कुछ समय तक वर्ष कांबरमङः अपन्यन काने रहे । हमके बार वे मात्तको लीटे भीर जरह कि के वरिक धमक प्रवर करने हमा जिल समय है स र १ वर्ष सम्बद्धाः अस्ति । इत्यास्य सम्बद्धाः । इत्यास्य सम्बद्धाः । इत्यास्य सम्बद्धाः । इत्यास्य सम्बद्धाः ।

[्]रवत् को पर्यापनां कर्नामा पर्यक्षमान्त्रको वृक्ष स्मानाः प्रदेश and the state of the state of the state of įįį

त्रमें स्थापी विवेद्यांपरण् अनेतन्द्रार्थं पर्वृत्वे तक इन्हें क्ष्में क्षमें क्षमें समानाम करना प्रा । तो कान्य क्यानीचा अन्ते आक् जायनकी आने हे तह एक राम्नेचे दी क्षत्र को स्वरं भीत इव्यापन् करने चाल निर्माय है हिन्। अमेरीकार्थ मील तक मांतिनी वेदी । एक कुद महिचार्का अवस्थिती मान रेम का क्या हैंभी बार्ड और क्यून क्षांका है। वहि में इन्हरिक्त अनुबाहा बान रीतिको रिभाई को बना अनीरश्योद हाराहर यह शहद कर वस प्रदिमान भागे **पर्द मिनोडा नम्बन का भारे** उस पात्रका स्थापासीको का स्थीना निपान मंत्र राज्याके विवयं सब काम १७३ वर सब और व्यवसीयान रक्ती सार्वनारा Part of a min oppitation absorbes more at 112- and market विकास म रहा । दिन भी स्टाधा वा वा वर्ष कार मुद्र । में जीता क्यांचीपाची विरोतभाषात्रे कर सञ्चलकड पान स समा दलम सब करासीयांचे हिंग सामि शाक्षण कार्ने को तब इस स्थाधा संबंध बोध्यणको रूप कर शारी तसे हैं।स्वी विवाला वर्त । वह अवस्थानाका ध्यानामाके समावति बाक्टर बरावाहे पान है गया और दर्जात क्या कर्ता के बाप करनी सभावे स्वाध प्राची दिन वर्षी मीर्गानी रचनामे प्रथमिकन क्षांत्र का ब्ली सा दिल्हा । यस क्सांनी मान वेशान्त पूर्ण र को सभाय भाग भागमान दिन गम तो लाघरेत्रोधी कों। वशेसा हुई धीर कुमरे ही दिन समाचारकारेहारा इनकी नवाच अमेरिकाई चन मिराने कुमरे गिरे मन पहुँच गई । पांधमी पुनिवान एक १०१० व्यामीतीहा बीम्पणाची श्रीकार कर दिना। ' न्यूपार्ट हैरना' नामक अने रिन्ना है " धर्म-मानाम क्याम विकास मि.मेर्ड सक्ये वह वह है। दस सामपानों है सन कर प्रमारी बह कवान शाना है कि नारन क्यमें बना का निरान मनकर भीत्र हे हेमाई प्रमीपरशकाका अजना बिरा स्वांत र शामामा वाम समीरकाक मनक नगरीय नमकात्रक नाथ । व - गिकार सरके क्राधा राज समाहकार्क मनक न्यानीय लक्षण करक शेरफ (mr. 18 ही सहस्त्रीत स्वाच्नान हत्त चाराका दवका वहत वर्डेच क्ता र र मा व वेत्रक प्रभाग नाम करने करा । Beig uld etinit antignid iffe in an ही क्यांन हुई। ही माम नई . . उपविषयी

44

उत्साह और साहस ।

रिहान अंगरेज स्वामीजीके शिष्य हो गये और उन्होंने सामीजीको धेरिक

सन् १८९६ के अन्तमं रचामीजी भारतवर्षकी छीट आये । यहाँ आ कर सामीतिने कई स्थानीय आहम बनाये और आस्त्रवासियोंको धीर्क धर्मके धमंके प्रचार करनेमं पड़ी महायता दी। प्रचारकी आयुव्यकता समझाहै। हस देवके नियंत्र और दुरिया छोगोंके कर म जारका ज्यानवन्त्रात ज्यासमितिक बहु बहु कोशियां की १ व्यन्त हथना श्राप्तिक क्षाम करतेमे हमसीतीका स्वास्त्व (तल्डुस्ती) विगड्ने छता । हास्टाने जनको परदेश जानेकी सलाह दी, हम लिए वे द्वित है एंड व गये। वहाँ उनका जनका नव्यत मुखर गया । हमके बाद वे अमेरिका बक्रे गये । बहुँ। वर्षुन्तुः स्थारच्य मध्य त्रमान भारत । भूषे भूषे भीर खेदान्त सोसायदी सामक हो संस्थाय सर दल्होंने पर जप्पा बाम्पाना का सेनोकेस्सितको नगरम सीमहर हैं और खुव काम कर स्वापित की जो अब तक सेनोकेस्सितको नगरम सीमहर हैं और खुव काम कर

। हैं कि

ुर्वा समय फान्सकी राजपानी विरिक्ष नगरमें एक धर्मसमा होनेपाली उसा लभय आल्यका राजयाना पारल नगरन कृत पनला हानपाल भी । सामीजीको इस समाने निमन्त्रम क्षेत्रा, आराप्य स्वासीजीको इस समाने उन्होंने हिन्दुदर्गनशालपा स्वास्थान विरिम गर्पे और यहाँपर भी उन्होंने हिन्दुदर्गनशालपा नात पत्र जार पराम मा उत्थान किर विगरते हता और वे भारत स्वि । हमी बीचम स्थामीजीका स्वास्त्य किर विगरते हता और वे भारत हित्रे होट आतु । वस्त्रे उपको अतु स्वस्त्रिका हेपया शताह स रत्ता रहेला नामण रतालामण रतास्त्रेत स्था न्याहेन स्था शताह स विश्वना अपने महान वार्यका था । उन्होंने कार्याम एक विशाहय स्पा भागा जनम नहार नगणा ना । जनमा नगमा प्राप्त होती है हिन ह प्रचार करने के हिण उन्होंने अनेक सांधुमों को इचका किया और उनके नेके रिए एक गर बनवा दिया। स्वामीती अनेक भारतीय पुरागीको शासकी शिक्षा ध्यपे हेने थे। इसी समय जापानियोंने स्थामीतीय प्रस्कृत क्षिण बहुत बुट आमह हिया। परन स्थामीती उनके साथ मर । उस समय उनवा श्वास्य यहुन स्ताय हो रहा या । परनी स्मार्थातीन अपने उद्देशकों न छोडा और वे आस्त्रपूर्वत जी नी वर्ष मा समय अपने शिष्टी शिक्षा देनमें ्य पहुंच प्राथमका यह परिणाम हुआ वि उनका काह क्षार्थित अह सन् १००० हमर्थिस उनका स्मर्गवास है। अवाध्याती और उथ्याति अनुष्य समारम विग्लं ही

44.4mil-44 l

भन भ्यानी विकेशमञ्जू समेरिकार्त रहेने तक राई कह तन हर्गना वास्ता कर मेर हे के व्यापन के व्यापन के वार्त होता है। जा कर के वार्त के वार्त के वार्त के वार्त के वार्त के वार्त के राज्येन की जान की राया और इन्हेंग्य राज जाने विवर्त के दिना जाने रिवर भीत्व क्ष भीत्त्वी करह । एक हुन सहिलाको व्यवसामानी स्वत्व हेन्द्र बह की हैनी बार बोर रमने भोगर कि गरि में इन्तरिंगक अनुभारो अपने प्रिमीनो रिना में पर पता अनार्रकाल क्रमा वस अरुप कर तम आहता अने कर मिनारे पर वाचन का आरे एक वाचनके क्यांगीजीका जा न्यीना विमार अन राज्यक किए अब धारा दूबर वर सन और स्मानंत्रान पूजन सार्वातान विना कर ने काल क्याची होती योजनाया सुन्य की लग्ने-- एनके सामानी fraint a eyr i fine ar setur tras ant mye nif i b aire seturintal वर्षानवाबाद एक बन्यापकड शक क तथ। इन्तर एक व्याधीतरे दिश्-वर्षान शाबार कार्य का कब बाव व्याधाना की बीव्याना की एवं बार पानी माते ही निर्दे रवाना वरा । वस क्वाना त्रांका व्यानानां व्यानानां व्यानावां व्यानावां व्याना गया भीर रम्पनि वया क्योन्ड वाच क्यनी वजान स्वाधंत्रीको दिए धर्में मनिविधिकार्य वावन्तिक ब्रोवेच्छ स्थीन्य दिखा । अब ब्यामीया व नेपाल्य पूर्वन मा सभाग भारत ब्लाम्याल दिव तव वा स्वामायकि वदा ग्रांगर यह भीर दूसरे हा दिन समाचारकां हार इनका न्यान अवेरिकार एक निरंगे दूसरे मिरे सक बहुन गई। पांत्रवा पृत्तिवात कवा स्ववते स्वाधीतीया बोल्याकी effure ur foat : oguth ftere ' mure was funt fu " ant-मधार्थ स्वामी विषयान् मि नश्य नका वह वह है। प्रनव स्थान्यानीकी मुख का इसकी बण लवाज बाना है कि आत्मनर्पनें तथी मेर्न वंद्राम सनूत्व मी तुन दे हुंगाई अमेंग्वेश्वा कोचेर जेवला दिश्व मुर्चना है। " इसके बार क्यामात्राढ वान अमेरिकाक कारण बतारेने निर्माणनाथ आहे । प्रन्ते वरीहार करके वशामानाने समेरिकाके वानेक स्थानीम असल करक वितिक वामेपर वहें ही सहस्तपूर्व स्थानमान दिये । कोगोंको उनकी मान गपुन पर्यन आई भीर वे विरिक्त प्रारंख प्रथा करने करें ।

हुन के बाद स्थापित्री क्रमारकार है जोड़ जो राज वहाँ की उनका है मी हुन क्यांत हुन । तो श्रास तक उन्होंने वह चीर रच नेपरशित जनेक समाप्त-साचा व्याक्तमान दिया। हुन स्थान्यातीका संस्थान वह उन्हां के मेरेक

जत्साह सीर साहस ।

विद्राम् अंगरेत स्वामीतीके शिष्य हो गये और उन्होंने हमामीतीको वेरिक

मान्यार करानान पुरुष प्रशासका था। सन् १८९६ के अन्तर्म स्वामीजी भारतवर्षकी होट आये। यहाँ आ कर ह्यानीति कई स्थानीयर आसम बनावे और आस्तवासियोंको वैद्रिक पर्मक धर्मके प्रचार करनेमं पदी महायता दी। स्वारकी आवर्षकता समसाह । हस देशके क्षियंत्र और दुरिया होगाँके कह बेर हर्समु हिले ह्याभीयाम् बहे बहे श्रीयमा के । वस्ये हथ्या सात्रः भी कराने स्वामीतीया स्वास्ट्य (शन्दुरस्ती) विवाहने स्वा । हास्टाने साम सत्तमे स्वामीतीया स्वास्ट्य (शन्दुरस्ती) अनको परदेग जानेकी सहाह की, हम हिन्दू हे किर कूलंड गर्य । वहाँ उदस न्त्रमार बहुत मुखर तथा। इसके बाद वे अमेरिका बढ़े गये। बहु पहुँच स्यायस महत ज्ञार भवा । इनक बाद म भवापका अस्य हो संस्थाप पर कर्पार वाराज्यालय जार प्रवास राज्यावश जाराव है। स्टबाम कर स्वापित की जो अब तक मैनकेन्सितको नगरम मौजूर है कीर सूच काम कर इसी समय क्राम्मकी राजधानी देरिस नगार्मे एक धर्मसमा होनेपाली भी । स्तामीजीको हम समाने निमन्त्रन भेजा, कतपुर्व स्तामीजी मा । त्यालाका मेंत्र अधी उन्ह्युंचे हिन्देर्ग्यसास्त्रं स्वाल्वाच् नारण वर्ष करण करण करण किर विगड़ने हमा और वे भारत दिये। हमी वीचम समितिका स्वास्थ्य किर विगड़ने हमा और वे भारत रही हैं । वर्त्र हुंद्र आप । तस्य उपका सम्ब स्वस्त्रका हेपम शंताह व भवत । प्राप्त महान हार्यहा सा । उन्होंने कार्तीम एक विद्यालय स्पर्त जिनमा क्ष्यने महान हार्यहा सा । उन्होंने कार्तीम एक विद्यालय स्पर् क्षित और दीन हुता होगाई हिए एक शास्त्र वन्तामा ! प्रेट्रिक ह स्वार बार होत है ज उन्होंने सदेह सातेमोडी हेंडश हिया और उसह वेडे हिल् एक मह बनवा दिया। स्थामीजी अनेक आस्तीय पुपर्कीकी दास्की तिथा स्पर्व हेते थे। हमी समय जातात्रियोते सामोजीय बारनेक हिए बहुत हुए आपड़ हिया। परण हमासीती उनके साय महे । उस समय उनका श्वासय बहुत स्ताव हो रहा था । पान् पर क्षेत्रकों ने होराकों न होता और वे मारतवर्षमें जी तो कार रा उनका बहुन या समय अपने (तायाँको तिया देनम हम पर् परिवास वह परिवास हुआ हि उनका स्वाह क्षा सन १९०२ हमतील उनका हार्गणाम ही . अप्राथ्यारः और उच्चारः प्रमुख समारमे दिएक हैं।

stace faffen remar stree als more politica & 1 und proffee frein verm einemme a nie amit gig die freint fan uften be-उनके प्रेमीय कोई ती क्षेत्रक व का अध्यासमा रहें।" वही एक समानि वी भी रन्दिन क्ये क्यों किए तादी ही । अब विशिवस्थ वृद्ध क्यें हैं। यह व एक बहेड प्रावर्त वीका हा तब । तहने हुआंक केवनमेंने हैं। प्रभानि ला व्याप्तरंभ शास के विना और इसके द्वार कई वर्गी तक रागके : मान एवं स्टूबर्न देखिन सामा बोन्हों। व बन्हें हमी हिमाने बाम करने त्रता क्षेत्र कराव कार्या वर्षा करता व वोट वहा कार्य है। तिकादी क्योंकी हुए भर समाप पासप राम कर के बार उत्तर कर थे। समाप्त बान कोड शकती ती, तरानु है दिसी व विसी ताह जाने सामकी पर्नेको मोट बनाने हा क्या थे । वैद्रोध बदशा तीम केनंतर मणका स्थाप ना-स्थारना नार भावांक हुमा । हुम ब्राप्तक किए प्रमूपि कुछ निर्मिणा भी बाला और क्यानान्य करणा और क्याना । व वर्गमें कुछ वारिने गीमरी बार व बाँद कुछ महाने कानियाय कर कर निकास्तान करने थे । वे बीजरीने मी दश रागर कमले यह बहन क्रियानम वर्ण कर हाधार वे और यसमें इस रचन ना वह कर के। यह यह हमीन नापकानके ही दिया और सभा केशान एक केश्यों जा नवायना न जा । कानित्रची गरीका सम सा-नैके बार ने क्षेत्रन विशानके लोकाचीको बोध्ये गानिका गये । वे स्वर्थ माने सामेद धीन कामा कारत ये, परता नहींपर पाद हो दश था हम विश व ता कक । माजिकार्थ बाक्त प्रकृति बहुतन्त बाम रशासनामुक्ति वर्गते सर्थम को किन । किन क्यात्रमें न नहींकका नज नरे न नद का दान सार Manuel aus : aufa vern faunt at au un gut fiet un Tr un treft am der gerit namide ton tie at Jer dit ber A "As we see was her as but as set

अकुस्तानां के नेपानिक हुन्नी हुन्दुन्तिहुन्तिक शिवन ना अधिक विवाद स्वाद हुन्दुन्ति हन्दुन्ति हन्दुन्नि हन्दुन्ति हन्दुन्नि हन्दुन्ति हन्दुन्नि हन्दुन्ति हन्द



कान्नका मोध्य यहाँ तक बहा कि अंतर्ने राजामीहतरायको अपने पिनाका घर छोड़ देना पड़ा शांकिह वर्षकी व्यवस्थामं व्यव हमारे देखाँव शास्त्र अस्तर नम्मय संकल्दन और स्त्रीनित्तरं हुँच निकाक देते हैं, हाममीहरायका एक ऐसे विचारके किए, तिसको वे सत्य समझते थे, ठोडनिन्दा सहया और अपने विगाका कोषभावन वन कर बंदमें निकळ जाना साधारण हर्दाका बाहा मांगा।

धर छोड़ कर उन्होंने भारतक्ष्मेंक मनेक महेतीमें बाता की और किर बीत धर्मका अध्यक्त करनेके किए एंडकल पहुँचे। तिरुक्तमें भी उन्होंने का मेरे मनको हरगेलें हो कर मक्र दिखा। कामानीकेंद्र महागार उत्तर का मेरे भाषा और एक बार वे उनको बार काकनेके किए तैयार हैं। गयं। यस्त्र किर भी राममोहनदाय करने हिम्मानमें तरिक भी विचलित न हुए। हुए महार बार्स वंद्र कर होतार करके वे वरायेस की?

हुननेशर भी उनकी धर्म-रिरामा नहीं सिंधी । इसकिए उनहोंने रहिर्मामं क्षार वह इंसार्ट-पार्वेक ताबीको जाननेश सकार वह किया । उस समय जनहों अस्ताम १२ मक्कि है गो है थी । इसी बन्दास्य नेष्ट्रामें जोतीने पहचा भारंत वह दिया। अनेक समुध्याय होनेशर भी उनहीं केतरतीय वह ऐसा सम्प्रा हान बाह्य कर किया कि केतरेक भी उनहीं केतरतीयों-को प्रांत्राम वहने को केतरीयों शुरू कर उनहोंने साहित्य केत पुरा हुन्य होने भी उनके सनको सान्ति न मिन्धी । इस किए उनहोंने हिंदू भारत, जिनमें साहित्य द्वारत वहने कित की स्तार्थ की उनकी साम्यमं बाह्यिक दही।

कुछ समय बाद उनक विवाहत रहान्य ता गया। इस विका सुरम्मीका सार सरसारकारवा भा पड़ाः व रागुः के अन्तरां इसे सामान को गाँवे सीर करता स्वारण मान स्वार्थ के अन्यरां दिवसा साहब कह पृथ्वाद्वि स्वर्ध १ इस्स दहा स्थानाका आग स्थान थ है। काल बाद रासवाहन-राव के दो हों आह्वादा आग स्थान थ है। काल बाद रासवाहन-राव के दो हों आह्वादा आग स्वारण स्वारण सामान हों सामा इस्साण पाम कर्माद्व साहबा अस्ति हो। इसिंग स्थानवाह सामा सा स्तरे बरे कोन उनकी निका, वृद्धि भीर शतके कारण उनका आहर हती। रेहतीके बादगाहने उनकी राजाकी उपाधिन विस्थित किया । क्षाद राजा राममोहबराय कुँखेन्द्र और क्ष्मम गर्ने । यहाँके राजासीने भी ह अन्ते घर पुताबर उनका बड़ा सन्नान हिमा। अंत्रमें राजा रामनोहन-रहे अनेक प्रतिष प्रतिष महत्य अनुवादी हो रावे।

आठवाँ अध्याय।

कार्यक्रशल मलुन्य। त हिना हि बहरूरहिना प्रमीदति । "-कालेदास।

र क्या ए तम महामुकी देशात है जो क्याना काम मेहनतके साथ कर रही देर पर राज में हे पहीं सम्मन पारेगा । अ-पुरेमानहीं बहारते।

दहराव ता व वहां मूरा करते हैं जो कहते हैं कि अध्यानती होता विकास मिल्लुम बड़ी मूरा करते हैं जो कहते हैं कि अध्यानती होता विकास मिल्लुम बड़ी मूरा करते हैं जो कहते हैं। उबका हाम बड़ी है कि एक नियम आरोप कभी व हरें, अवांत सकीके फड़ीर हते हैं और अपने हात्क बहुतको अपने आग बहुते हैं। के हाँ, यह सब है हत १६ मार अपेड विक्तवरणा साहित्यमेवी और नीतिल संकीर्ग विचारके का अपना कर कर कर कर कर कर कर के के का स्वासी हैं। कि के कि की स्वासी हैं होने हैं उस नाह कर कर कर कारती औं होने हैं, का जुड़ होने की स्वासी हैं हात है जा कर कर किया बाद और विकाय है और जो यह यह कार्योंके

्रमार्थे अप व कार्यक्ष स्वयंत्रेष्ठ ग्रेग्य अस्त्यंत्रे एक स्याम ना HETTE LINES THE F

्राप्त करणाहरण । स्वत्र के स्वत्र के स्वत्र स्व स्वत्र स्वत् काल कर नके जनम वन्त्रम सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मातिक सम्मात The second secon The state of the s e à ्राहरू र प्राप्त कराहरू समेन्द्र के में स्वर्ण स्वरूप र प्राप्त कराहरू _ * '

व्यासार । वस्त्री मन विचार करो कि सब स्थानाएमें इनके श्लीफी आवश्यकार होती है। तप रमधे सेदीर्गता बनी रही ? निपूच ब्यापारी समूच्य प्रश्नान कवियों के समाम रुपान्त होते हैं । अन्य सी यह है कि स्थापत जानुसीकी बानुसी बनाता है है मूर्ण पर समझने हैं कि परिजाशाची अनुन्य, स्थापाई समीत्य होते हैं भीर जारार अनुष्यको जानसिक बाजीके बबोज्य बना रेता है। सालु वह प्रशी पर्या तुम है। पुन्न वर्ष हुए वृक्त तबुम्बने हुम निवे आगाहमा वर भी नि क्य था भी पढ़ा बिल्सा आदमी, परम्य बन्धारीका वैत्रा करना था। यह बान रिफ्र-बानी है कि बसका भागता प्रशासिकी ही बेहना शबेडे भी योग्य ने मी ह न्याचार अनुष्यको बीच नहीं बमाना; किन्यु अनुष्य स्वागारकी बीच बना हैगाँ। है। हातव काचार-- काहे हायने किया ताच बाहे मन हारा-केंद्र है।

यदि इनम ईमायसाधिक वाल कात हो जक्रमा हो। व्यासाधि पाते हाय वि ही बार्य, बाल्न हरूव तो परिवा रहता है । हज्यका तक दलवी सारीपात कारतामा नहीं होता वितास चारियका सम दीला है स्व्वपूर्वता मुख्यी अपेक्षा और पात्र संस्की अपेक्षा करी जिलामा स्थितमा मैटा करने हैं। अव्यासामांत को करें वर्षमीची नूर्निये कम स्वते हुए भी अपने निर्मारी प्रेंश हंगालवारिक साथ नेहरून बरवेने चुना नहीं की है । बहुएना वीलीये.

सामाम--क्रिक्ट श्रीकव कारको हमरी वार क्याचा गा-और गीमाप्र हार्परिटीय नवी जातरी व । शहरतानुष्ये- को कची शुद्रमातीचे मारक रचना बड़ा क्रमा है। लागे इतिनको साथका वर्ष राजीर के पेर क्षा काराया न्या इंग्लाइक वर्रश्रीत्रशास्त्रीय इत्त्वाशायायाय वस्त्रस्त्रात्री हे वर्षेत्री water & alleg fraction report arrives since any major of the and I a - a may come a not a more a pressure religible Menda, a marketin am a large man garant garant fil

proportion and the second of the second seco and a mast of the water of N and writing the first of the constraints



लंकी। वासीनों कुछ भी बाया व बहुँचाई। ब्याहीने 'अस्सीएव मधा साध्य' »
नाम यु नशनी त्रमण निर्माने हमानी कुछी वाही हुई। इस मुल्यहैं बन्धामात्रका में दिश्या कर दिलाईचींके कहा का मुक्कावा। कुछ सम्मान पर अन्तर क्याल्यहोत्तरह कुछ तुम्म के विद्यादी दिन्दी दिलाई पर्यात्र के पाने व व्यवद्यात्र क्याल्यहोत्तरह कुछ तुम्म के विद्यादी दिन्दी दिलाई प्रमुख्य करून परंद वाई व क्याल की की स्माने के पित्रों के स्मानी सीर अन्तर मा व कुं, युक्त गुम्मीतिक सी बहुत क्याले के क्याली विद्यान ताव काण क स्मान के, युक्त गुम्मीतिक सी बहुत क्याले के क्याली विद्यान ताव काण क स्मान के, युक्त गुम्मीतिक सी क्याल के वासी हिन्दी देने अन्यात्र कर सामानिक सी भीत स्मान्यह व वासी व्यवद्यात्र के वासी हिन्दी कर्ष अन्यात्र कर सी क्याल यह वे सादिय-स्मानक युक्त वासा काणा

नामान नामान विश्वन विश्वन नाशामाच महेनाच्यानि भाषे क्याता त. इ कामा, वाका श्रामां कारा कारा करें है। इसी के क्या तक कींट वाकारक क्षात्र कर्माण्यानियों शादि वाग हो हो। हे सने ह कार्याव विश्वन क. उन्होंन बहुन वामन यक क्षत्रकाक संस्तृत कार्याव के कार्याव कारा कारायक क्षात्र कर्माण्यानिय किया वा: है त्याराणी किरायन नामाक क्षात्र कार्याक क्षात्र क्षात्री क्षात्र कर तुने हैं। यह ते हैं कि हुम कन्या विश्वन इनका क्षत्र कार्याव क्षत्र करा के त्यारा क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षत्र क्षत्र क्षात्र कर वा वा वा के क्षत्र करा करा क्षत्र क्षत्र

स्ति क्षेत्रक क्ष्रक्राच्ये अभि क्ष्रक्र क्ष्रक्राच्ये अभि क्षेत्रक क्ष्रक्राच्ये अभ्या केष्य क्ष्रक क्ष्रक्र क्षेत्रक क्ष्रक क्ष

कार्यक्रशस्य मनुख्य।

ह पुचरको याद रतना चाहिए कि उसके जीवनका मुख दूसाँकी त और कृपापर इतना निर्भर नहीं है जितना स्वयं उसकी शिक्सोंपर। द्विमानीके साथ शमपूर्वक उद्योग किया जाय सो उसका उधित फल दिना गरी रहता । ऐसा उद्योग मनुष्यको उद्यतिके मार्गपर हे जाता सुके व्यक्तिगत परिएको प्रकट करता है और दूसरोंको भी काम करनेम

गाहित बाता है। चाहे मब होग समान उसति न कर सक, पाना हर. आहमी अपनी योत्पतानुमार उहाति अवस्य का सकता है। बह अच्छा वहीं है कि मनुष्यके लिए जीवनमार्ग हुइसे तियादा सुराम कर त्या जाप । अस कावा और कष्ट उठाना इम बातसे अच्छा है कि हमारे सब काम कोई हमारा कर दिया करे और हमको मोनेके लिए गुदगुरे विस्तर मिल जाया करें। सच तो यह है कि मनुष्यको काम करनेमें उत्साहित करनेके लिए जीवनके मारंभमें जरुरतामें कम मामानका होना इतना आवश्यकीय है कि यह श्रीपनमें मफ्लता प्राप्त करनेके लिए एक आवश्यक साधन कहा जा सकना है। गृह बार एक प्रीमद्ध म्यायाधीतासे कियाने पूछा कि " वकालतम सफलना प्राप्त इतने हिए मचमे बड़ा माधन ह्या है १ ग उसने उत्तर दिया कि । इस होत अपनी योग्यतामे सफलना प्राप्त बरते हैं, बुठ उत्तम संबंधीके हाता, पुछ देवदोगसे, परन्तु जियादातर वे लोग सफलता प्राप्त करते हैं जिनके . २५ ... इ.स.च. व्यक्तियोंकी उद्यति और जातियोंकी सम्पताकी वान गुरूमें एक वैमा भी नहीं होता। "

असरी सर समझ्या चारिए। यदि हिमी मनुष्यदी जलात विना हाय देर हिलाप ही पूरी ही जाया कर और उमकी किमी बागकी मतीला, आकांश अपना उद्योग अपनेकी अहरत व रहे. तो उस अनुत्यके हिए इसमे बा कर दूमरा द्वार हो महना है ? यह निवार कि : व्यवस्था न भी कोर् कर के के अप न उद्योग कानेशी आवत्यक्ता है, अनुत्यके लिए सब विया-्रा अधिक करतायक और अमझ होगा । वेकार रहते रहते अनुव्यकी जाव

जिन मनुमाही सीवनमें असरहरता होती है वे प्रायः मीरे आहे बन मते हैं भीर तुरल ही समार हेते हैं कि विवाय उनके हराएक आइसी उनके तक वही जाती है। जिल्ला हारण एका है। इस समय हुआ, एक मानद हेरादने एक पुर हान लिया है भीर साथ ही यह भी श्रीकार किया है कि " सेंपहारे मेरी प्रत्या ! " बोर रिस मी अपने यह नगीमा त्रिकामा है कि हम जामेरी लोग पत्रके दागारक करिक हो गई है भीर वहां सेशे क्यारहतात्र का तृभा ! देशर टाइन भी अंकानिनारे वही पुणा करता या और हुगक नीमा यह तृभा कि जसको अपने कामीर्थ क्यान्यात्र हुई मीर जाके हुग-रेस गार देशरी सम्मेर विवाहें किया पहुंच हक्य हिंगा।

कृत्र मनुत्य ऐसे भी हैं भी यह समझते हैं कि हमारा जरम दुर्मागर्द रिण दी दूसा है, मैराह इसारे विकाद है, इसार्थ इसार क्षारा महि। इस सहार कर अनुत्यक्ष सेन्द्रेसी इससे यह कृत्र है कि उसकी समार्थ स्थार अरण दिवाल था, वह कहा करना था कि " आहि मै देशी नेपनेगाग होता, तो वालक दिना शिरों की पैदा होने लाते ।" लुक कमी कराल है कि " क्षारी न मुलगां साम काम कमते हैं गि कह कृत्रयू देशा मारा है कि में समुत्र अरों आलकों रोगा कामें हैं के अनुवां क्षारी साराव्यक्ती, इसरें अत्रूपनीता अर्थाव क्षारी है कि अर्थावं कामें है । मुर्मायं क हारण जातानत कर कंत्र नामार्थ आपे देश यह उसके पास केश्य देश शिर्मा गी। उत्योदि नाम कहा है कि " संस्थान नेपचे हमारी तह शिका-ले कर्तुकार्द हो के रेग विधान स्थालन सनुत्यक्ष वर्ष देशा हमारी हमारी हम न दूरे हो। बारा दिन्सी बनुष्यक्ष नामार्थ्य से हो ती समझी है वर्गी करीवा समार्थ है ।"

हिस्सी कारतारकी अनामात्रत नवसन है किए मुक्का - इस सुनां ही आरावर-करण है—कारतार , गर्माम, सावस्थात, सुनींद, सक्वमंत नारही की जान-रूपा है ब वर्ग जाती नाममें सीरी मात्रत होंगी, शर्म्य के स्कृतक है सुन केरी कारामार्क किए मात्रत आरावराडीय है। वह साव है कि से सोरी सोरी सीरे है, राष्ट्र सुन्या जीवन इसमें भी सीरी सीरी वर्षना है। सीरे सीरे कारतीये नित्त वह केरण महत्यका ही मार्गि मार्गिय वर्षना है। सीरे सीरे कारतीये नित्त वह केरण महत्यका ही मार्गिय मार्गिय केरण है। सीरे सीरे कारतार्थ केरण कारतार्थ कारतार्थ मार्गिय कारतार्थ है। सीरे सीरे ही यह कारण जिलेगा है। इससे मार्गिय वाहास सोरी सीरे पुरिवारी मार्गिय सर्वास्त्रती पहाला हक्ता त्याद होगा । वहांग्रस साहरीयों पूर्ववारी मार्गिय हुए कारण करने कुल है। इस किए प्राची इस बाहरीयों हम्मेरी सीरेस प्राप्त काली चाहिए-चाहे उसे अपने घरका प्रबंध करना हो या कोई रोजगार

उद्योग-पंचे, कलादीनात्य और विचानक संवंधमें हम बड़े बड़े कार्यस्तां. इरता हो या दिनी जातिका दासन परता हो। अपने उराहरण है तुन्ने हैं। वे वह दिवाने हे हिए काफी है कि वीयाने लाम व्यावरण व ज्वाली क्रानेश अस्ता है। इस रोजमा देतते हैं कि हराक कामन विवास होती होती बातींच ध्यान हेनेसे ही मनुत्पृती उपाति ्राति है। परिश्रम मीमात्यकी जाता है। यह भी बहुत जरूरी है कि हम

हराक पामको शिक शिक करें। जिल मगुष्पमें यह गुण मीवा है समस छो कि उसकी उनम तिला मिली है। देखनाल, बोल-बाल और जाम-कान क अपना है के श्री होती चाहिएँ। जो बाम दिया जाय यह अपनी ताह

हरता पाहिए। शहिने कामको भी अच्छी ताह करता इससे अच्छा है वि हम उसमें दम गुने कामनो अपूरा करके होड़ हैं। एक पुदिमान सर्वा कहा काना था-" वुस विकास भी काना चाहिए। ऐसा कानेसे कास सक

मुद्भ रिष्ट रख बर मायधानीमे काम काला बहुत ही महत्वपूर्ण गुज पान हमारा बहुत इस ध्यान हिया जाता है । युर दिन हुए एक प्र समास हो जाता है।"

विज्ञानने कहा था कि " सुरो इस बातने आधर्य होता है कि अवतक नेम मनुष्य बहुत हम मिले हैं जो दिसी निषयको अच्छी तरह साफ

ब्यानासंबंधी होटे गोटे माजलीम की हुमरे मनुत्योंको अपने पर नेश एक साम तरीका होता है। वरि कोर मनुष्य धर्मामा, यो सर्वाणी भी हो, पानु वसमें अमावपानीकी आर्त हो, वारित करनेकी और बजा व हो तो उसका कोई भी रिकाम न करेगा। द्रके बामनी बतबत जीवना पहला है और इस लिए मनुष्य म

चन, रहस्य और सब्हीफ़ब्स बारण होना है। हर एक बामधी थिथि या विस्तार्थिक बाना जासी है। हर एक बामधी थिथि या विस्तार्थिक बाना जस्मी है। संगोपहर्वक बाधिक बाम हो सहना है। सिसिएका बाय भारत जीततांक साथ कर लेते हैं। उनका निक्कल था कि "कुम्ले बानों को सबसे उपनी काने वा यही नहीं का है कि एक दुर्फेम एक काम किया अगत।" भी। में किसी कामको दूस उनसे पर अपना म प्रोने में हैं अगिक अपनात मिलने रहा जो निक्कल लेते। वा उनके पाय काम बहुत हो बाता या तब में बारे अग्रेज और आसाम बरने के मायकों भी बात कर तेने में, राल्या अगल बातक किसी जिसमें को हिंबा किये न पित्र में प्रोति हैं इस को यहां किया का कि "क वह देख न एक ही बात करना नारित।" वहा बात में में कि " काम मुझे कुल करना सीता है, में जा मक बर

करा करा चा कि जाता नव नक मिहिनी भीर बात्रक बनाव नक नक में है हरा। बनार मुन्ने पात्रक बोर्ट् काम करना हो भी में प्रकाशित हो कर वेशी करा। असर मुन्ने पात्रक बोर्ट् काम करना हो भी में प्रकाशित हो कर वेशी में मन असरा है और उने प्रकाशित कर करते करी होत्रका। "प्रकाश कर करते करता कर है सामका है। "भाजका साम करनाव करी मन होत्रका मन दिवाल वह सामका है।

'भ भवार वाम कर राव भार करी मण द्वारा, यह शिवाल्य वह सामार है।
भी कर हा मक राव भार करी मण दाए, यह परणा दिवाल्य कर मेरीमार है
मां भारतां। और श्वेद्धमंद्वि । केय ही भारती भारता वह हाम वाम माने
प्रामानीय दोष हम है । केय ही भारती भारता वह हाम वाम माने
प्रामानीय दोष हम केया हम करनी मानिया । तक मीतीनी करावः
है कि " वांत तुम वामार हो कि प्रमात काम दो मान, तो तुम उस कामके
भारत मान करें। , और वांत तुम मानत हो कि यह वास म हो मी किती
भीरकों सेन हो। ' किता तुम मानत हो कि यह वास म हो मी किती
भीरकों सेन हो। ' किता तुम मानत हो कि यह वास म हो मी किती
भीरकों सेन हो। ' किता तुम मानत हो कि यह वास म हो मी किती

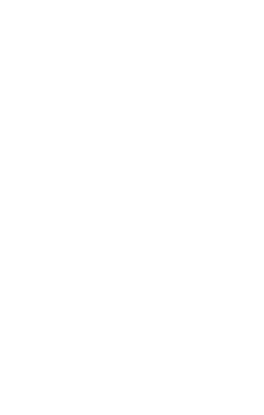
कुछ भागानी जमीजारक त्यार वृत्त क्षात्रीय वी शिववडी भागाईथी करावता भाग कुछ करावा नामान्य थी। वह अवीरण व्यारण हो गाना यह दिन्न स्वारणे बार्गात भागान क्षत्र क्षात्रीय में करावी अधीत कर प्रेत्न माने क्षात्री क्षात्री बार्च क्षात्री क्षात्र है निम्म दिक्षात्रकर हुए हो। अब क्षात्र वर्ष वस्त्र माने वह वह दिक्षात्र अपीत क्षत्र हिम्म दिक्षात्रकर वृत्ताकर हो। अब क्षात्र कर व्यारण की स्वारण की

करत नम्म स्थाननार्यः । करानना समाय गायः ही साथ प्राप्त प्राप्त इस्से नाम नेपूरः । दर्शान्तान दशः दः । यह भागानः साधुरीयन्त प्राप्त हो अत्र पुरस्कः दशना समायः । दः नः नर्गण पुरस्कः दशीनार्यं सी



भागण सीमणके साथ कर छेते थे। उनका निवालन था कि "बहुकों कमांकी सबसे जहाँ करनेका यही तार्थक है कि एक एकेमें एक स्था किया जार।" जीर वे कियी कमाको इस उत्मेश्यर कराय कर वह से में मिक अवकार सिसवेश्यर उसे दिर कह किये। जब उनके साम कान बहुव हो जागा था तब ये जपने बीजन कीर कार्यक करनेक समयकों भी कम कर हैते में, परन्तु अपने कारके किया दिरमोड़े स्थित किये न छोड़ते थे। डीवि-दका भी पदी सिद्धाल्य था कि "एक एकेमें एक हो काम करना चीरा है" के कहा करने थे। कि "मारा सुसे कुछ करना होगा है, तो जब तक सम समास नहीं हो जाता तथ तक में कियी और सामका तमान तक नहीं करना। मारा सुसे परका कोई काम करना हो, तो में एकामानिक होका उसीने कम जाता हैं भी उसते पर किये कारना की दी कारा।"

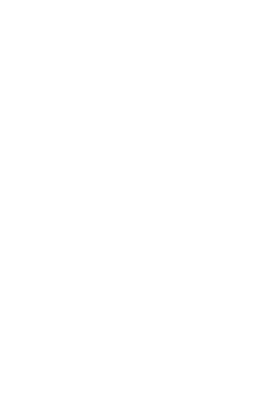
वृक्त भाकरी कर्मारारेक वाल कुछ कर्माव थी विश्वची शावारी कराया।
आठ हमार रुपम साशक्य थी। वह क्रांगिर क्रांगिर हो गया, स्मृत विष्टे
बसने करारी साशी कामीन वेष काशी कीर वाड़ी क्रांगिर वृद्ध हेनूनी हिम्मे
बड़ी बील परेडे दिग्ध विमानेवर उठा ही। जब बीस वर्ष बील गये तब वर्ष क्रिसान लेगिम वर्षके क्रियान पुकारेके किल जाया और उनने अर्मीग्राप्ते एका क्रिंग्यान काम यह जमीन क्योगी "जब्दीग्रार्म विस्तान हो कर एग्या "क्या पून न्यांग्रोते ?" क्रियानने नवाब निष्य, ' हाँ, आर रूपम यद कार्य तो लेगा।" जमींग्रारंग कहा क्रिंग्य क्यान्यला अस्तानक बात



पारण प्रीम्तणें साथ कर छेते थे। उनका सिद्धान्त था कि "बहुयों कार्माकों सबने जरनी करंका बढ़ी तरीका है कि एक व्हेमें एक कार किया जाय।" भी। किसी कारकों हुत स्वस्तेष्ट्रण कुरान को होने थे कि भिवक मनकार मितनेप्टर उसे किट कर छेते। अब उनके पास कार्म बहुत है। अराग या नव से अबने सीतक बीर काराम कार्मेक समस्यकों औं कम कर मैंने थे, परन्नु मानने कार्मक किसी हिस्सेकों किया किसे न छोड़ने थे। औदि दका भी बही मिद्धान्त या कि "एक व्हेमें एक हुई बास करना व्यदिश" ये कमा बतने थे। कि "कमर मुखं बुक करना होना है, तो यह कह बहा ममारत नहीं हो जाता वह नक मिक्सों भीर बानका स्वान पह कहीं कराने। समार सुन्ने एवला कोई काराम करना हो। भी में एकार्याचेस होजा उसीने करां।

जाना हूँ भीर उसे प्रा किये विना बही छोडता। "
जाजका जास कारण कभी मन होती, "वह निकास कोई कामका है।
"जाजका जास कारण कभी मन होती, "वह निकास वह कामका है।
वी कर हो ने के उसे साक कभी मन कोंग, "वह उनका निवासण उन कोगीया है
जो भागांगी भीर विकास हैं। ऐसे ही नाउमी जाया सब काम काम करने
पुमानींगर छोड़ देने हैं, तमनु गुमानोंगर बनेजा विकास म काम नाया-वाहरू-जानों क्षातीकों देगलेल करने व्यक्ति । एक मीगीडी अदारण
है कि " वाह नुसान वाहने ही कि गुमारा हो काम को आप मा नाया-वर्ष काम काम काम नाया है। की नाया को आप, मो नुम जम कामकी
स्वर्ध काम काम है। भीर वाह उस अपने हो कि वह काम म हो हो कियाँ।
" बार काम समा साम। "

कुड लाकनी जमीरहरके पाल कुछ वार्गाल को तिक्की कामहर्य कामगा आह इसर लागा साल्याम थी। यह वर्गीहरू कमेरहर हो पाना हुए छिए इसने बनानी लागी कमेन केल वार्था और वार्धी वर्गीन एक सेहलती हिम्मां बड़ी बीम बनके किए किमानेश्य हारा थी। यह बीम वर्ग केला गाने मक बह दिस्मान संभिन्न बनेका किलानो मुझानेल दिल्ल साथ। और इसने अमीरहारी एक डिंग्नेक पाल वह जायीन कमा है जातीन्त्र करियान हो कर पूछा, 'क्या कुछ नामगोरी है किमानन जगाव किला दी सरार राज्य वर बार्य मो के देता। जातीनार्य वर्ष किला वर्ष चल्लान साथवानक बात



भाग्य जीतानांक नाय कर केने के 1 जनका निजान था कि "बहुयों समोजें तबने जमते बर्धका गयी मरीका है कि एक वृक्षेत एक बाम किया । मार 1 "मेर व किया कारकी कुम जमेरित महास के होन्ते में कि मार के भड़कार मिनचेनत जोते कीर कारण किया जमके ताय काम बहुत मा मारा था नव वे अर्थक जोते कीर कारण करने के साम की भी कम कर देव त, परन्नु भारने कारके दिनी तिरोधों दिना किये की प्रोहरे में देति? इस तो नहीं निजान का कि 'एक मुकेत एक दी काम मारा भीतिए।" देवना बतने ता कि " कार मुक्क वुक्त बत्या होता है, तो अब तक करना समात नहीं हो खास नव नक में दिनी और नायका नायन नक मही बना। असार नहीं हो खास व्यन्त हों में किया जीवा व्यान की स्वर्धी भीत

कड़ कारणीर अर्थिकार के साथ पूर्व अर्थिक की दिखानी कारपूरी कारपीर कोड बता करना कारपार थी। १ का अर्थिकार करिया के बता, वृक्ष की पूर्व कर्मा कार्यी अर्थाक कुछ पार्थ और कार्य अर्थाक कुछ दिखारी किया अर्थ कार कुछ दिला किरावा हुए पार्थ और कार्या अर्थ के तम की तक की स्वित्य के प्रेम करिया दिला किरावा हुए के स्वाप्त करिया के दिला की कार्य अर्थ कुछ क्या कुछ उद्योगित करिया है अर्थिकार हिम्म कुछ पूर्व कर्म कुछ क्या कुछ उद्योगित करिया है अर्थ के विस्तार की स्वाप्त करिया

क्या रह क्यांच्या ' क्यांच्या क्यांच्या कर ही क्या प्राप्त की क्यां का के कार प्रत्योग्यान क्यां के एवं क्यांच्या क्यांच्या कीर्य है क्या क्यांच्या क्यांच्या क्यांच्या के कार्याण क्यांच्या कीर्य की मुका मुद्दो स्तान भी नहीं देना पड़ता था, नहीं होता था, और तुम मुद्दे तावर तीन हतार रुपया मालाना किताया हेते गहे ही तिमपर भी उसकी ताबर ताम हजार रुपया लालमा क्लाया देत रह है। तालवर ना उसमा मेल होने के बीच हो गये हो ११ उसमें उत्तर हिया कि श हुसका काण सो भार रंगम पाप वर पाप वर्ष कार में कमर कम कर काममें लगा रहा। आप सार है। आप देकर देहे रहे और में कमर कम कर काममें लगा रहा। बारवाहूंतर पड़े वोड़े तुत्र किया करते है और मूँ प्रातःशाङ उठ कर अतम्

समपके मुख्यको समझ का काम कानेम शिल्लव न कामा चाहिए। हट-लमयक मुख्यका लगर कर पान करना मिन समय मेरी जायदाद है और यह एक काम-काजमें लग जाता था।" क्ष्मी जातरार है कि विना जीते हुए (विद्यम किवे हुए) तो हसमें हुए वस्त्र महा मानसर कहा बतारा था रक वस्त्र महा मानसर व मार बहु ्राच जाववाव व वर्षा प्राप्त प्राप्त प्रश्ने वर्षायम् कार्यकर्ताका परिश्रम वेदा नहीं होताः परन्तु हमको सुधार हेनेसे परिश्रमी कार्यकर्ताका परिश्रम पत्र नवा वाता । अगत हुते वाली वहा रहते हैं, तो हुतमें अहितः क्षमी निष्ठल मही जाता । अगत हुते वाली वहा रहते हैं, तो हुतमें अहितः पर पाम और कीरे देश हो जायेंगे। अ कामकाजमें निरंतर हमें रहनेते एक प्रभाग भार कार नवा ए आवा । जानका मन पापकी और नहीं जाता। ह्योंकि कायग तो यह होता है कि मनुष्यका मन पापकी और नहीं जाता। कार्यन ता यह वाता ह । क नयुन्तमा यन वावका जात नहां जाता है। जब वेकार्ति सनमें सह सहरू अगुन विचार उमन्ने हुए चहे आते हैं। जब प्रमाराण प्राप्त राख्य राख्य मुख्य एड्डाई-साद सी कम होते हैं। इसीके मनुष्य कामकासमें हते हते हैं तब एड्डाई-साद सी कम होते हैं। अनुसार एक अहाराय, जब उनके कोकांके वाम कुछ काम करनेको न होता था, तब उनको यह हुक्म देते थे कि "सब चीतीको साफ करो।"

त्र प्रत्या वर द्वार करते हैं कि असमय प्रत्य है । परमु शस्त्य के कि असमय प्रत्य है । परमु शस्त्य के कान्य वार न्युज्य कृष्य कराव व व क्ष्य प्रमान स्थाप स्थाप, अपने व क्ष्य के उचित प्रयोगसे अपना सुधार, अपने वह धनमें भी बड़कर है। समयके उचित प्रयोगसे अपना सुधार, यर यात्र का प्रमुख्य र १ लगपण अर्था म्रहस्यम् अध्यया चेमतलय वार्ते उद्यति शीर चरित्रकी उत्तति हीती हैं। आलस्यम् अध्यया चेमतलय वार्ते वरि एक घंटा रोज बचाया जाय और अपनी उत्तरि कालेम हतााया ज नो मर्च मन्त्व भी कृष्ठ वर्षीमे वृद्धिमान वन जाय, भीर यदि यही ह भरत शर्माम लगाया जाय तो उस मनुख्यका जीवन मार्घक हो जाय मनन समा नः यह अनक गुमकर्म कर हाल । यदि अवनी उस्ति व ्राधान भारत्यांत्र स्माप तांचे तो एक मालव बात हमका नताः ू. रा नार्म होन असेता । उत्तम शिवार अंत्र माण्यातीक मा ाः लाजनभाक्तः भाजगहन्त्राधान अहत्स्य उत्तरी अपने स मध्य समाय है ते. मध्य है। उनके हे जानम ने ना कुछ सब पहला है _{जास मार्ट्स} होता है। समयको उचित उपयोग कार्यस यहुत समय

रेर व. नाल्नु बान्य बायफे कियो हिश्मेडो चिना डिये व डोप्टे में ! मेर्नि: इस वी वहीं मिदाल वा कि " एक प्रोमें एक ही बाम बारान मारिट ! " व क्या तार्त वे . कि " लागा नुसक् बात्त होता है, तो उम्र पन प्र बाराम नहीं हो जागा नव पक्र में कियों और वाल्या क्याप तुक नहीं कर्यों ! बारा सुने बादा कोड़ बात करना हो तो में कि पक्षामिक होता मोर्नि क्यों बाराम है तो त्ये पर किम बाना वहीं होताना !" बाराम डाम कम्यार को। वन कोड़ी, 'वह विद्याल वहै बारमा है !

विश्ववित बीएक प्रोक्ष पिर पर प्रकार किया जाता और उसके वसीहाती पूछा पेक कार पार प्रश्ने कार्य में असीहार किया होते हैं। असार कार्य कीरियों कार्य में असीहार के विश्वविद्या होते हैं। असार कार्य कार्यों के असीहार के पार कार्य कार्य कार्य कीर्य कार्य मार्ग है। उसकीहार कर पे उसकार कार्या कार्य कीर्य कीर्य है। इस उसका कार्य कार्य के पार कार्य हुए कार्य होते स्वीतिक की तिसका मुत्ते हतान भी नहीं देना पड़ता था, नहीं होना था, और तुम सुते भागक श्रुत विभाग ना जबत क्या गुरुमा व्यव विषय हो तिसपर भी उसकी सताबर तीन हुतार हराया सालाना किताया हेते रहे हो तिसपर भी उसकी बराबर तान हुआर दुनमा सादामा क्षापन दूम रह हा आपनर ना जनका सीत होनेने पोत्य हो गांवे हो अ उसने उत्तर दिया कि व रसका काण तो नार देन कार देता है तह और में कमर कम का काममें हमा रहा। आप त्पट ए । जान नगा चुन्य जार न कान कर का का सा रहा । आप कारवारिय पड़े पड़े सेन हिया करते ये और झे मातःकाळ उठ कर अपने

समयके मृत्यको समझ का काम काममें विलम्ब न करना चाहिए। हट-रामपण ग्रम्पा प्राप्त करा बरता या कि । समय मेरी जायदाद है भीर यह एक काम-कातमें हन जाता या।" हमी जायदाद है कि विना जीते हुए (चरियम किये हुए) तो हममें बुठ ्रा आमर्थार व व्या विवास आग ५० हेनेसे परिश्रमी कार्यकर्गका परिश्रम देश नहीं होता: परन्तु इसको सुचार हेनेसे परिश्रमी कार्यकर्गका परिश्रम क्षा (अन्तर गहीं जाता । जात इसे साही पड़ा रहने हैं, तो इसमें आहेत-कारा । मनतर नदा जाता । कार देन स्वादः। पड़ा रहन दे, ता द्रसम आहतः इर याम और कहि देश हो दायों। " कामकातमें विरंतर हमें रहनेते एक कापना तो यह होता है कि अनुष्यका मन पापकी ओर नहीं जाता। हमोंकि कार्य में अनम साह ताहके अनुम विचार उमने हुए चले आते हैं। खब न्यासन नाम अपन्य अपने क्या कड़ाई साहे भी कम होते हैं। इसीके अनुसार एक महाराण, जय उनके बोकांके वाम कुछ काम कालेको न होता था, तय उनकी यह हुक्स देते थे कि "मव चीताँको साफ करो।"

कार्यहराहा मनुष्य कहा काले हैं कि " समय घन है" परन्तु वास्तवमें वह धनसं भी बहुबर है। समयह उचित प्रवोगामे अपना सुपार, अपनी वर अन्त । अहम विश्व उत्तरि होती है। आहम्पसे अववा वेमतहत्व वातासे विह एक घंटा रोज बचाया जाय और अपनी उत्तिति कार्तमें हमाया जाय, नो अर्थ अनुत्य भी बुछ वर्षीसे बुढिआन बन जाय, श्रीर यदि यही समय अर^{्ष} शक्षोप्र लगाया जाय तो उस मनुष्यका जीवन मार्थक हो जाय और मरन प्रमान नक पठ अनेक गुनकर्म कर डाल । स्वरि अवकी उस्ति कानेम .. । धान अ हर रोज लगाय जाये तो एक मालक बार हमका नताता स्व ... त. र अन्य होत ल्योगा , उनम दिवार भे र मायपानी के माथ प्राप्त ्र प्रभाग वृद्ध भा तरह नहां घरन भार हम उनको अपने सापियाके ्राप २ प सन्ते हैं। उनके २ जानस न तो इत सच रहता और न कु3 होताहै। समयका उचित उपयोग करनम बहुत समय बच रहत.

MC7 = 414 Employ E

है जार बारणों कात तो जात जिवलाय व और सामृष्य पाने सामें सोमें नेमने पत्र जर्म रूप को रूपण वास्त्यका स्थापन सही रूपणा पूर्व हुए बारने जाते जाते ज्यार हुए का व्यवसाय पूर्व रहात है, प्रावेश में से देशिया कार्य पाने सामान प्रथम है, दुवाना साम तीयन बार्टी स्थापन क्यार की की मां कार्य पाने सामान द्वारा रहाता है सीन रहा सामा भूगीयन मेर हा है हैं किए कार कार्य कार्य हुए हुए हुए सुद्ध अपना वास्त्य की सामान सामान सामान स्थापन की

Manuform and the past of the month appeals and but is a more the and it are post to the first than over it by "Month that it also the control of the month appeals and the above of the month and the above of the month and the above of the month appeals and the above of the month appeals and the above of the month appeals and the above of the past to be part to be above to the month appeals and the past to be part to be above to the above of the past to be part that the above to the above above above above the above ab



Prompaga

अभिन् । अवयो केचन नारत्य की नहीं किल्लु कर्मकृतवा भी तीर भारतः । पार्था कहा और सत्याव कलागावत्र कुनावित्राच्या होता वर्षाव्य उपने तथा पार्था निकास्त्रा नार्या नार्यात् कि वह बहुती काहतियों तुर्व भारता । अवतः भारतकारीका और नुसार्वि अर्थात वर्षाव्य की नार्यात् । तथा । अपने तथा वर्षाव्य नार्यात्र निवास नार्यात्र वर्षाव्य क्षात्र । अर्थात् वर्षाव्य वर्षाव्य निवास कर्मात्र वर्षाव्य की वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र वर्षाव्य नार्यात्र वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र क्षात्र वर्षाव्य नार्यात्र क्षात्र क्षात्

करा पान कार्यन्त पर्यक्त हरूना का कार्याशक मेरिक पार्ट्ट कार्ये एरायान नह वान्त्रपान का राज कार्याशक हा अन्त्र की कार्य की की राज में पन अर्था कर कार्या कार्या कार्या की कहा की सकता की मान कार्या किनार कार्या कार्या कार्या की कहा की स्थान की मान कार्या किनार कार्या कार्या कहा की कार्या कार्या की की प्राण्टी केंगा कार्या को अर्था कार्या का कार्या का नह मान्यों की प्राण्टी केंगा कार्या को अर्था कार्या कार्या कार्या का कार्या का की स्थान की स्थान केंगा कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या का कर्या की स्थान की स्थान की राज कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या की स्थान की स्थान की स्थान की स्थान कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या की कार्या की स्थान की स्थान कार्या की की स्थान की स्थान कार्या की की स्थान की स्थान

Add of the property of the pro

The same and the s the hand the the country described the second descr

men haman dame me manus des fres Limens of grand on 6 عمد وسعد المساومة المراسة المراسة المرابع عدد استعدد المرابع عبد المناور والمناورة والأوالية والأوالية والموالية والمالة والموالية ANT & man t man match darks and make to drawford affinding to the draw . that we there are given from their there were the the Some was more direct gran drawle family about more manifest making making grant From \$2 confirmers regulated improved & after set weeks seem water from 1 South broadfull many der rande demonth of many broader to it देश्यम् सम्मान्तः सर् हेन्द्रा सा समेर् १ तो सम्मान्त्रम् हेक्ना हेर स्ट्रीतनस Einenbur dezing, de besiel mezz munit mez fingl fingl ? fangl mannen, many angg for from him of I want from the fit with a fit سيد بدور يد ميدود هدهم هد ورس فيل و الديث مصير وو فردير هده هما المتاريد ! . شعا تدور مي الماسات وعمار شهرا هسيم دور ها فيداس هذا و हैं न रूप कर्मिंदियों के स्वारोधे कारण्य बहुत्रण स्मात स्वारी सारायी हैं स्वारी कर हो या की भी कब बह बालव सामय मानव कर मह बारा सरका दरका था है

हरी क्ष्मा केर हैं केरियाम दे रामा कार्यकरण ये हैं है यह संबंधी मूल क्षान्ति व हेर्ना हि ह्या बन्द्यून्यान्त्र बन्द्य में दिशी मुद्धी वर्ष म हुनी । ये क्ष्मानवर्षीते क्षीत बहुँ वर्ष शब वह ये । जात शक्तव हुनारी की ह क्षेत्राच्याः सहय की वहा मा । इस मुझ्या सिलाएकहे समादेवी सहाई में ब्ली सं दश प्रांध बहुन वस क्यार्ट सा वह ब हरान्वह बारे वसे और ब्रोटमें क्ष तारी मार्गिया विजय मात्र की । प्रश्ते कार्यी मार्गिका कार्यी हर्मण ह हुआ । सुद्धीने त्रकृति वक भी बहुत हरूमें, यरम् हे अपने बने. हत्त्वामा हार ह्या ह हर । श्रेत्रांके बराशे उस्तेन सूब रेशाया । ्राप्त्राहर शिवाला की कार्य व्यासम्बद्ध अरेश व्यवहार्देश सम्बद्ध करे व्यक् हमा कार प्रका इनका सक्त्रण साथ हुई । अर्राज्यका संजा

्रहरू सो स्थापना सामन रहर व सक्ष क्योरी सामाजी मत्त्वत है इसके प्राप्त प्राप्त तथ प्राप्त हिरामानीह 124

AND PART PART AND

भ-भव वच्चार वृत्ता शा वृत्त कात बादा विकरीते विकास शामा भी Arter eife : beit gang aus i abfernale fint fie ut freife fit fir be at their gene fie er eine gu mit au ghaft feing ner fie. aupt.. a et 3 : wert atfter meder all effen fit fiert,fect fie tie tra b a ten del ber be bifferine meleletad unich to ng. mein is binute wurd matetale gent febet aufe big beift ber World to deep a die ber ber ber ber gerifd bemerftel um tiffe the year as they , deren liegereuren ginn bie fin fit म र रेट रेट , उरका हर नेवर है दी के रोगा स द्यार है। योह ही यान, वर्ष na is in the motion will into the decimal thing of four a HT wert alleren b. ar erecte ban enteret ifte eit mir fini ! क्रम १७ मन अन्यान क्रम और संग्यांत वह यह अनां में पन में। रूप ne continue mount source as fings by us me de more tirely के दें पर में में अपन्यात मिरवार हैया ये हैं है। से क्षेत्र में में मी माने time armin what were not a payer affect ; but's bit for some are you as devent . such that west was the mood to the the as as less, some only the end spirit prove the with the mire form for 66 by and a 2 month primal of the the title risk more witness accord and their will mere may be seret are describe me men of a good ope \$65 Acres 6 I'V HE WOULD STAN WE STOP HE.

- M = 374 75N M ++ F 18F 40 1

I WHAT I WARRED BY HE SEE SEE STREET BY A B. AND THE COLUMN THE SECOND SE ASSESSED ASSESSED.

also a man and a man of more communities and any open any open and any open any open and any open any open and any open and any open and any open and any open any open any open and any open and any open and any open a to the in the second properties



कम होने हैं, तो यह मानना पहेना कि यह मतिहिनकी हैमानतारी मनुष्यंत्र परिवर्ध दिल महे गीरवर्धी बात है। ज्यावारियों है एक सुनीहा भी स्मा स्थिमान दरान है, क्योंकि के बारवर्धी माल उचार हैने रहते हैं। निर्माण कियान है, क्योंकि के बारवर्धी माल उचार हैने रहते हैं। निर्माण कियान हैने स्थान है प्रतिकृत भावर्ष केने नहीं मालहर होता। एक विद्यादने बात कहा है है है — मनुष्य एक हार्थ के बात जो भीति रहते हैं उचार के विद्यादने बात कहा है है है — मनुष्य एक हार्थ के बात जो भीति रहते हैं उचार का विद्यादन स्थान के स्थान स्थान होता है है है — सुण प्रतिकृत स्थान स्थान है स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान स्थान है स्थान स्थान स्थान स्थान के स्थान है स्थान स्था

पवारि नाराराज्यवा चानाराई है सामस्रोधिक बातों होना है, तो भी धैर्ममानी भीर पांचेसारिक बेहरी बात देखां के आहे हैं। बहुतते वारारी भागी भीर पांचेसारिक मेहरी बात देखां के आहे हैं। बहुतते वारारी मध्ये मध्ये पांचे प

समार है दि जो आहमा पत्रा हैमानसार है यह उनती कही, प्रवास ने में जितना जर्दी बहेमा बहाई परन्तु जो सफतना तीन वा वेद्रमारीहे दिना ग्राम स्वतन कहा स्वास सफतना है। जाह जनून हुन समय सिंह अपने स्वस्त है। है जो जनून हुन समय सिंह अपने स्वस्त है। है पर अपने कहा है अपने स्वस्त के स्वास स्वास है। जाह स्वास अपने स्वास स्वास है। जाह स्वास अपने स्वास स्वास स्वास अपने स्वास स्वास स्वास अपने है। वह स्वास अपने हैं। वह स्वास अपने स्वास स्वास अपने स्वास स्वास

नौवां अध्याय ।

धनका सद्वपयोग और दुरुपयोग ।

" क्षापके अनुसार ही स्वय निय बरता बाहिए, इच्च सेमर बर सम्पर्के अर्थ रातना बाहिए। नियम यह सम्पर्तिकीयम्ब बाद जो रसना नहीं, हुरता या बर सोबसुराका स्वाद बह बरता नहीं ॥"

—मैथिलीशरण गुप्त।

"धन तथार दो म तो, वर्षोक वर्ष देनेते बहुधा वर्ष और लिन्न दोनों हायसे यह बाते हैं और वर्ष होनेते किसायहके बासमें विविद्या था बाती है।"

-- रोपसपियर।

" अलीनमें याह कर रसनेके लिए अपना गुज्यप्रें तक्षतेके लिए यन इरहा मत करोः हो स्पर्तन रहनेके तिए यन अवस्य इरहा करना चाहिए।"—यन्स्यें । " धनके दियसमें कभी अलावधानी न करो——यन चरित्र हैं।"

-- पुरुषर हिटन।

कि सा भावमीकी विशेष-मुद्दिकी बीच यह बानवेसे हो सकती है कि यह आदमी रचया किम तरह बमाना, बचाता और सर्च करता है। यह सप है कि मनुष्यके जीवनका मुख्य वरेस रच्या बमा करना नहीं है तो भा रचयेकी नुष्य में समझना बाहिए, क्योंकि यह बासीकि मुख और सामगांत के उसकता बहुन बहा साधन है। उद्यागा, ईमानदारी, स्पायती-अन्त कामधाना, मिनव्यवन, इरशोशन हुमापि अपने अपने मुन प्रवक्त स्थाप सामगांत को अन्त स्थाप सामगांत को अन्त हमाय सामगांत हमानदारी, स्थाप सामगांत को अन्त हमाया सामगांत का अन्त सामगांत को अन्त सामगांत सामगांत को अन्त सामगांत सामगांत का अन्त सामगांत सामगांत का अन्त सामगांत सामगांत का अन्त सामगांत सा

व्या केरन इन लगा.

mindra said à

१ राव नेपा भीत व लाव मैना, भीत आपने स्मृत्योह विश्व होति जाता भागी सन्दि माजना है पन नवत तिनुस है।

मनका में काम खुन्द बन्द मनाह है। बहाएक कालांकी प्रतिनात के कि कर दरमा वामही वन्तानीक बातान कर । खुवान महिन्दी संदेश 4 one ? It quits unterm ibr mit nu muffe, fen mett & ! part a dies une man montagen mun finen me mab & at unter वर्त है। इसका मध्य इस इतिराम कर्तन सामाधार्ती व कारी सारित. करों है हुन्छ मान हो बनाया नापन हुनों है यह बन्त हु हुन बनाया In it I to Stone suffe along it elem auest freme # some get Both grown with the according to the state of the according to series gra ? Lives words weds and want filmers & reeds well mittel where and I are more excess grants model went mitel mitel 47 - द प्राप्ति केत मान्याहरू काकृत्व विश्वासमान साम्यक साम में, सामेर्वि men se a hour pass the experience of the great section of the were access to a go aff their series seems are others for the and and a man would be fine when, his own the trained of when the deal angle , dely it industed against Ca deminist Sittle and ar the see of the section was a ten of the see the The state service and services to the service service and & se Est play at 1 2

[.]

ر و سوس دم



नुसें वे जोग जिन्होंने सब कर्ण कर बाता है—सिन्हावर्ष और अग्रपर्ध। मिनवर्षी सनुसीन को सामस सकार, मिल, बुक और बहाब बनावे हैं। अनुरा मार्गिकों सम्ब और पूली बतावार्षिक सम्ब बता भी उनहींने हिये हैं। और व भारती जिन्होंने सामी आमर्श्वाकों गर्यो दिवा है ऐसे मुख्येति इसेंगा समार के हैं। ऐसा होता अपूरिका दिवस है, और से पूर्व हैं विधि हिसों समारक सनुस्थेति वह सामाई है कि तुस असूप्तां, विभावीय और अग्रप्ती रह सब करानी वहनी वह सम्बाद है कि तुस असूप्तां, विभावीय और

विस्ता प्रोहेण्डे को सम्बद्ध अनुहोंकी दी थी यह भी देगी ही सार गरिन है। उपहांन कहा वा डि महिनी अनुक बच्चा सनुगीर माइपरे रिक्त देवल कर बि महिना मार्ग दे विस्तां वह महिना संसाद विस्तित्वे विद्र वह मध्यो है मो बयन वह बच्चा है थी। वहिन्दु ही है मो माने मारके उपके करा दूरा काला है। आरंप वही है डि वह वहिना, मिल्क्ट, वेदन भी है दोलगाति कुनेश मलकान के वे बाँद देशा पूर्वस्थ सी है विस्ताद हारा अनुब अपने मारको ऐसी द्वारों वहा बंद निम्मी उनसे मन बा गरिकों वह मारक होगा है। विचार परके डि वे दूर्सी सुग्वेश मन बान बारिकों हार्य के साथ के सोच मार्ग होते वहने हुए भीर उन्हों बस्ते हुए देसमें हैं।

बोई बाग नहीं है कि मन्यूरीकी ग्या वाचोगी, मार्गानिय भीर गुम-सार न ही। सन्यूरीका मेर्नु की (मुक्को के स्वर) वनता ही मिलारी, सामानी, मार्गान भी मुमी ही त्या बनता है दिनाव का नाहि बुगी क्षेत्र सम्मानी है तेन गुक बाग जब है। किम बाग्धीन हमती कारी होते हैं दे वस हम्मा अपना करना रेगा ही गील सामा । स्वर्धी कारी होते हैं है उपना प्रमाण हो को जिनक प्रीवासन सामा । स्वर्धी कार्य होते होते हैं है स्वर्धा अपना करना रेगा है गील सामा । स्वर्धी को हो गोल स्वर्धा का हमाने जिनकहर के क्ष्यूम भाग तथा बाग वर्षी हो, वाल्य हर वह भाग का मार्गी के स्वर्धी कार्या वाल्य करना ने गोलियों हो हो सामान कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या होते ही सामा सामान कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या हात्री ही

धनका सहपयोग और हुरुपयोग।

वनी है भीर यह काम आरोंको तिता कर उनके बराबर का देनेसे नहीं हम् उन्होंकी पर्म, विवेक और सदाचारकी उंची और उत्तत हेगी मक उठा हेनमें हो सकता है। मानटेनने एक बार कहा था कि "नीतिसाखक नियम कृत्य व प्राप्त कर मानुष्य हैं शिक्षा करने ही हात् हैं जितने किसी महा-प्रतापी मनुष्यके जीवनपा । प्राचेक मनुष्यमं मनुष्याय या मानवी शृति मेप कारण मीजूर रहती है। उसे आयण अवस्थामसे स्पन्त करके याहर हान और उसके आमन्द्रवा अनुस्य काला यह स्वयं उसकि हायकी बात है। " विचार कानेवर साल्म होता कि जिल बातीं के सिए हमकी धन हुए करना पहला है वे मुख्य इनके तीन हैं -- पेकारी, बीमारी और मीन । मं आरमीश बनेत्य है कि वह हुए तरह रहे और देमा प्रवेष को कि उसकी हो नहीं किन्तु उन लोगोंनो भी-जिनका उसे पालन घोषण एटता है-विसी मुसीबतके का जानेपर वहीं सक हो सके इस कर । हमहिल हमानदारिक साथ रुपया कमाना और उसकी किलायन । करना सबसे जरूरी है। उचित शितिसे रचया कमानेके हिए है राम बरने, अलंड उद्योग बरवे और प्रशेमचीने शुँह मोइनेडी । ऐता बरतेने हमारी झाताव अवस्य करवती होती है। वपके ितियं गर्च बननेके लिए विरेक, बुरदर्शिमा और स्वाधिनिरोधक है। दे गुण सहाचारके सचे आधार है। इनवेसे बहुतारी देसी च का सबना है जो असलमें दियी समल्यकी नहीं होती, पान्य का प्रकार के जा सहती हैं जो बड़े कामणी होती हैं। हम प

रात^{्र अपर} और आसमया सामान हो नहीं, किन्तु आम क्ष्य वर्ष । हम स्वर्षा है। हम हिए स्वायः हमा ह्यया ह हरू। वं १ अनुष्य ≈स १पयव वश्या रहे सा सम्बा रात्राक साथ चर प्रताका दें व्यक्ता है THE RESERVE AND ADDRESS OF THE P. LANS.

्रती अस्ति हैं स्टब्स स्टेस १०० है। जर्दे दें The state of the s

स्यावादस्यतः ह

वाना नहीं कर सकता और मैहगोके दिवाँसे करे वा तो मील माँगवी पानी है या गरीचोंने नाम किया कर रिवायती जात्र पर बाजू वगैरह नरीइस पड़ता है। सब उसका रीजगार विकड्स बाता रहता है यह उसके पान

इतना सामान भी नहीं रहता कि वह कियी और लगह था कर उच का बरने क्षम । यह युक्त 🗗 बमहका ही बाता है और कहीं बाजा गर्ही सकता। न्यनंत्रता पानेके लिए जिल बातकी सहतत है वह वही है कि इसके

किन्द्रायत करने रहना वाहिए । किन्द्रायन करनेके किए म तो बड़े मारी सार् मुक्ता जब्दन है और व बोन्यनाडी। इस बाग्रेड मियु बेयत सांपाल डवार्ग और संशोधन काफी है । जनकों वाचा और और इन्स्वाम करता है। किशायनमारी है। अवस्थ, नियमवञ्चना, नृश्वर्तिना और किमी बीज है। सर्व व मीना ये सब कार्ने विद्यापतशारीमें शामिक हैं। बी मनुष विद्यारण करना पाइना है उसमें इस नामधी शक्ति भी होनी पाहिए कि वह आगे

डामची माधापर वर्गमान सुन्तमे श्रृंद ओड् मचे। इसीधिएमे मामून होती है कि मनुष्य पशुचीन मेड है। किशायनशारी कंग्मीय सर्वेषा निष है। सर्वाचम उत्तारता किञ्चायनशीर आर्याम की पाई सामि है। अन्यायनशीर आर्याच स्थाप सिंह है। बाइमी बनका स्निके समाय बदा द्वारा, क्रिन्दु सद यह समझा है कि बच

क्क ऐसी बीज है जिसमें सैकड़ों बाम विक्रम सकते हैं । किसीने सब बंदा : है कि "इमको त्रवंत्री केवल प्रतिद्वा व करवी चाहिए किन्तु प्रसर्वी विचारि कुर्वेड बाममें काना वर्धाव ।" विधायनसारिको बुरर्गीताची देवी, मेंप-सबी मांगिनी और सम्पेत्रपानी सामा करनी चाहिए। इसने हमारे परिवर्ती। रोक्रमरांके मानलको भीर मामाजिक कुशकको रक्षा होनी है। मारोस वर्ष

के कि किसायन सत्ता स्थापनानवाता एक सर्वाचन वर्ष है। र प्रशिक्त हाताक स्थान वहन पुरुष गृहण्यास्तव वर्गा वर्ग वस्य बार तथा तराम प्रया क में बाहबा है कि वृक्ष सब बाइये सूची हों। प्रान्त हमा राज है। में के किया का भी क्या मार्थ हो। देश मार्थी

e ar was an a sous on & alle and restrict man fact at the ex ex mere tanel ? Hit serve orgense where

धनका सहपयोग और दुरुपयोग।

हरणक आद्मीको अपनी आमर्त्नोमं निर्वाह बरनेका प्रयन्न करना चाहिए र इस बातको र्मानद्रांगिती जह ममझना चाहिए। जो मनुष्य र्मानद्रांगि पूर्वी आमद्वीम अपना निर्वाह बरनेका प्रयान न करेगा, उसकी तमर बेर्ट तनीके साथ दिसी दूसरेकी आसरनीमे गुजर करनी पड़ेगी । जो मनुष्य करते गरंदी परवा नहीं करते और दूसरोंके सुरावा श्याल न करके अपनी ही विषयपासनाओंकी पुर्तिमें हरी रहते हैं, वे बहुआ उस समय रचये महु व्योगको समझो है जब उनवा सर्वनात हो चुकता है। ऐसे वार्यीने भारमी उदार रामावरे हो वर भी अंतम तिय काम बरनेको मगप्र हो जाने हैं। वे करने धन और समय होनोंको यह बरते हैं, अविष्य बालपर अरोमा करने स्वात है और आदी आमण्जीकी आसा बांधते हैं । इस लिए उन्हें अपने पीछे इन्देश बोझा धमीटना पहता है और दूसर्रोंक अहमान उठाने पहते हैं जिममे उनके स्पतंपतापुर्वक काम बरनेम वही वाचा आती है।

हार्ड वेडलका सन था कि " जब किकायत करनेकी जस्मत परे तो छोडी होटी रकमोंकी आमदनीकी अपेशा होटी होती रकमोंकी वचतका तिपारा कार हरता चाहिए। " जो राया बहुतात आदमी कियुक रार्च कर देते या हरे पर कामोम हमा देते हैं वहीं राया प्रायः जीवनकी सातंत्रता और भा जा ज संगीतरी जह हो सकता है। जो लोग इस तरह रुखा हुए देते हैं वे अपने सबसे बटे तार हैं। इस उबको यह कहते हुए देवते हैं कि संमारमें यह अन्याय होता है। परन्तु जो अनुत्य आप हो अपना मित्र नहीं है यह के बाता का सकता है कि इसी उसके मिय होंगे ? साधारण स्पितिक निया क्षील मनुष्याके वास इमराकी सहायताके लिए हमेशा बुठ व बुठ वच रा है; पाना स्त्वीले और लापाबाह शादमियाँको, जो अपनी सब भामदवी कर हालते हैं, हुसराको सदद करनेका सीका कभी वहीं मिलता। किफा यह मतलब नहीं है कि तुम फरेबाला रही। रहवेम और स्पवहारम जो संकीण विचारांने बाम हेते हैं वे प्रायः अरूरदर्शी होते हैं और अ

अंगरेजीम एक कहारत है कि साली ग्रेला सीपा सन्। वहीं रह हसी ताह कर्जदार आदमी भी हुमानदार बही रह सकता। कर्जदार सते हैं। हिल् सत्यवारी होना भी कठिन है। इसीलिए कहा करते हैं कि

गीरपर सनारी करता है। कर्जेंद्रो बन्तपर म शुद्धा सक्तेंद्रे कारण कर्जात माइमीको भरने माहुकारले बहाने बनाने पहते हैं और बहुत करके हुये हा गवनी परमी है। जो अनुष्य दह संबन्ध इर केना है उसके किए पर्क बार कर्म केनने क्य जाना बहुत स्तान होता है, पान्तु एक बार 🗐 मेनेंग जो भागानी होती है वह कुमरी बार कर्ज केनेका छोम दिवागी है भीर भगागा करोरार बहुन बन्द कर्ज़ड़े चंगुलमें देना कैंग जाता है कि वह है। पान जिल्लो मेहनम कर जगर उसमे जुफ नहीं होता । पहली बार कर्ड हैंगे, पहली चार हाथ बोलनेक समाज है । लेका करनेसे बारबार बैमा ही कर्र्यक्री मनरम हो बाभी है, बर्जरर कर्ज केमा वष्टमा है और अपरा शुउ बीवमा परमा है। विकास शार्क्स अवना वतन उथी दिवने बनाता या जिन वि बारमें पहला कर्ज मिना था । वह दून बानको समझ गया था कि सी कर्ज केता है वह रोता रहता है। इसके अपने रीवतामचेमें वह भारगर्मित वार्त रिमी है -" इस दिवये को शुरू हवा। इम कांचे से म अरतक मुन्त हुना भीर न तीरानार्थन हुन्द्र हो सर्हुगर।" बनको कर्मकी बन्नहमें बड़ा हुँ म रदाना रहा । इसने एक बार रूक वश्वको वह उन्हेंस किया सेता मील " बोई जुल अनु भोगी, जसर वह नुपरीचे को किए दिया व मिछ सके है कावा कती प्रवार मन की । वह बाम ममुन्दको बीच बवा हेना है । मैं भी नहीं बदना कि किमीको जाना ककी उचार व दी, जगर ऐना व ही कि दुन करना सन्दर तो कियाँ औरको बचार है तो मीर तुर्दे स्वयं को तूमरॉक्से हैंगा है यह न सुद्धा नवी । देवी हामगर्ने तुम मनस करना दिनीची हवार मधी । कारत आहे. इन्हरती गृहिया ज्ञार करूर काम कई द्वारित का देगा । "

पालर प्राप्तानका का ना कि ब्रोटी कारों को बेमा वार्ती माने वार्ती नेता बाता है। उस निकारी वालें कान सार्वारित हैं और सार् कारें बारव है। वे क्या को के कि "कारों के कि बार्त हैं माने सार्वार कारा है। वा वार्ती। के पूजरों एक सुर्वारण कार्यूस वांत्र कारों के क्या के हैं कि अपने बारवें स से इस प्रशासन कार्यूस का कार्यू हैं और स हुई बार्तिने वच कार्यू हैं, पूजरीका कार्यूस कार्यूस कार्यूस की कार्यूस कार्यूस आप्ताप हैं, अपना पूजर कार्यूस कार्यूस की की पूजर विकारण कीरत स कार्यूस की की कार्यूस की स्थान स्यान स्थान स

पनका सन्वयोग सीर पुरुष्योग ।

हमारे मुनारी बहर मुनमन है। जममे न्याबीतर का किसप बाके बहा ता दे। उसके बारत बुठ बरते बाम तो को की नहीं महते भीर बुठके मं बरी बहिताई होती है। मिनारयना दानिन भीत बरोरवन दोहोंबी है। तो भारती रूप मन्यना चाहता है, यह हुमारिश बया महायना १९ क्यांनि देले पहारे हमारे बाम कारी सामान होना वाहिए।" हराइ मनुष्या भागराक वर्षाय है कि कर भवने बामबातकी रूपांच करों और अपनी आमरती और राजेश हिमाज रकते। इस साह साजात भेटनिराजा बोहामा प्रयोग बहुत बहुतम्य मिद्द होगा। पुदिमानी हुनी कार्म है कि मनुष्य अपने वर्षको अपनी आमन्तीके बराबर नहीं किन्तु उसमे हम स्वते। यत्नु वर, सर्वडा एक ऐसा सदा वस हतानेमें ही ही सहना है जिसमें रार्ष आमानीहै भीता ही रहे। जान लाका उपर्युग उत्तापरा बहा तोर देगा था। वह बहा बत्ता था कि । समुखको अपने रोजमराँक राजेंग हिमाय दरावा अपनी भीगोंके मामने रणना चाटिए, हमाने वड़ कर हमती बान उसके संपंत्री आमर्तीके और संपंत्रेपाली नहीं है।" जरिस महादेव गोविन्द्र राजि अपने वरण सब हिमाब हिमाब शर्म राजे थे। लक्षात्रण गामण विकास सम्बद्धाः स्थापः वृक्ताः सा । ये अपनी वर्णाको स्रोजन इन्होंने अपने वहीट सर्वका सम बाँध वृक्ताः सा । ये अपनी वर्णाको स्रोजन सारके हिए भी रुपया दे कर करते थे कि अ हममें महीने भरका सब सर्थ कारक (१) उनकी एकी उस रुपदेश सब सर्व हिल्मी पड़ती थी। सनदे कराता। हार्य गाको दिन बाढे शर्वही रोहड क्रिलाबर मोने थे। हमी ताह उग्रह साफ पहिनाटन भी काली आमहनी भीर नार्षका ब्यारेयार ठीक ठीक

्राधिसने हते व हेरेडा ऐसा टर मेंडल का हिया था कि ए बार उनकी छः वर्ष तक देः भर कर शाबा व सिला, पत्न वे हमानदार ब बार उनके हैं के किया । शुप्तने भेगरेजी शतासमाम अने देता ि नी से सेर्प्यम को बुठ बहा था वह आतिवासियों हे रिपरम भी सा हार है। उन्होंने कहा मा कि वहुम हेराने (हुन्जुंडने) होगाँने बहुत बड़ गये हैं। सायमेरीके मनुष्य विश्वत्र भरती आमर्तिके ब पूर्व करना चारते हैं। उनका रहवसारन देसे इसे हुईसा हो गया उमपे समाजको बड़ी हानि पहुँचवी है। हम अस्ते बघाँको वेरि म्यायलभ्यत् ।

भयांत् शतम कवानां चाहते हैं, घरण परिणास उक्या होता है। उस्में करहे, तमाने और धोमनिकायधी चीतोंडा बीख कम जाना है। वान् रिवास क्लो कि हुए चीतोंडा मुक्तना मही है। इस उनकी बानार्थ मिल्टबर्सन मुक्त मा इस रीकाव्य माना कता होते हैं।

हैमानदारिको निकान्ति ने कह हुत कोश विक्रते-मुद्दे बनना चारते हैं भीर हमारि बडी हुच्या रहती है कि नावे हुत समर्गमें यनावा न हों, यन्त्र स्वारीको वजाम साम्या हो इसमें यह सोत नहीं है कि इस भीरिको गएं नित करमाया देखाने कारे नहीं हुत साथी निकानिक कराने कार है सम्या सामर्ग विवेदां है हमारी कोशा करान्य बहुँग रहती है कि इस सम्मे मारिकी पूर्विवीको केर में, राज्यु जेमा कार्यों सम्मेन व्याचनात्रा केड गुण जाग रहता है भीर हमारी बयुननी कर्या सामर्ग किहीते दिन जाती हैं। या किस्ति हुत जारता नहीं है कि हमारे हनती हार्यों होने को हैं। या किस्ति हुत जारता नहीं है कि हमारे हनती हार्यों कार्यों कार्यों हों है। या सामर्ग क्रारी नर्युक-वहुक्ये न्यारीके वक्यारी कार्यों हिसीता है। या कार्यों कार्यों है। इसके हुए लिल्पा कार्यों कार्यों हिसीतार्थ होते हैं। में वेईसार होता नम्य क्यन्त है, वान्यु कार्य कार्यों हिसीतार्थ होते हैं। अस्ता मार्ग के केरी हैं, वान्यु हमार्थ हो हमार्थ क्यारी कार्यों कार्यों कार्या मार्ग हमार्थ हमार्थ क्यार्थ कार्यों हमार्थ कार्या कार्यों कार्यों कार्य केरी निकारत हमूक्यों कार्यों है को हम्ब हमार्थ कार्यों कार्यों

स्वार्यात सार्मुमार्थिय मिर्ग्युटम वारतप्रथम यह बार रेतिवीडी मार्चे ब्राह्मल्याचे वह विभाव का कार्या वो कि 'रावार्याटक राम्याच ने हर्गिल्या स्थान करून प्रस्ता स्थानी को किया प्रकार कर कर कर की सार्म्याच वहुनये मेरे एम मेर्ग्य के वा स्थानक के स्थानक कार्या हुए प्रशास बहुनये मेरे एम मेर्ग्य के वा स्थानक के स्थाप प्रकार कार्या के एन्ट्र इस्ता हुए स्थाप स्थानक कर के कि स्थाप कार्य कार्या के एन्ट्र सार्च कर हुए से स्थानक करवा कार्याच्या कार्य कार्य के एक सम्बद्ध हुए स्थाप स्थाप कार्य कर कि स्थाप कार्य कार्य के एक सम्बद्ध हुए स्थाप

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग।

जय युवक श्वन जीवनमें आते यहता है सय उसको अपने दोनों ओर नुमानेपालां हो एक एक हम्पी दतार मिलती है और उनके होममें फूँस जानेमें उनके स्नुमापिक अवनति अपदय होती है। लुमानेपालां का साप कर-मेर्स युवक स्वमापिक गुर्जों का इन हिस्सा गुप्त रितिसे निकल आता है। उनमें पचनेका यहाँ उपाय है कि यह पीरतासे 'नहीं' कह दे और उनके अनुसार चले। जिसी महोभनमें एक बार फूँस वानेसे फिर उस महोभनसे मुकादिला करनेनी तावत कमजोर हो जाती है। मगर किसी महोभनका पीरताके साथ सामना करनेने सदाके लिए एक तरहकी हाणि आ जाती है और कहूँ बार ऐता हो किया जाय नो पैसी ही आदन पढ़ जाती है। होटी उग्रमें को अचनी आदमें पढ़ जाती हैं उन्होंने हमारे परित्रकी रक्षा होती है।

हा मिलरने एक बार ऐसा दह संकल्प किया कि में एक अलोभनसे लुख ही चय गये। यम मु सिहर मयदूरी बरते थे तब उनके मित्र मिल कर कभी कभी शरायका जलमा विया करते थे। एक दिन उन्होंने हा मिलरको भी हो शिलाम दाराय पिछा दी । अब मिलरने यह पहुँच कर पहनेके लिए किताय सोही. अक्षर उनकी भीरतेके सामने नाचने को भीर ये युग्र भी न पर सके। भिलाने अपना जम बनावा हाल वीं लिखा है:-" जस समय मुशे अपनी दशा बड़ी मांच माराम हुई । में अपने ही बुद्रमंसे बुद्धिकी केंची धेणीपासे जिसपर में रहा करता या, भीचे गिर गया । यदापे यह दशा हरादा करनेके लिए बहुत अच्छी न थी, तो भी भेने यहा इरादा कर खिया कि में शराबकी शांतिर अपने मार्गामक सुराका बर्भा स्थाग न करूंगा और परमाःमाकी सदः इमे में अपने इराईमें अटल बना रहा । " ऐसे ही इराई ममुख्यके जीवनमें परिचर्तन बर देने हैं और उसके चरित्रको आगेके लिए पहा करते हैं। जिल प्रलेशनम ए मिलर बच गय प्रत्येक वयपुषक और यहे आदमीको उससे हमेशा बचन रहना चाहिए। शराब वाना बहुन बुरा है। इसमें सन्दूरन्नीकी बड़ा भाग नवसान पर्चाता । ओर पि मुख्यवी भा बन्त होती है। सर या तर स्याह वहा बन्ध थ छ । सबस बडा पाप जो सनुष्यके गौरवसी क. का इमा ह रामाव राजा है। यहां वहां बास्त शासव राजा किमायत-राग २०१ तन्द्रसमा जीव हमानक्षाम जा दाचा दालता है। विसी • १४, छन्डभक्त १६० दह ना कथता है १६ हम अतन साम्मूक शादराजी

29'6412 9486

*** ** * * ***

as where so weare advoca seates fach britte ilf i dill Le vit & we go to sig is rate ass ? . Butt de the fit of the test than the free test to ever the test the test the HE \$ 174 BY THE BEST BE OF THE WINDS ALL BEST AND THE SECOND SECO "end a new day of the rest of the case of the the terms." the former is some as so as as a modern see as another in all the course where we son to extend to be just that the jail For the name of another fire transfer the state of the date of the per me e en re a eme en una record amp ger bereit mod the way we are seen to annul their talling they there IN HE WE SHOP SHOW AND ADDRESS OF SHAPE SH HOW HE WAS IN THE SECOND COURSE TO SEC THE COMMENT OF MANY! the sty per ser proce a series of the ser of more for the that the said of the court to all sond banks by therethe or map link and wrote for at the state office which william an enter the section with given withy their won are some incidence as the new to pro-my beat was a tea an ou our are and and in a a constitute and finds ATTENDED OF THE SEE AND THE THE THE THE SEE THE ATTENDED ON THE that there a top is - and over it is an interest when were C 20 Millioned state it was not as the Print of the

ार प्रभाव प्राप्त प्रमान देशकार के स्थापिक कर और व्यक्ति पितारी की मूर्ति । प्रभाव प्रभाव कर करवा तहर वर्षण्यावस्त्र ग्रिट श्रामी व्यक्ति होती आहे हैं भारतक रोग्य कर करवा तहर वर्षण्या स्थापन करवा कर के विश्व स्थाप स्थाप प्रभाव प्रभाव स्थाप करवा करवा होते होता करवा विश्वास स्थाप स्थाप

धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

पर कोई ध्यान न देता था। किसी अच्छे कामनें हररोत कुछ मिनिट सर्च करनेमें ही यहत फुछ हो सकता है । चाहे इस बातपर कोई पकीन न करे मगर यह मच है कि टामस राईटने क्षपने उद्देशपर कायम रहकर दश वर्षमें सीनसी पूर्तीको, जो चोरी, टगी इत्यादि करके अपना निर्वाह करते थे, सुधार दिया । उसने बहुतमे लड़कोंकी भाइते मुधारकर उनकी उनके मातापिताके पास भेज दिया; यहतये रुड्के रुड्कियोंको जो अपने वरोंसे भाग गये थे उनके प्रतिंग पहुंचा दिया और बहुतसे अपराधियों हो ऐमा सुधारा कि वे बदमाती छोड़कर हुमानदारी और मेहनतके साथ कोई धंधा करने एग गये ह यह व समझी कि यह काम सहज या । इसके लिए रूप्या, समय, उत्पाह, विद्यमानी और इस सबके उपरान्त संचारियताको जरूरत पड़ी होगी। क्योंकि जिस मनुष्यका चरित्र अच्छा होता है उसका दूमरे विश्वास करने लगते हैं। दामम शहर यह काम भी करता रहा, अपने बुदुन्दका मुख्यूपँक निर्याह भी करता रहा और घटी मायधानी और किकायनके साथ अपने पुरापेके लिए यचन भी करता रहा। उसको हक्तेवार मजदूरी निल्ती थी। यह हर हक्तेम भएनी आमदर्शको वही होशियारीये वह हिस्सोमें बाँउ देता था-इनना शाने करदेके अस्ती समानके लिए, इतना मकानके किरायेके लिए, इतना पशींकी शिक्षाके लिए और इनना दीन द्वियोंके लिए। यह इन सब महींका बराबर नापाल काता था और कभी गड्बड़ी न होने देता या र

स्रमान स्थानना, वपरे पुनना, श्रीसार बनाना, नृकानदारी करना इत्यादि विमां भी पर्यक बरनेंसे अपसान नहीं है बस्कि दुसन है । पुनस्परे बहा था कि "से हंसानदारिये सीविका पैदा करने हैं उनकी क्यों लाखा राज पार्टिए लास्त्र नो उनको होना प्याहिए सो हंसानदारिये सामक राज नहां करना।" जिन सनुत्योन हिमा गिर पेरीये अपनी अपनी काल रनका गाल असना प्राणि सानक उनको नो इस सानका अभिन न होने से लाज के हमने केमा करना दी हो प्रत्ये परिकासिय सार स्वान प्रत्या करना था एक एक्सिस सरन पुराक्त में सोम प्रतान करने की पेक्स करना था एक स्वान कर कुम्मक एक हास्त्र की

Selections !

डरूक दिया कि "जात केर नामत तुम जी जीवनी बनावेताओं होते, तो एक मन कर गाँग रोजेंड डामें राज्ये, मुनाव महर्चा मार्जा व हो माजी हैं कर कर पान मांचा ही बेराके मार्जी हैं कि बहुत जी जीव रहा हुए हैं पित कार्ता के हैं कि इसके नाम शीवन जागे हो मार्जिया मार्गी महत्त करती भार राज्य रहा नहीं होता, जात बहुत कहे होता है कि बोर्ड मार्जन मार्ग मार्ग्य स्कार अना करती नाम मार्गिय एक्टम मार्ग हो। कुराये जुन्य भीने

बार रामा राम नहीं होता। जाता बहुन बस होता है कि बोरे सामून सम सन्दर्भ रूपा अवसे का जान नीर सुरक्ष जा है। इससे रहुन पोरी है हम दूरा है। जारी कार्यानांत का जाने बोरे, नुक पड़ सामा बोरे हैं। वह सामें की किया सह सम्म बस्त प्राची, तम दूर समाने किया होता देश का स्वाप्त के हेशन कर सुप्ता की कुछ सामा किया होता देश का स्वाप्त के हेशन कर सामा हुए स्वाप्त की साम की सामा साम हुन होता है। हिस्सा में हम साम त्या की साम सामा मां। नां का हम हम हम हिस्सा में हम साम किया हम सामा मां।

स्पारंत १८० जनकी वह वस सहै। स्वान द्विवारित व्यक्ती स्वृत्त स्वान कम्मा १०, चनन सन्द्र कार यह समझा तीन काम हात्य हों। स्वी है रागो क त्रकाव हिए जाने स्वान हिंदा की र वृह्यन के तार्म स्वीत स्वीत हिंदा स्वान क्षां कार्य कुर्ग कहीं चन है जाने कुर्ग प्रकृत प्रकृति प्रकृती का कार्य कार्य कार्य हिंदा कार्य कर साम है है। स्वी वह का्म कार्य क्षां है। कार्य कार्य होंगा साम साम्रोक्ष वही साम कार्य कार्य कार्य क्षां है। कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य क्षां है। कार्य कर कार्य कार्य कार्य है। कार्य कार्य कार्य है।

मारका ब्रह्मण वृष्ण ब्रह्मण वृष्ण मारका प्राप्त वार्ष्णां वार्ष्णां वार्ष्णां वार्ष्णां वार्ष्णां व्यक्ति वार् बार्यमान वरण राज्यों कीत स्राप्त स्वत्व करण प्राप्त क्षण क्षण कार्य क्षण कार्य कर राज्यों की स्वत्व कर कार्य क इस्त वह राज्यों ही साम प्राप्त कार्य कार्य कर प्राप्त कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कर प्राप्त कार्य कार्य

and the second s

THE MEAN CONTRACT OF THE STREET STREET STREET

घनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

तुनके सिवाय और किसी अच्छी बातका सवाल नहीं है वह चाहे अमीर हो ज्ञाय, परन्तु यह फिर भी संभव है कि उसका चरित्र दो कीड़ीका ही बना हि। पनमे चरित्रकी उन्नति नहीं हो जाती; बल्कि जिस तरह जुगन्की चमकके चरण जुगन्की भद्दी सुरत भी दिसलाई दे जाती है उसी तरह धनकी चमकने उस धनके स्वामीकी चरित्रहीनतापर सवका प्यान जाता है। अब होग कहने हमते हैं कि यह इसना बड़ा आदमी हो कर भी इतना

दुराचारी है।

यहुतने होता पनके होनपर अपने घरिषको स्योहायर कर देते हैं। ये उन यहाँके समान है जिनको आफ्रिकानियामी यही विधिप्र रितिसे पकड़ते हैं। ये होता एक संग मुँहमाले बरननको किनी पेड़में कम कर बाँच देते हैं और उममें चायल राग देते हैं। रातको पेड़र पहाँ आता है, उस यस्तनमें हाथ हालना है और अपनी मुद्दी चावलोंने भर होता है। परन्त यह मुद्दी पद्दी होनेंजे बारण धरतनके संग मुँहमेंने बाहर नहीं निक्टमों। येड्समें हतसे समझ नहीं कि मुद्दी खोल कर अपना हाथ निकाल है। वस हमी सरह सबेरे तक यह वहीं फैंसा रहना है और पठड़ हिल्या जाता है। इस्टिंग पड़ायेंको हायों स्तते हुए भी यह अस्यन्त मूर्ग मालूम होता है। इस संसारके चहु-तसे मनुत्योंका भी पढ़ी हाल है।

 BUCKER MINE I

रंद इंग्लेंबर रहा क्वें बहुन हो पूर्वेद ही शुरू है। वन्ते बहिन बीर भी राज्ये हुन दिख्या बहु हो होने और पर समझ फिल दिशी सामी रुट रूप रूप रुद्धा रूप वहाँ है कि वह सामकी कई बस दिया बात है। इस रुद्धा सन्वाद शीम क्यार मेरा दी बाद, मा यह सामकी

प्राप्त करण भारे । यहिन कार्य पूज केवल विकास कुरते वन वर्गान्यको अपने wer wer ar minime mier miet, ift ma get fi gungen mile marre was down ners arrie off fourer arms the nex th. 1 m है. बराव गरंग गरंग आवंति इस ब्रम्मावत कर्मा है है सब अगल माना हा लेव माना रोचा राजा है। इसकी दूस बार्मी पूर्ण A ware when its speek knows thereon were week of a good of the and were a se has more word with the blacker fire BEARS ITMES STREETS BONE , SHIFT MINES BREAKS HALL WIT दराव वर द कि इन करायारि वर तीर जान कररदी, वन कराने. देरी कार हो। राजाही कवारीय सर्वत है। वह वा देवांस कवा बीमी ब्रम्पेस तह साफ कर काचुका देखते जातु काचला कांचा साजद कांचाच MINT SPEED WAS STOR WIND \$700 WE SET & FLORE FIRST was tacket ups was advance, were made from them an & Third six and toward arrang was so may make other property ar us all and allowed trace or one find a fig make the WELL AND I ARM WE AND WHOLE WHEN ME HE HAPPET to the tale or a wear all forces we b

APTHE E MAN AND MAN WATER THE A MAN OF THE PARTY AND THE THE THE PARTY AND THE PARTY A



स्यायण्डम्बन् ।

gu anag gang pangun ting a ing Pilg Segua ahi sestemb a ya cinguna gan a a bina Bi ya cinmana agi ang Pilg a malaling ganal bilaw mia and binami galahi a malaling ganal bilawin at ang ang bilawin anag bilawin anagang amala Bilawin at ang anagan anagan



आंतरकी स्वास्त्रशिक साराज्यां के रिज् तिनवी हम समस्ये हुए हैं समये तिवास मन्द्रस्त्रीको जमता है। आस्तरकंते एक जैसोत्रके सनने एक मिरको हैंस्टेंटर तम भेता और उनमें दिल्या कि ''की साराव्यक्ति मृत्यमे दशा है स्वीकि मेरी पानत्रतिक व्यक्ति हैं। सिक्ती व्यक्तासम्में निर्मत काम कर्म मेडी सांकि बहुत कुछ इंगोलर निर्माद है। हम्मिन्द तस्त्रुपतीका स्वास्त्र सम्बद्ध सपुत जमरे हैं। सामिक्तिक समस्ये भी इसकी अस्तरत पहुनी है। विमारियंगि से अनोनंत्र, सर्मान्त्र, सनुमास और सम्बाद पहुनी के भीति के से जीत-सर्म कुमा करने कामों हैं, मो बुक क्यान स करनेका उन्ह हैं।

सर आहातक स्पृट्नकः जीवन इस बानका उदाहरण है कि उपनि गुरुने ही भौतारोंने काम केटर कैसा लाम उदावा या ३ वे पहनेते सी मुण में, पान्यु आहि, हरीएड शीर बुदहाडी चलानेसं बड़ी सेहरून कारे थे । हे माने रहनंत्र क्षप्तरांत्र भी लटक्ट हिन्दा करने थे, और हवाये चक्रनेपाणी चित्रया गाहियों और नरद सरदर्का कर्लेडि नव्हे बनानेमें गरा ही स्थान रहते थ । अब के कई हुए तब उनकी अपने मित्रीके दिए होती होती 🌌 भीर शासमारिया बनानेमें बचा अलेड् आला वा । स्टीटम, वार्ट और स्टीकिस्सन की बचानमें भीजाति हमी नरह कान दिया गाउँ है । वर्षि में कष्टदानमें ही इनकी आफोकति व कर केते, तो कड़े होतेगर सायद ही इतना बाम कर महत्, जितना कि बन्दीने कर दिलाया । जिर महिणायाँ बीर बन्नडारींडा करेन इस वर्ष कर आवे हैं जनके जारियांड शिक्षा भी मेंगी ही हुई वी । कर्यानमें उन्होंन ज्याने हार्योने न्य बाम दिया या भीर इमर्ग इन्हेर्न ब्याना उपाय सोयनेकी शायिको और पुरिवारीको बासर्ने बाना गील दिया था। विन सबहाँनि हामनीरडी शहबन बाने बरने श्रमी इक्षेत्र का की है कि सब उन्हें केवल आसीयक बीन्सम ही करना पाना है। कर्मान की मार्गानक परिचम करती चानी प्राथितक शिक्षाने का। साम इप्राप्त है। एक एक ही जन्मका बचन है कि नामा सरस्रताहोंच सम्मक्त धाराह दिए साम शहान प्रदेश प्रदेश क्षानुश हो। प्रार्थित देश दो पार पर्दा नराना प्रशास अपनी राजुरकना स्टाननंड किए और सन्दर्शी राष्ट्रि बार्ट बाद त्या मान्या प्राची वर्देगा। स्ट्रांगां हाम द्विया त



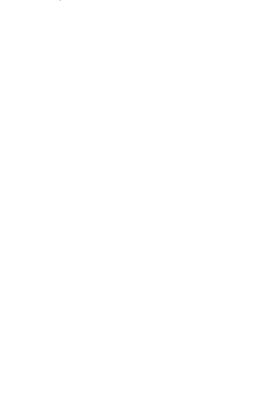
व र र''अवर्गि पोची क्यारी सरम् काम कान कानव मुस्ति मी भागित सा रेस महत्राहरूमा सोह इसीमजीलयाक वृश्यित हैना वर्ता है। mses तर के वह त्रकार है कि तन्त्रकार्य संभावन मीन बाज और त

stor en sit ung es fu flemiliete friege fein semfre pile मार १ तामा मीर मनून समहा है। " खनदी गर्दम हान हीती है, " ! su en mene frau man fran mit å e meinfigt ibrie करण कर वक्राल क्षार क्या है का जाना बान प्रशास किए बार्ना में an are account were to sole and affered add bu finers before क्तार में दिवस व स व्हार । सन्यान और अनुपार सोनोंस प्रिया समार्थ कमता है। लेख हुएका अकाल बाजी कार्यन । बुक्का नाम मीहेपा केंप Wit mil mer in miles fame und anne menn nichte men ur f कार्य । यस वातवन क्रम कावन वार्य के क्रम में के न काल क्रमने फिननी प्रकृति ।

मन है अर राज्य केंद्र राज्य होते होते हैं, और वर व्यवस बहेर और मध्य AN ALE GROWN SPINISH HE RESPONSE WARE & STRANGE MARRIES WITH MY S to 4. Regard speak where were necessary their in the exist. a s more that was more more a . You may any might without the Sent , then and stome or extension and marked at suppose fines es when the tree is, and springs and affect and i मक्ष्यान कामान पर्व द्वानाने कालावार्गीकाल मीता तो , कार्या मुनावस क्षाम M marte grava finada na entre francesta Archama atom de e EA OF IT SE THE ! S WE WISHED SHIP FOR WHOME atherine place of the same of the second property departments

is the training as the new arrange arms a first through a real color and a separate ~ 1 mm mm mt gt

. .



Ant absend 'th

te fis. 4 2 . unes unt min mit funet aft fir une mudt wint

का कार र रावश्य बाद का केंद्र है।" व्यश्चित सुद्धानि के देवने देवने पान 5-देश अंश दे, दूसमें क्वीप का आर्था है कीर दूसकी कार्योग राज अर क्रांत का कावह बादण हो आर्था है। जाड़ स्थार सिंग राज अर्था कार्या कार्या कार्या वादा सामा स्थाप स्थाप स्थाप

प्रमुख्य करणे हैं प्रमुख्य करणे हैं है प्रमुख्य करणे हैं प्रमुख्य

कर्मा हो। हुन्छ दिन्छ विकासका कर काल प्रमुख्य क्षेत्रण स्वास्थ प्रकाशित्रण पितंत्रण परिता प्रति नेतिकार काल काल है जीव प्रश्नेत करना करना की प्रति ने प्रकाश करना मुल्ता क्षांत्रण हमा त्या करना केती करना करना करिया है। कर्माकार करना प्रतासका रज्ञ हम के प्रत्य करना है पूर्व करने हमाना स्थाप महा कर करने हैं। एक क्षण करना करना करना होते हुन्य के हैं। क्षण

\$5. Pri man door to core region to announce and the PPI I been also a man or common to the property and a second and the property and the prop

पूरा अधिवार समा हैं, तो उसमें तथ चाह नहीं आयानीमें बाम हे मबने हैं। एम लिए विके यह बाकी नहीं है कि हमारे पाय पुरुषे रवानी हों ता हम यह जातते हों कि अमुक अमुक याने अमुक अमुक पुरुषोमें मिलीं। तीयनके स्ववहारके लिए हमारे। पुदिमें हो ऐसी वार्यवृत्तालमा होनी चाहिए कि हम उससे जब चाह बाम हे गई वा प्रवृत्तालमा होनी चाहिए कि हमारे पायर सो स्ववंदा पह गई कि हमारे पायर सो स्ववंदा दे हमारे पायर सो स्ववंदा दे हमारे वार्य चारी कि हम से पायर सो स्ववंदा दे हमारे पायर सो स्ववंदा दे हमारे वार्य चारी कि हम वार्य वार्य चारी हमारे हमी हमारे वार्य चारी हमारे हमी हमारे वार्य चारी हमारे वार्य चारी हमारे वार्य चारी हमारे वार्य चारी हमारे हमी हमारे वार्य चारी हमारे वार्य चारी हमारे हमा

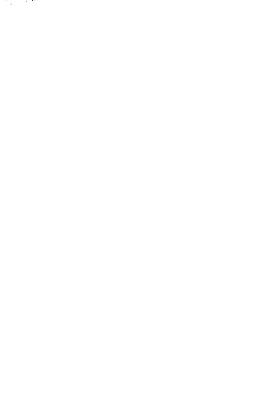
ह्याचारही तरह आगोदारमें या अपनी उम्रति करनेमें भी निर्णयमित हुए निभय और नत्यस्तादी जरूनत है। इन गुणेंथी हुदि तभी हो सबनी है जब नवपुषरोमं स्वावलम्यनसील होनेकी आदत्त दाल दी जाय और उनको हुए हुन्समें जहाँ तक हो सके स्वयं बान बरनेमें स्वतंत्र कर दिया जाय। सहुत नियादा उपदेश करनेसे स्वा शोकन्येक करनेसे स्वावलम्यनकी आहतें नहीं वहने पातीं। अपने अपर विधास क होनेसे हमारी उपातिमें बहुत बाधा भा जाती है। अपने अपर विधास क होनेसे हमारी उपातिमें बहुत बाधा भा जाती है। अपने पर्लोगने हुए बोड़ेको रोक केना ही जीवनकी आधी आसफलताओंका कारण है। टाक्टर जानसन वहा करते थे कि '' मेरी सफलताचा वही कारण है के गुरो अपनी शिक्षपेपर अरोसा है। जीस मनुस्वका अपनी साफियोपर अरोसा है। जीम नुस्य हि शीती और हसमें उनकी उपतिम बहुत बाधा पहुँचता है। जी मनुस्य बहुत काम कर वाने हैं समझों कि वे कोशिया भी वहन कम करते हैं।

वहनमं अनुष्य अपना सुधार कानेकी हुद्या तो वतते हैं परन्तु मेहनतसे वा उसर १०० वहन जन्मी है - वा पुरान है। हाक्टर जानसन कहा करते था। स्वास्त करा करते वा जात है। यह बात हम असनेक भी पाई वाली है। आज कर बहुत लोगीका प्रमुख हुत्त करता है, परन्तु य महनतम जी स्वास करते वह कर बहुत लोगीका प्रमुख १ अन्य महनतम जी स्वास्त करते वह करते हैं। स्वास करते वह स्वास्त अस्त है। स्वास करते वह स्वास करते वह स्वास्त करते था। स्वास करते वह स्वास करते वह स्वास करते था। स्वास करते वह स्वास करते स्वास करते वह स्वास करते स्वास करते हैं। स्वास करते स्वास करत

वन्या या हि वह उसको विना और हरण याद कारेक्टा कह व दें। आहरण सारावर्गने ऐसी दूकारे बहुत सकारित हो रही है विवक्त समावा 'दिया देंगा दें बीरोनी रिप्पाना' है और उस देकारे हैं है पुरु के है बारो वस्तों सोल सेटर परने हैं। दो एक पूकारे देंग-भावका ही हम दिवारमें 'हैं हैं' बारे स्वारं हैं। योदेंगे कारावाल गुकार और कुछ स्थाप (Experi-सारावाद) ने नवार इस रामावा लोग के हैं की तब हम दिवारमा होंगे (जारित देंगा होंगे हैं) हो दें तोड़े वागीको काम रंगा होगा हुमा देख देन हैं भीत सामावाय (Phot-phorus) को आपनाम (Очуко) में जानता हुमा देन के ते हैं जा बाता के ते हैं हि हम शानावायों हों। देगा जान चारे कार्या सुने दहनेने सच्छा हो, वस्तु वह दिवरी बार्यों मेरी सामाजा। इस साह हम बचुना समाय देंगे हैं हि हम विशा वाने हैं, रान् सम्बन्ध हम समाया नेक्टर के कर वह हम बचुना समाया हम स्वारंग हम स्वारंग हैं।

सरपुराव पाणवन भीर वरिधाई दिसाई। ताव आम घरेडा मुस्स सार्गी हैंगों हैं। यह जिला सार्वी है। जेगा कारोडों सम्माहंड किन् हुई बीव में तिकल आगत , राज्यु बालाओं पायचे कुछ सात्र मंदि दिख्या। इस्मी कुछ तेगेड किन् मोम कैंगा हो जाना है भीर सम्माहंगे जुक नारही तेगी मा सार्गी है। याण्यु चुँकि इसाम्य बोई निश्चिम द्वीरा सार्वी हराण मेंने निराम किए आग्या कोंग्रेस कीर कोई का सकरक भी सार्वी हाम्य, तुन किन् कार्यो बोई सार्मादक नाम सार्वी होगा। जगे जानवा हेक्च क्यान्य कुछा पड़ाने बोई सार्मादक नाम सार्वी होगा। जगे जानवा हेक्च क्यान्य हुए गाय पड़ाने बेन्द्री सार्मादक सार्वी कार्या कार्या होगा है। इस्मी निराम प्रति होगा कर्या हो। बेन्द्री सार्मादक सार्या कार्या होगा है। हाम हार्यो ही क्यान करा हो। सार्वी हुए करणा करतेथा केंद्री कर क्यान दान करते कर सार्वी हो क्यान हो। हार्ग हुए करणा करतेथा होगा केंद्री सार्वी हुए सार्वी हार्या हो।

हरता है। मार्ग के काम जान देशने प्रथम है हैं देशके प्रोट्स प्रणादि और रोजन नहीं हो जबना । है जेंगत देशन जान जान देशना चारी हैं और जान मात्रे दुरोधों केंद्र पत्रोदे होते हैं है जाई दुवाई स्वाट स्वीटी



और उस दीलतका कैमा बयोग किया जाता है। बचारि किसी उपयोगी उद्देश्यको ध्यानमे न रखकर भी हम अपने मस्तकमें बहुतसा शान संप्रह कर सकते हैं। परन्यु ज्ञानके साथ अवसनसाहत और बुद्धिमानी भी बानी चाहिए और माथ ही माथ सक्रश्तिना भी होनी चाहिए । नहीं तो यह जान दी कीड़ीका है। एक विदान नो कोरी मानसिक शिक्षाको श्वानिशास्क बनकामा काता मा वर इस बान पर ओर दिया करता था कि ज्ञानकी जहाँ हो सुम्पवस्थित इष्टारूमी मिहीम जमना चाहियं और उसीमेंसे अपना भोजन श्रीवना चाहिए। यह सच है कि सनुत्य ज्ञान प्राप्त करनेसे व्ययम पार्थिने वय सकता है; पान्तु वह रगार्थ-परतामें नहीं यथ अकता । स्वार्थपरनाने उसी वक्त शुटकारा मिछ सकता है जब मनुष्य उत्तम नियम यना से, उनके भनुषार चले और अधी गाउँ जान जानुन देशा भारत विशेष करें हैं हैं कि शिष्य ही इसारें लुक्तें में ऐसे बहुन महुष्य आर्ते इसार के 1 चढ़ी कारण है कि शिष्य ही इसारें लुक्तेमें ऐसे बहुन महुष्य और है जिनका सात तो विशास होता है, चंदन चंदित संदेश घड़ हो से हैं। सबमें स्टूर्जा विशा होनेदर भी स्वाचदारिक बृद्धि बहुत कम होती है। ऐसे क्यम मुहार (श्या हानार का स्वायहातक द्वार बहुत कम हाता है। "र" जार्म अनुस्व कही क्यों दूसरे किए स्वाइत्याद से यह वह होने वनहीं दूरिया रेमक्टर उन केंग्रे परिवर्ग सारधान रहते हैं किए होग कस्प्री परतर हुने कार्य हैं। आप कर नहीं नहीं रही हुन पहना है हि " जार्य क्या है" पालु पाताकरा, अपायाल से एनुला सी ता कहीं वहीं पाली मुदियानों के सार कही जाय, तो एंग्रे जान्ये दुष्ट सतुष्य और सी अपर्यंत हो जायें भीर यह समाज, जो बस जानको बहुत अच्छा समझता हो, विवाद-समाप्त क्य काय ।

सामन है कि हम जाम कल जुमके पहने-पहाणेमें बहुन निपार मारक समामन ही । चूँकि हमारे पान जुमने जुपकामक, विधारक और मारक-बार्ड, इन किंद्र मारक हमाने जुपकामक, विधारक और मारक-बार्ड, इन किंद्र मारक हमाने कि हम बहुन कहने कर रहे हैं, बारम में पहुँचा मारकी हैं। निम नाइ धनके केवल क्यांगी वन उमेरी ही बारा भी पहुँचा मारकी हैं। निम नाइ धनके केवल क्यांगी वन उमेरी बारमा बाँ बार्गी: इसी ताइ करने साम केवल पुनकाकर एस क्रेमें दिवास बाँ बार्गी: वसी तह कारने साम केवल पुनकाकर सम क्रेमें दिवास बाँ बार्गी: वसी तह समेर कार कर कार की मारक होंगी पुनिपार मेंदर हैं, में भी पहलेड समाय कार कर की नाम है कि दिशासन, परन, मारस और परिवार किंद्री सामीन सार्गीर क्यांगे हैं। सम बुद्दिक स्थारी वन मारने हैं।



कानन्दके गुरु सहारमा रामकृष्ण प्रस्मद्वेश बहुत हैं। कम पहे जिसे हैं। ' परन्तु उनके अनुसव जानकी हनती मनिदि थी कि तैकड़ों निहान् उनके प्राप्त उपरेश मुननेकी भाषा करते थे। 'बहाराम हिरायाजीन किनती पुरनके पहें।' भी!' महाराण रणजीतासिंह चन्ना छितना कब जानने ये हैं सम्रार्थ अवसर े भी बहुत ही कम पहें थे।

सत्तरण केयल सहुतनी पुलांक पए छेने और बाए कर लेनेंगे हुए महाच गारि है, मरण तो पुलांक परत्तेक उत्तेश्यों है किन उत्तेश्यों है उस सामक
प्रयोग विधा जाता है। छात मास करनेंछा यह उद्देश्य होना चाहिए हैं
हसारी इदि परिच्छ हो और हमारे चरित्रकों उसकी हो। हम स्मीयक दकते,
मुली और उरपोगी करा, भार जीवकड़े हरएक कहे कार्यकों तिह करवेंसे
माधिक परिच्छारी उत्ताही और नियुज्य हो आर्थ। जो मतुब्र्य सर्पासी
माधिक परिच्छारी उत्ताही और नियुज्य हो आर्थ। जो मतुब्र्य सर्पासी
माधिक परिच्छारी उत्ताही किशा दिखा करते हैं उनकर चीता ही परत्य होगा
है। इसको दक्ष नक्षा नक्षा नक्षा करते कर अनकर चीता ही परत्य होगा
है। इसको दक्ष नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा ने स्वाद कर होगा
है। इसको दक्ष नक्षा निष्ठ हमारे कर होगा नक्षा निष्ठ नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा निष्ठ नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा निष्ठ निष्ठ नक्षा नक्षा निष्ठ निष्ठ निष्



स्थायलस्वतः ।

करने पहने हैं भीर समाजमें बादे किनवा ही मुखार हो जान, परमु बहिर बांग मनुष्योंको संतिद्विके कान-कांग्रोते पूरकारा नहीं जिल सकता—में काम-कान भी उनहें करते ही पहले हैं। अनी मेहकान कवाया पहे, हम अध-रहत हमार सम्बद्धित है। वहि बोई हम सकारकों हम्बद को भी, हो भी यह समाज नहीं हो सकती।

सब कोग मेहना मजुर्गिक बाम वहाँ छोड़ सकते, बा बमी संसार्त होगा रहेगी। किर श्री हमारी सामझें बहु कभी कहूँ करोमें पू. दी. मनजी है। भारत हम बामजीविष्यों वा मेहनता नाजहां करनेवाफ़ी होगा रहे पू. दी. मनजीविष्यों वा मेहनता नाजहां करनेवाफ़ी हमार केंद्रे कर है, भी दमकी दाता हुएया बाद——है एक साहक केंद्रे हमें के मुख्य नव वार्ये । धेड विचार पार्थिक साह करी हमें हों हो गांधियों मार्थिक पार्थ भी करी कर हमें हो हो हो हमार्थ ह

बहुतां मनुष्य कामोदाको कामों निरास और उन्तराहीं व है जाते हैं, क्योंकि से सामों हे इसी जाती नहीं हुकने करना विजया है अपने आफो सीम समाने हैं। वे बांत बोंका का शहर में कि उसका मुक्ता हैं। है बार प्राथा। में जातका प्राप्त हिम्मी का पात समाना का आहे हुसाँहर उन्हें उन्हों आहे कि प्रमुख्य जात की का बाजा नव नकता का भा निक्का सामी है। एक बार एक हरना करना का मार्ग एक पाता । जाताको हुसाम कारण वाताना वाता मार्ग एक्या का उन्हें का स्थान का पाता मार्ग कि उन्हें का सामाना का पाता का प्रमुख्य का स्थान का सामाना पाता है। का सिक्ता का प्रमुख्य का स्थान का प्रमुख्य का पाता है।

अपना स्पार, मुविधार्य बीर गाउनार्यो।

आत्मीद्धारके विषयमें भी ऐमा ही नीच विचार गुष्ट कोर्गोमें फैला हुआ है और समातमें मानवी दीवनके विषयमें हो विगयदिन्तमें न्यूनाधिकरणमें सदा मणित रहती हैं वे हम विचारको जैया करती है और आप्यामिक गुलोको पहाती है; परन्तु अगर हम उमको हुमराँमें बाड़ी भारनेका अपया मनके हारा मना हरतेया मापन समार है, तो हम उसके मृत्यको बहुन कम कर हेते हैं। यदि मापन अपनी उद्योगिक दिए और समातमें अपनी रिप्तिको जैया करतेले लिए परिपतिको जैया करते समय अपने रिप्तिको जैया करतेले लिए परिपतिको जैया करते समय अपने अपया करते आप वह निस्में ह अरवस्त को चाहिए। महरक्षा करते सामा करा हेता चाहिए। सहरक्षा करते सामा मापन प्रता चाहिए हो हो से बीर्ग के महर्म करते अपने क्षा करते सामा मापन स्वाच करते का मापन करते होता करते सामा करते का मापन का स्वच करते का मापन करते होता करते का मापन करते होता करते और तकसमा है; क्षांकि स्वचलता वारे झानमें नहीं मिकती, किन्तु कामकानकी वार्तोमें वरिक्षम करते और उनपर ध्यान हेनेकी आहत वालनेसे प्राप्त होती है।

बाद हम शिक्षा पावर केवल जोज दिलानेवाली और हैसानेवाली पुस्त-काँको पट्-पर्कर मनीविनोद विचा करें, को इसमे भी शिक्षाका स्वभिचार होता है। आजकल बहुतमे मनुष्य ऐसा ही बरते हैं। हैसी, टहा और जोज दिलानेवाली वार्तोंके लिए आजकल लोग ऐसे पायलसे हो रहे हैं कि हमारी पुस्तकोंमें ये होनों बातें लूब युस पही हैं। आज कलकी पुस्तकों और पाय-पार्ट्रकाओंमें सर्वेसाधारणकी रुचिक अनुसार बृद्ध चटपदी बातें भरी रहती हैं, जो आनन्द्रवायक और हास्योग्यादक होती हैं और सब तरहकें लीकिक और पारमाधिन निषमेका उद्देशन करती हैं। आज कल उपन्यास पदनेका लीक वहन वर्गा जाता है परन्तु इस जमानेक अधिकाश उपन्यास ऐसे हैं जो सब नेते पर नेता शिक्षकर नवपुवक्षेपर बडा पुरा असर हालने हैं। वे उनको स्वार्ट्स जन तको सर स्वार्ट्स अन्योग अलग्ने वालको वहने हैं और उनके

१६ अवस् अस्मा ३०न वाल आर अध्य असी व वेहम इल्ला राहर १ विस्म भित्रमधाला ४०व वालचा १६ वराची प्रता अन्द्रा है; १८१४ व्यंत सुधा सानास्त्र जान (क्लाना १) इस प्रवास्त्र साह प्रशे १, १४ समुद्र स्था वृत्त १७७३। युवर, सभा वृद्ध वास प्रता है नार उस्त हुए स्वसन्त्र सालन्द्री शिक्त मात्राय विशोधी योचा काम नहीं जाए । अल्ला काम उनी स्वाइंडी सुन्धीये बहुनेये सी माद स्वन्त के जाने का करेंगे साले कुरावर्त्व महिन्द्रीय महिन्द्रीय सिन्द्रीय सालने के स्वन्तीय सिन्द्रीय मादनी सिन्द्रिय के प्रति के सिन्द्रिय सिन्द्रीय सिन्द्रीय सिन्द्रीय सिन्द्रीय के सिन्द्राय के सिन्द्रीय के सिन्द्राय के सिन्द्र्य के सिन्ट्र्य के सिन्द्र्य के

ज्यानन परन्यव रंजवांच सद्यवांमण हागा है जीन इस बंगे सभा सम्बी है सान् जोगा है सानद स्वावांक्य सिराय करते हैं। इसमा हमें स्वरातिक स्वाद वर्ण नवा स्वादांगा, कहा त्रामा है सिंद नहीं करते दिन्ता किता कर के स्वा स्वाद कर हम स्वाद्धित कर हो है, त्रा व स्वाद हो स्वाद है, प्रस्तु पनि कर है स्वी स्वाद कर को और स्वीप क्यान हो, सा दवार दूसर होगे ही स्वाद है। स्वाद सं वार पुरस्तक निम्म प्रान्ता है स्वाद पर पर उपने दिन दूसरे स्वाद सं वार पुरस्तक निम्म प्रान्ता है स्वाद पर पर उपने दिन दूसरे स्वाद सं वार प्रस्ता है। स्वाद प्राप्त कर पर स्वाद प्रस्ता हो। स्वाद पर स्वाद पर पर पर स्वाद पर पर स्वाद पर पर स्वाद पर पर स्वाद स्वाद पर पर स्वाद स्वा



स्यापाहरूका ।

पाणन नहीं कामा जोर सेरा फिल स्पर्देश कार्योक्षिण रहना है।" इस गाउँ उनमें मिलका क्षत्रियों थीं, तो थी के व कर सके। से कुछ बहुन करेनी सुनी रहे भीर अनेसे बुड़-बुड़ाड पर गये। साराहित्स भी सीहा जीवन कार्योंडरेंड जीवनमें किल्हण निर्मेण

या। उत्पक्ष न्यापन जीवन लाग्य, चीरांग्य, भागीदार भीर विधोपनिकारित विभिन्न उत्पादन है। वे बार करने करने भीर है। गोड और निर्मन करने न्यापन व्यक्ति क्यानिकार है। हमा के कारि विशेष कर की कि विशेष कर की स्थापन व्यक्ति क्यानिकार हमा के ऐसे कार्यों हैं। येथे वे बारे हमें कार्यों हमा के कि विशेष कर के ऐसे कार्यों हैं। येथे वे बारे के व्यक्ति कार्यों के कार्यों के कार्यों के वार्या कर के ऐसे कार्यों हैं। येथे वे बारे के वार्यों के वार्यों के वार्यों के बारे के विशेष कर के विशेष के विशेष कर के वार्यों के विशेष कार्या की स्थापनिकार कर कार्यों हमा वार्यों के बारे के विशेष कर के विशेष कर



९ वर १ क हुई लोग अधुकार्य अधुका सहारोग स सुबै हु 'न सह एक सुवती के " St रम मह प्रतिक का हर्यन्त स्थाप्त के बताब है है शालागान ती है रिका रा १६ ४८ इस्के इन्हें हैंके रखें स्था क्षाप्ता और कुर्मिन

fram bit bitte funt ibent nem bente fiet fit biet. it is at we assent the grand well and, that Al मान र पर रहने व्हरणपन्य किया है । यह बोन बर्गन हैसाईबप्रदन क्षेत्री है

To so a 5 artifica and must bear beit afraites dimi were tiet at an eine bie auf a etf aus agregen at auft at i क्यान १४११ त नव १४३ हर हे इत्या हेक्चार, खन्मे श्रम, खार्डे श्रम हमारे the mind of the sea of the section o

1 20 2 15 15 8 ture as so it is notified that better all, but the to the first processes were bie gat fort alle

men and to it mis care and during at a martha M. pert it riet mit tiele tiene ers genet tein untere ? feb.

まいても PP かき と 一般性 SEE 特殊性な ME ME 性に 性が 表が付ける Boom fort & and to expend grow large are are a fa 14 M ft. MINE I THE PORTS AND A SUR ARE AND A STAND AT ALL B I THERE THE STORE STORE STORE OF STORES OF A P the the form come for so so given in some from the A F IN I TE FE SEES STOOL ME GENERAL WE WITH

6.5



ल्या क्षेत्र का का नाम है। जार का मिना प्राप्त के का मेर्ने हैं, के रूप के का काम का का का का के कि कार रूपमें वह दिवस हैं। के का पा कार्य कर काम है और दश को कोईना वह वर्षमाईन में का का पा कार्य कर काम का का का का का को को को को का की का की का

च्या ४०३० है। तामूच्य पूच्य इत्ता का व्यवसा है। तम व्यव मंग्यान १ जान नकाफ देन कार्या होता कि इस किसी कार्यों की स्था १ ता च्या - पत का्या व्यव हार्य होता कि इस किसी कार्यों की उसी की मंग्यान १ जाना कार्या ही जिल्ला पूच्या देश वीत केंद्र में मार्थी नीति हैं हुए आकार्य का वहीं '' एक्यू वर्षि वस केम्स इस्मी सीचें

rifted to seall an a core ground water and deputie and last and after the two supplies the same and the fa with scour & will will die die die fiebene die benn DOME THE REPORT OF THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PA more more along that anima or more also if , see frestant in E to offere typ that a finance maps of from the Wi miljer adjungen grow by then sent, morned sprint appoint t start the me see the sense me the meets my most of the bitmen of supplies were served and served the servey where were fire for type secol, puppe the reference may gen by the the their amporter state success made until Course in former and out the success AT AN ARREST OF THE STREET OF SCIENTIAL SAME OF THE OWN SHAPE OF STREET AND STREET SHOOT I KNOW WILL SEE THE THE MANNEY AND PARTY materialistical about over more recent often disputed Al makes the war a summer of makes of the same 2 - 100 and 10 1 200 pg mode 2 to 440



लियना जला हुई शकड़ियोंसे सीमा था! उनके पिता अत्यन्त दरिद ये। वे उनके लिए दिल्ले पढ़बैका सामान न राहीद सकते थे। अध्यापक मीगर अपनी युवा अवस्थामें बड़े दरिह थे। एक बार उनको एक पुरुषक्की जरूरत पड़ी। उनक पास इतना रपवा न या कि वे उसकी मील हे सहते। उन्होंने वह पुस्तक किसीये साँग की और उसकी अपने दाधमें नक्छ का डाला । बहुतसे निर्धन विद्यार्थियोंको अपने निर्वाहके लिए प्रतिदित्र परि अस करना पहुना या और इस परिश्रमक बीचमें कभी कभी हधर अधार शानकी एकाप बान उनके हाथ लग जानी थी। वे इसी तरह वराश परिश्रम करते रहे और किर उन्हें लक्ष्मताडी आशा हुई। एक प्रमिश् कंप्रक और प्रकाशकने युषकोंको उत्पाहित करनेके लिए एक ध्याख्यान दिया था जिसमें उन्होंने अपनी पहली गरीवीका शाल इस तरह बवाद दिया था:-" तुम्हारे सामने एक स्वशिक्षित समुख्य स्वदा है। गुक्रमें श्री स्वाट रुण्डकी एक छोटीसी देवाणी बादसालामें थोडीसी शिक्षा पाई । इसके बाद में ए दिनवर्ग नगरमें पहुँच गया । वहाँ में अपने निवाहके छिए दिनमा मेर मत करता था और रातको अपनी मानशिक शक्तियोधी उन्नति दिया करत था। सभेरे ७-८ वजेसे शतके ९-१० यत तक अ एक प्रतक वेचनेवार्डिं यहाँ भीवती करना था। इसके बाप में खोनेक वक्षकी वृत्र वक्त बचार पदा वजना था। भे उपस्थान न पहला था वह्नि जिलान भार अस्य उपयोगी विषयोगो अ संयन किया प्रत्या था। न कहा नामा ना माँ हम लक्षानको भार वर भवन्त्रत साथ बार करण हा। अझ उस पालका सर्ही रह मा इन्द्र स्वस्थ क्या । याजा जान साह रामका हा स्वर्ता हा स्वर्ता हा भार म म र स्पार्थ र र राज र ०० र म इस हाता जित्ता THE APPLICATION OF A LAW TO A STATE OF THE OWNER.

सार राज्य प्रकृतिक स्वतंत्र का रिकार्ट एक स्वतुक्त (१९४१) वहारी जन्म के कार्योक की मान्या जन राज्य द्वारा स्वतंत्र कहीं मी कार्योक कार्योक की कार्योक कार्या प्रवास प्रवास किसी कार्योक कार्योक की कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कर राज्य कार्योक कार्योक कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक स्वतंत्र कार्योक



केतन पांच व और जाता वाली कातका निर्वाह काती थी, अंतर्प हैंबर्प प्रको मानी मानीतिका भीर विधोपार्जनके किए कहा भारी परिशंव बार्ग पहला मा । वे राज दिलाने केवल दी बंदे सीते के बनके निवासी राजके नमय वापा बारक कते लड़ काम कामा पश्ना था । ईकरवन्त्र ईकर शार्क इस कर था माने व और अपने शिवासे वह बढ़ हैते में 🌃 समय मार्ग मान्य यम सरमा काम समास करके सीचा करें तथ प्रसे मना दिया की 📆 नरम्मार रमक रिया बारह कह बाग देने के और शब में मंदी रेड मेर् करने हे । हेबायन्त्र और उसके शिता कमकतेशे रहते है। यानु हैबायन्त्री माला भारत सापा तक मीपारे दिनी ची-हन दारो कि शहर में दहते हैं भार बहुत बंदेता । हेमाचन्त्र ककफ्रतेने रहकर वर्तने से र वे भागे कियु और काने मिनाक थिए लोजन बनाने थे, वहीं तक कि बरनन और प्रार्थिकी सीवी पहन थे । व गामारका जी लव काल काम काने के । वादिन परिवास क्रांत्रिक में कई बार सामार जा हो तक और हुनी परिधानने प्रमुखी कई बार साम्प् मिनी बीर दुरम्बर की किये । कुछ बचेने ईचरचनाने हुमनी संग्राम मु कि व कार्य मानवक बहे जारा वीरण को गये। अलीने मेरहार्थ कांगाने Beit die annenie aus greis edt i und une f gene und athum william minne ame vien fegu gut fier wift बीर बीर इनमें इसमें बर के कि वे बीम भी बच्चा मारिक केला काकृत बार्कक प्रांतक हो तमें और इपड बाप हो आप इपके से मी and actes from monoral's follows fiend wit ; with F की की रिवरंग की उनका करन भाषानी होती की, बरान है वर्ष मानीक कराया अवस्त के का को है है । तम रे-

" बाग्छन दि विश्वनीय सन्त बारिस्वादियन । "

sands and emile on gots the glad bit



स्यायलस्यन् ।

रेपरण्याने कहा कि "इस तो तुमको जारते भी नहीं। तुम कीन ही हैं।" इस भारतीने जवाद दिया कि "द्यानिकी जात हुए नहीं प्रामके, राम भारतीने जवाद हैं। हुए लाउने कुछ कैया सीन्देगर तुम करता रिया था। मैंने उस रावेन्सम बीवह बालेक साथ केवह केवे। उससे मुक्ता कई बाले और सिखं। भीने उसके भी बास केवह केवे। इससे मुक्ता काम अन्यत्र करता हवा बीच हुछे लाज होता हात सीम काम केवह कामे करने पत्र दुखान नोज की है, जिनमें बात नेता होता हात हुए और इससे एक दिया है।" यह सुनकर हैंबारकार बहु समझ हुए और इससे एक दिया है। एक प्रदास। मानून दुस्त कि नगर (इकक्ता)

मागा सरकाय १६० ६ दवय प्रका यहायना विक सावती और स्वादि

यपना स्पार, स्विधाय शार कांद्रनाहर्यो।

उनमें सफा-रार्ण पूटने भागा।" यह भाइमां महामां महामां महामां के राम गाम और उमने उनको राम देनर हूँ धरणहूं ने मण धार्ने मुना ही। महामां महामां पूर्ण के स्वाद महामां पूर्ण के स्वाद मी पहें भीर खोले कि " वहि मी रूपमा है। से होले कि " वहि मी रूपमा है। मो हम लोग घर जा सबचे हैं।" भाइमीने लीटका हूँ वाच्छा हमें यह बात बही। है धरणहूं में यह बात बही। है धरणहूं में यह बात बही। है धरणहूं में उपमा के स्वाद को हमें भीर उमका आहमी उन को मों से हमें से से स्वाद को लोड आहम।

बाबहेरे रिज्यन बालिजरे संस्ट्रतके अध्यापक श्रीधर गणेदा जिनशी-थारिया जन्म एक बड़े दस्ति घरमें हुआ था । बास्यायस्थामे ही उनकी शाताका देहाना ही गया था । उनके विता इतके गरीय थे कि कभी कभी दमयो शीम शीमकर अपना निर्वाह बरना पहनाथा । उन्होंने किया शहर भपने पुत्र श्रीधर राणेदाको एक स्टूलमें भेजनेका प्रवंध कर दिया और शीक्षर गणेराने शीम ही अपनी उद्योगपरतास्य परिचय दिया । शुरुके अध्या-पर उनसे पदे प्रमश रहने थे । उन्हें बई पार छात्रशृतियाँ मिली, जिनमे उनका निर्मात होता रहा । फिर उन्होंने मैडिक्यूलेयानकी परीक्षा पास की। इस परिशाम भी उनका नम्बा बहुत अध्या रहा और उन्होंने राज्ञहृति पाई । किर ये पूरा काल्जिम दाखिल ही गये । उनहीं अगरेजी पाक्यरपनापर बिन्सिपल ऐसे मुख्य हुए कि ये उन्हें अपने पाससे आर्थिक सहायता देने छते। सन् १८७६ ईसवीमें इस कालिजमे उन्होंने एय॰ ए॰ की परीक्षा पास की। फिर ये तुरन्त ही पूना हाईरशूलमें अध्यापक हो गये और इसके बाद विस्तर कारिजमें संस्कृतके अध्यापक नियुक्त हो गये और रतलाम, खालियर इत्यादि षष्ट्रं स्थानींने उनके पास निर्मधम आये-पहाँके राजा उनकी ५००) मासिक धेतन देनेको सँयार थे; परन्तु उनको पूना काल्जिमे ऐसा थेम था कि यह उन्होंने म छोडा। उन्होंने अपने जीयनका बहुत बद्दा भाग विश्ववाशीकी सहा-पता देनेमें विता दिया।

भास्कर स्मीद्र पाहरेंद्रेके पिता अध्यन्त दित्त थे । भास्करके षचप-ममें ही उनकी माताका स्वर्गवास हो गया । श्रीधर गणेराके समान उन्होंने भी बहुत कष्ट उटावर विद्योगार्जन किया । श्रीतमें उन्होंने ऐस्टिन्स्टन कालि-जसे एम० ए० पास किया । फिर उन्होंने आपा साहब जमारिश्रीकरके यहाँ १००) मासिक्यर नौकरी कर की, परन्तु बुध समय बाद उन्होंने यह नौकरी ******

'हंश्ता क्या पा चोड़ को शीर से एक कुल्मी (००) साहित्य वह कालाई है। पा अपने कह के लाई के किए हिम्माओं तीवत ब्राह्म के पूर्व की की समें की ही रहा काला कर कहा नहीं होते जा के इस के किए कुल्म के किए किए हैं। नाम पान के बार पहले हैं। यह किए किए किए हैं। यही ताक कि तीन में काला कर कर कर साहत्य कर आहे अस्ति करता है। यही ताक कि तीन में करा कर कर कर साहत्य कर साहत्य करता काल की काला है।

प्राच रिप्तास अगुरूका अका वैवेहके विकासिय और सारित्र मन्त्र कार्यात पक्ष मात्र काव्य प्रशासन्त्र है। के बहुत परितृ में । प्रवे में है काफ हर तब १०% निवादर जीर इस ७ वर्गके झुए सून हनती REPAR पराम्म को लगर के ये ना बरावक हो। प्राप्त हिरामण व दार और मेर्दर बाद माना जारी बन्द मत मत तो वत्ता ही मान पुरताबक्ष कर रिकार्य कर १९५ वट १९ १६००० की कर्मान कर । करते करते पूर्व करते हैं गर्व के then need a my mounted mag be go all ! And had dete des ming !! नारा तथ र अब संगान के स्मूलात स्मूल सहित है वह केंद्रवर्ती है। प्रार्थित मान्यान्यान्यां भारता प्राप्त को तीर हमारे इसका मान्य पहुत्त सम्प्र कार्या was a reas an accepta town with a posta appeared the state At an at the torre are on an articale assets as \$1800 AREK ON' + TO THE ROOM FOR I THE STORE WHERE A MED HE ME prove high mile and me but there , profit will get ben he do not so the over the de generatings . Sal a way dirt it seed ? MANNET HE HE ARE SHIP THONG THE PROPERTY HE HE WITH tong pri's dade nere it was intend more to pred W'CH WICH MIT MAY SIP E AND RANK SPING ST MIT LENGTH at you se sooth year at seeing built a see don't mire of born regions a sea for the de make to I wind that the matternance at your all property personal



मंब २९ महाराज्यका चर्च उनकी बाताल मुख्यका बुल हिकाना स्था । हे र में १९ व नरे पुर वाज वर्ग सर । यहत्र करोजी अका भू का ब्राह्म प्रश्न है के कृतः वर्तवर्दात्रः रहे । अववंत्र इत्यः वीत्र वृत्ताक्षरे वैत्यक्षर क्षीवन्त्रं तरावत्सी

par seis gent gert's gennegenft ung ne gen beit gift auf Perm ebb be ien ja eine femige freie be ebe meine Mite मा भारता करूप नेवादा बाद्या मात्राकृति किन अपने भी। क्षेत्रकृत

eridete geneberont neren unte iffen diene mittig er e so but gotabe seinembent man ar fine uten 16 * BYTE CHERGE TO THE WAY THE WATER THE PERSON . THE STATE OF THE STATE STATE OF ME HEAD THE BUT POTT Mere a ne errer pent fuer per ubie fier mit a mit ?"

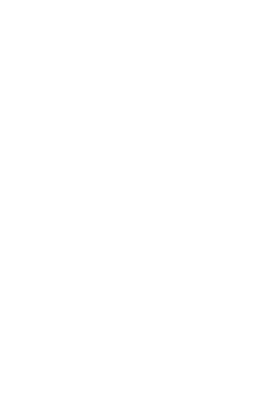
be a to the same areas director down when the beat the best better Wat their bound stad was min de, feinfe gemen bemit fich at find any same to present any attended that the or an impage was are provided unas make at facts a fact CAT HER EXPORT SE WAS MAD BY BY BY BY WELL FORE 47th wideland goten neuroscopy dates for off a set think and we mend east witches an and mind sports

THE FER OF EASTERN ST. WILLIAMS ST. S. S. S. W. P. with the terms we are now as no since or over a facility exter a same a containing page

....











मार सेमून्यूक रोमीलिने की मान्योद्वारक किए कुछ कम स्वीधम म रिका। वे एक वीरतिने तुष थे। उन्होंने क्यानले बतुन कम तिछा गाँ थे रागु वोर् देनेशर उनकी यहनेका ऐया जीक लगा कि वे हुए दिएसी यह हुए उसीन करने को। उन्होंने 5%-१६ वर्षीय क्यानले के विदेश माना क्यान्य करना प्रकृत हुए । उनकी ने 5%-१६ वर्षीय क्यानले के वर्षे मोर्ट मोर्ट व्यक्त करने थे। और बार करने ही उन्होंने वेदिन्दा क्याना यह पुनर्ष के इन ताली। इस्ते क्यानि उन्होंने एक लेगाकको करें तुन्तीमी सनुनार भी कर राज्य भीर हुछ कुणावे कहे बार एव हानी। उन्होंने व्यक्ति सार कि इतिहास, भीर वर्गीन-साम्यक्त अध्यक्त दिवस और वहने के स्व स्वप्त समर्था ने एक अभीन सावसी करीन विवन के सन, यहन इन्हों स्वाध्यक्त करने कहीं।

रिज्ञ वापांड भाषणांड शांकर व्यान वा विश्वतं क्रिया बरहे माहित्र मेक्स भरता नाम उत्ता वा व वह संशेष व इस दिन इसहे सुद्धे वत्तं माना स्थानी ताना रात्रा वा त्या माना उत्तह बन्धारांट हो। होते व ता ता सुद्धान ताना रात्रा वा वा सुद्धान स्थानों सुद्धी साथा। हिस्स

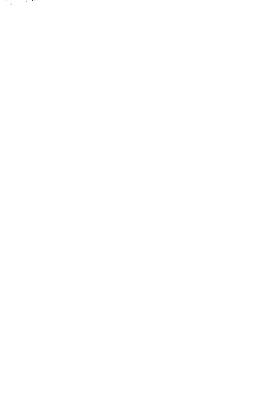






कि इसका सुधार हो ही नहीं सकता।" यसिंद् केलक दाल्टर स्काट वधपनमें महामुक्त था। उसके कच्यापकने उसके निषयमें यह बहा या है "यह तो भूव है और जन्म वर सुद रहेगा।" विटर्टनकी माता भी शुरू शुक्रमें यही कहा करती थी कि "यह ऐसा सिडी है कि किमी मन-लक्षका न निक्रलेगा।" ग्रेल्फ्याइरी कालिक छोडनेसर भी ग्रेमा ही मूर् बना रहा जैमा वह भरती होनेके समय था। परन्तु कारिज छोड़नेडे बाइ वसने बहुन विचा सील की और यह एक समस्यह विद्वान गिना वाने हमा। मार्ड हारूव-तिमवे भारतवर्षेमें भैंगरेशी राज्यकी भीव बाली मी-एक ^{मू}र्ड रुड्का मा। उसके कुदुरववालोंने उससे भएना बीठा छुडानेके हिए इसे भारतवर्ग भेज दिया था । नैपीलियन और वैधितादम वोशी ही सहस्त्रमें मैददिको से । जन्होंने स्टूलमें कभी क्यांति व वाई । कालमने और बारटर सुका जब न्यूकर्म पहले से सब बहुत ही सूह और उपप्रती में! मान्दरने इन दोनोंको यह कर कर विकाल दिया या कि ''से मूह कमी वरी सुपर शकते ।" अनुव्यक्रातिका परमहितेशी ज्ञाल द्वरपर्दे नात वर्ष मह स्टूलमें पत्रना पटा, परम्तु तथ लक उत्पन्ने लिए काला अश्वर सैमे बराer ff err i

बारदर आरम्बर्डिन यो पुछ लड्बंडि विश्वमें कहा है यह मौद महर्गीर दिश्यमें भी विश्वहण नगब है—"मुझ मूर्र कहाईडि वी भेड़ देनने हैं द्वारों क्या आहंग हों है कहा मुर्ग्य कार्य कार्य है है है क्या मुग्य कार्य कार्य है है है क्या में क्या आहंग कार्य आहंग है। इसामाध्य योग्यनाओं कार्य किश्तराणीय पुत्र कार्य कर हों वहना निकास क्यामाध्ये की मित्र की स्थाप है। मित्र वहन की मित्र की स्थाप है की मित्र की मित्र



पड़ता या । गर्सी, भूप, जाहा, श्रेह उनको सब बुछ शारीमें सहब कारा पहता था। उन दिनों कलकतेने बाँडीपुर आना भी बड़ा गोरिमधा सम या, क्योंकि आगाम लुटेरीका अय सन्। छमा रहना था। एक बार कलकारी थीरने समय रामदुब्धलको मार्गमें रात हो गई । माकिकका राजा उनके पास या । इस सबसे वहीं उस रुपयेको कोई सूट व होने साम पासी गांतींस दिन्तीके बर नहीं ठहरे, वरन् एक पेड्के बीचे गरीह मुमाहिरकी तरह पर रहें । उन्होंने कष्ट उटा कर मारी राज उसी बेहके शीचे कार दी ! मार्निन कड़े पनकी रक्षा करना ने अपना परम यमै समझने से । उनकी नपने मारि-क्रके कामके लिए जहाजवर भी जावा बहुता था। वहीं वे दो बार पारीने दुवनेले वये । यदी कर्णस्यारायकता और ईमानदारी रामपुलाछड़ी आरी वक्रांनका मुन्य कारण हुई : एक घटना ऐसी हुई कि क्रियके कारण शामा । कालके सारी नृश्चिमाका अनक्षो गया। एक बार मालिकने रामपुढानकी चीरा मी रापा दे कर बहाब वर्राइनेडे किन टार्फा भेजा । टार्फामे जनमञ्ज वर्राः बोंडा नीलाम हुआ करना था । शासपुष्पाकने अवने मान्यिकडे पहें रह म्यागान संबंधी जान ल्य प्राप्त कर किया था। जनमें शुबे बहाजों हे मुस्यका जनुमान करनेमें वे बड़े विश्वहरून हो गये थे । अब राधहुकाल शका पहुँचे दम समय बीलाम हो चुडा मा । अन्युत्र अन्दें निरास होतर पड़ा । परानु बहीरर प्राहे मालूम हुआ कि बनी दिन एक हुनर जलना अहातका नीलाम दीनेपाल है। इस अराजका बहुत कुछ हाल उन्हें पर्यन्ते ही बालून था। अर नीवान हुआ मी उस बहातक शाम बहुत कम समे । शमपुत्राक ताडु गरे हि मदामधा सालियन बहुन जिवाशकी थी, इन दिन् उन्होंने सरने सालिकी विका पूछ ही अपनी जीनिमान इस बहाजकी लगे र निया। स्वीर्ते हे पा वंश विराण्य व्यक्तारी बडी का पहुँचा । इसन श्रामुध्यकमे इस प्रश्नारी सर्गापुता पानु । शास्त्रामन एक साम रागा नगा रुक्त उस प्रशासकी वर्ष संगातक राथ क्या राजा : श्यापृष्ठका सर्गटकका इस व्योशासी पृष्ठ मी बावर न था । परन्त् रामदृब्दालन चंद यह विश्वीया सारा सामा सामे मार्ग १६६ मामन स्थ रेटवा भार यह व न्योग्टनका माना हाम कह सुनाया। रामर्थ कर क्यांचा वह वृश्याच्य व अप मन्त्रदी द्वार दक्ता प्रावते में ह इमारेट रम्पा कर का पर यान रचना रुपन करता रामगुद्धावारी ही है





अपना सधार, सुविधार्ये और कठिनाइयाँ।

राणियों हो सेती एक प्रकारका दोप भी हो सकती है। क्यों कि जो सर्का जार पाद कर लेता है वह बहुआ उतना हो रास्त्र भूल जाता है; भीर एक पात पह भी है कि उसकी अरांड उपोग और भागदके गुणेंकी उसति कर-मेंडो उस्तर नहीं पहती, परन्तु भंदमति पुषक इन गुणेंकी काममें सानेपर मजपूत हो जाता है। वे गुण हरसरहवी अपाय आद्त टालनेके लिए वहे मुस्यवात् हैं। देवीने कहा या कि "भें दीता हैं कित भेंने अपने आपको स्वयं वतारा है।" यही यात हरएक मनुष्पं विषय में सब है। मनुष्य अपने आपको दीवा मां वे यात है। यात हरी यात हरी का स्वयं वतारा है।" वही यात हरएक मनुष्पं विषयमें सब है। मनुष्य अपने आपको दीता जी चाहे वैसा बना सकता है।

अपने आपको जीसा जी चाह थेसा बना सकता है।

बहनेका मतल्य यह है कि जब हम स्टूल या काल्जिमें पहते हैं तब हमारा
सर्चोत्तम सुधार मास्टरीद्वारा उतना नहीं हो सकता जितना हम बातकी जब्दी
महनत करके स्वयं कर सकते हैं। इस लिए मातापिताको इस बातकी जब्दी
महनत करके स्वयं कर सकते हैं। इस लिए मातापिताको इस बातकी जब्दी
ने होनी चाहिए कि उनके बच्चीकी शालियोंकी उचित उचित समयसे पहले
ही चटरट हो जाय। उनको चाहिए कि वे संतोपपूर्वक बाट देरते रहें; उत्तम
उदाहरण और सान्त जिल्लाको अपना काम करने दें और शेप उनके सायपर छोड़ दें। उनको इस बातका ध्यान करता बाहिए कि युवक किसी म किसी
सरहवा शारीरिक व्याचाम करता रहे, जिससे वह खूब तन्तुरस्त हो जाय।
उनको चाहिए कि ये युवकको आसोज्ञार्यक मार्गपर लगा हैं और उसके
उच्चोत और आमहको आहताँकी सायधानीके साय पृद्धि करें। इसका परिवाम यह होता कि अगर उसमें युछ भी स्वाभाविक साम और जियादा
अच्छी तह अपना मुखार करता चला जायता।





वान भी मनुष्यों के बरित्रपर बंदा प्रमाद बालती हैं । धेस्ट्रका क्यर है हि "पद बार ग्रेरी भाताने मुझे प्यारसे चुमा था । इसका अगर वह हुआ वि में चित्रकार बन तथा !" ये वाने देखनेमें छोड़ी बाह्य होती हैं, परने मेरे ध्यका भारी सुख और सदल्या बचपनमें चेंसी वार्तीका थीग मिछ जाते। निभेर है। जब फाइस्स्थिल बक्सदन काने जीवनमें एक उच्च परम पूर्व गण तब उमने कानी मानाको किना या कि 'कापने ग्रुफ्त कि मनार पर जो यिज्ञान अंडिन कर दिये हैं उसके ससरका में निर्गर अनुभव दिया काना हूँ । यह असर मुसे कासकर उस क्क अनुमृत होता है वह में हुक रोंके लिए कुछ काम करता हूँ ।" बनमान वृक्त अभिन्त मनुष्यका भी गुन भइमान मानता था । बनमटन इस मनुष्यकं साथ सेफ सेटा करना था, मना होकर जाता था भीर शिकार रोटा करना था। वह मनुष्य किनवा प्रशा हो दिसकृत न जानना था, परन्तु बद्दा समसदार और द्वाजित-अवाय था । वर्ष-हमने उसके विश्वमें एक बार कहा था कि "वह मनुष्य लाग का हम निर् यहे बामका था कि वह हमानशारी और आस्त्र-गीरवके नियमों के अनुष्य चलता था। जब सेरी साता सेरे वान व होती वीं तब सी वह कोई रेपी बात म बहता था कि उसकी सुबकर मेरी माला बापर्गंत करती। बह मार्ने मामने सर्पय ईमानदाशिका सक्ये देंचा बार्ड्स रखना का और बड़े बड़े शिर्ट मीडी पुम्पक्रीमें जिसे पतित्र भीर उदार विचार सिक्ते हैं वैसे ही विचारि बह मेरे मन्त्रको अस काना था । वह अनुष्य मेरा प्रथम और समें प्र तिशक या :" हेंगडुरूने भवनी मानामे जो निका पाई थी उसके दिवाने वह क्षत्रा करना या कि "वदि सारा संसार तराजुके एक एडड्रेमें रहना है" भीर मेरी माता क्यर करहेमें, या मेरी माता मारी विकरेगी।" मातामीम

सारता बहु भारी ममाच चन्ना है। सनुष्या कोई बमें बा माच देश नहीं है कि उसके माच दीत्यमें। एक इस न देव जाना हो। बागमेंने बान निकारी चनी जाने है कैने इसों वह बार्सि नहीं माद्रस हो स्कारत कि उनका कान बार्ट हैंगे। इसार कार्ट बमें बा झाए तथा नहीं है को हमारे बीचवर्स कुछ स दूर हैंगे। वर्षता कार्ट बमें बा झाए तथा नहीं है को हमारे बीचवर्स कुछ स दूर हैंगे। वर्षत क देना हो भीर दूसराये दूसर्थिक केन्द्रसर बीचवान कारणा है। वर्षत क देना हो भीर दूसराये दूसर्थिक केन्द्रसर बीचवान कारणा है।



मच्छे प्रशाहरणने नुसरोंकी विका सिक्ती है और शरीवर्ग गरीव और बोरेन स्रोटा मारामी भी मेली शिक्षा बुललीकी है सकता है है भी मनुष्य ऐसा नहीं है को इस सावारण किन्तु बजुब्द शिक्षा के किए हुमाउँहा नानी न को । इस अकार एनिहमें वृदिह अनुष्य भी उपकारी वन मकता है। क्यों क बकाशवान करन बादीमें क्ले बानेने और बैगा है। प्रकास देंगी है मेमा क्लेन्स रक्ने जानेसे । समुख्य बादे झींगड़ियोंमें रहे बादे महबेरि, बारे वीतोंने रहे चारे वहे नवरोंकी तंत शिववोंने, और प्रमनी हावप मेरे, किननी ही जराब बची न शाहात ही चरन्तु वह दूसरोंके किए मार्च हैं। नवल है। बेम कोई कलानी जाएगी की क्यांकर कियी मर्क प्रति मिल बाम बर लक्ता है जनी तरह वढ़ शरीय किमान भी, भी मेर्डि बर्माम जोत बोधन मधना निर्वाह करता है, काम कर राष्ट्रण है। इप निर् बहुत मामुकी जिल्लासका की कुछ और परिवास, विज्ञान और जहानार्य विशा है सकती है और बचरी और आकर्ष अर्चना और शराबार में निर्मा मध्यों है । जनून्य इव दोनों तरहबी विकामीर्थने कीवनी विका मा कांगा, यह दुर्भीपर निर्मेर है और इस वामार भी मिर्मेर है कि मेर् कामरोंने दिन प्रकार काम उराना है को उनकी मरने स्थानन सर fant F

सब्बे स्वोदे किए जो जेगाकि किए काम बीएव और स्वितिक्त कारण बीए साथ और कीरी कीर सही है। इसने व्यक्तिस्वकारी की बा दिया किया है भी काम अपना कोर हिम्बद होता है। अब स्वाप्त पात सम्बोद देवा काम अपना कीर है। वह सम्ब है जो बहु घर काम है कि " तुत्र हम काम की कीर है। कि सुने सब्बे काम्मीकारे मीर्णि बाग करी सीमा व रोगा हो। जोने के परिचल के साम हिगारी कीर्य बोद काम करी सीमा व रोगा हो। जोने के परिचल के साम हिगारी की

हरून हा भागी नहीं ने कि एक इस्तरीय विश्व पर सह दिस्सी में अपने भागी नहीं देशकों पर अन्य अन्य आहे हिम्मेश्वासी परिदर्श किया प्रोह्मिकों के जी त्यान्य को जी त्या प्रपाद प्रश्नामा है पी अन्य भागान देशकों जोते के उत्तर के जाता अन्य प्राप्त है से अन्य भागान देशकों जोता है कि अन्य अन्य स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन







िया करणालका एक शिरासाची आंडार छोड़ काला है, वसींड उपार अंतर मुगारेंडि शिल कारों हो काला है—मुगारे अनुत्य मोत्रसे बणें विश्वका अनुष्यत कर सकते हैं। उपात्र औरक अनुत्यते में पर करोगा है एता रवण है और उसकी हम बालेंड घोला ब्यासा है कि है केग ही वित्यत करोग कर स्वीत्त अंतरह डिला बुलाओं कियों अनुत्यात्र और-वर्षात तिरस हो, वह बहुमूचल बीलोंचे यह है। इस उहाल इस बील-वर्षात तिरस हो, वह बहुमूचल बीलोंचे यह है। इस उहाल इस बील-वर्षात है। इस वह बहुमूचल बीलोंचे यह बीलोंचे अंतरह इस उहाल इस वर्षात है। इस वल वल उहालांचीय सहस्थानोंके बालोंचा अस्तार प्रमुख्य असी हुई होती हैं। इस वल उहालांचीय सहस्थानोंके बालोंचा सहस्था

णना वर्स हो सकता दि कोई सनुष्य सहाम्या सीनाहर हुएया मीनाई। है स्थार प्यान्त दियानामार हम्मादिक वीपक्षणीय पूरे भीर उपार्ट मिया देंगे म में स्थार । पेपा सीपक्षणीय परनेते वह आपूत्र होना है दि अपूत्र मार्चे हो तकता है भीर क्या कर सकता है। होते बीपक्षणीय सबनेते सनुष्ये पाप दियागा नहीं करक सकता कीर कमने बीपक्ष है होता हैने हो मी दें। स्थापन समार्थ कार्य कार्यों कीर कमने बीपक्ष है प्रोने मीर समझे मार्चिय बार्गोंद्रा सनुष्यक कार्यों का सामी साम होता है।

तान मुमका छोवनवरित और ऐरर्जिने थे । "क्रोमिंग छेविभाके जीवनु-चरित" का ताक्टर गुरूपहर इतना सभाव, वटा कि उन्होंने करना सीवन धर्मन्यवारके रिष्यु अर्थन कर दिया ।

जो सजुत्य प्रमातानो बाम बतने हैं वे पुत्र हों सम्मुत एक अप्यंत उप-पोर्गा उपात्र उपिथित करते हैं। इस उपाहरणका प्रभाव मुस्तीय मुस्त हो पहला है। प्रमाताले समसे प्रहण्योखना आती है। प्रमाताके सामसे भूत प्रेत उत्तरे पेरों भाग ताले हैं—उमका हर पास भी नहीं प्रवन्न पाला है। बहिताह्योंने नितास मही होती है, बचीकि उपना सामका बरते समस हमड़ो सफलताई आता रहती है; और सम्पत्र में ऐसी दुए सुती पेटा हो साती है कि उसके बारण मनुष्य सुपोगोंको हामसे नहीं जाने देता और उसने असफलता भी बहुत कम होती है। हिमा सनुष्य रवये प्रमातान होता है पह सनुष्य महिष्य प्रसाविक रहता है। ऐसा मनुष्य रवये प्रमातान है बरता है और दूसरोंकों भी बाम करनेमें उत्ताहित करता है। खोसके साथ बाम करनेसे अस्वन्त साधारण बामोंमें भी गीरय का जाता है। सबसे अधिक सारगर्भित काम बहुधा वही होता है जो अरपूर उत्तरहके साथ किया जाता है भीर तो ऐसे मनुष्यके हार्यों या मसनकके द्वारा होता है जिसका विक प्रमाद रहता है। हम बहा करते थे कि "मुग्ने प्रमाविक रहता प्रसन्द है, परन्तु लाद रपयेकी आमदनीवाली जापदादका मालिक बनकर भी; उदास रहमा प्रसन्द नहीं है।"

फ्रीनियिल द्वार्ष दिन भर सदत मेहबत करके शासके वक्त गाना गाकर और बाज बजावर अपना जी सुत्त किया करते थे। फरस्येयेल वस्त्रदन भी बड़े प्रसक्षयिल रहते थे। उन्हें भैदाबोंमें जाकर तरह तरहके येल सेलना बहुत प्रसन्द वा। वे अपने कहोंको साथ लेकर घोड़की सपारि किया करते थे और उनके साथ सब सरहके घरेल्ट स्टेनोंमें शरीक होते थे।

हारटर आर्नेस्ट एक उत्तम कमेंबीर थे। ये बड़ी प्रसक्ता और उत्ताहके साथ बाम बरते थे। उन्होंने अपना सारा बीयन नीजवानोंको सिक्षा हेनेमें स्वा दिया। वे अपना काम मन स्वावत करते थे। उनकी मेंडलींक सभी लीग प्रसक्तिक होकर बाम करते थे। वो नया मनुष्य उनकी मण्डलींमें प्राता था

उसको तुरन्त 🗊 अनुभव होता या कि यहाँगर कोई बक्त काम बहुत उत्सारके साय हो रहा है। उस संब्रधीके हरएक शिव्यको अनुमय होता या कि मेरे किए पहाँपर काम मीजून है और अम कामको करवा मेरा कर्तान है। मेरा सुस मी वसीपर निर्भर है। इस ताह वहाँ मध्येक मुबक्ज काम करनेका उत्साह है। हो जाता था । उसको यह बावकर बड़ी खुती होती थी कि मैं मी इठ कार्य करके तुमरोंका वरकार कर सकता हैं और इसकिए मेरा जीवन बानन्दमंप हो सकता है। उसको अपने सिम्नक (दाक्टर आर्नेस्ड) से मैम हो प्राया या और वह उनका बादर करता था, क्योंकि शक्त आर्नेस उलकी बीव-नकी कदर करना और आध्य-सम्माथ करना तिस्तराते ये और यह बंदराते थे कि संसारमें रहकर उसको क्या काम करवा चाहिए और उसके जीवनका, म्या उदेश होना चाहिए। आर्नेस्टके विचारीमें संकीर्णता म थी। उनके विचार बहे उदार और सखे ये । वे इस्तरहके कामकी कर्र बरवा बावते में और किसी भी कामको तुरा व समझते थे। वे समाजके किए और प्रवर्ष देपक् मनुष्यके लिए इरएक कामकी अपनीरिनाकी सूच समझते थे हैं मार्नरहने जनसेवाके लिए बहुतमें अनुष्योंको तैयार किया था। उनमेंले एक महाराय आरतवर्षमें जी आये थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें अपने एस शिक्षकके विषयमें सह किला था:-- वन्होंने सेरे जपा की प्रभाव हाज! है उसके बहे स्थापी और महत्त्वपूर्ण परिचाम हुए हैं। उस प्रभावको में मार-तवर्षमें भी अनुभव वरता 🜓 इससे व्यक्ति और क्या किस् ["

को सञ्चल सचे दिवसे भीर उस्ताहक साथ प्राप्त प्रमुख्य स्थाह में सुर्वा की स्थान स्थाह से सुर्वा की स्थान स्थाह से सुर्वा की स्थान स्थाह से सुर्वा कर स्थान स्थाह से सुर्वा कर स्थान स्थाह से सुर्वा कर स्थान स्थान





हानवर बहुँ गुरा हुए कि बार जान जनसेवांक किए धैर्मपूर्वक विनना उसीन हाने हैं। उस्तेंने तर जानवी शुरावर बार कि "आप जो वान चाहें उसीमें में आवरी महायता बरनेको तैयार हैं।" यदि और बोई होना नी हम समय यह अपनी उत्तिन मा अपने लामजी हम्या मार बरना: परनु गर जानके अपने रस्तावके अनुसार उत्तर दिया कि "भे अपने रिष्ण बोई अनुसह मही पाइना ! गुपे तो सबसे जियादा गुपी हम बानमें है कि आप एक हरिक्षेपी लातीय परिष्ण स्थातित बरनेमें गुपे नतामा हैं।" पिटने हम संभी लाती बाजी बहु की कि ऐसी विनयद काती अपने परायत हैं। "पिटने हम बाननी बाजी बहु की कि ऐसी विनय वास्त्रा कातनेमें गुपे नतामा है। स्थाती। परस्तु बाजी बाजी बहु की कि अपने परमें कात किया। अन्तमें सर जान विवा वरित्रम करियो कातमाभारणका प्यान हम की आपनित किया। अन्तमें सर जान हम परिष्णुक स्थापित बरनेको स्थाप करने करिया। अन्तमें सर जान हम परिष्णुक स्थापित बरनेको स्थापत हम कि सर्वे उसके सभा-पित नियस दिने गुपे। हम वरिष्णुके कितना काम हुआ हम एसके कि तमनेकी परि जार तम ही है, परन्तु उसने हित्यसंथी ऐसा जोन थैका कि करोड़ों एकड़ अमीन को पहुं। बंजर पड़ी थी उपजाक बना की गई।

सर जानम एक कार कुछ लेकरके समयम व्यावाहिनीकी वही सहावती हैं। दिमार इनदी काय ह्वालमा और प्रयादका अच्छा वरिचय मिश्रमा है। सर् १६८३ हेमबास बुद्ध बारण व्यापारका काम वेमा बेर प्रभा वि सेरपी मीनामरा क रिकार कि कक्ष मध और भैनविन्दर और अवायमी ही बहुन सी बही बन: बारिनो ' सामगोत्राभी ; वा बाल बीपट बोर्न शमा । इसका काण यह न था कि इनक बाल माल नहीं किन्तु बुद्दे बारण म्लाहार मन मर्थ र्वत हा रह थ । देवा हासनाय अवन्तर्राहे बन्द नहीं मारी विन्तिका मान मनिनाचे या । तर भावन राजन्यवार्थे अञ्चाप दिया है। पंचाय शाम सीर · बाद बान कोड़ शान ; के बोट मुल्ल हो केने बीतामों है। प्रशा है रिहे क्ष'र्व का क्रमानन के सबने हैं। वह सन्तान नाम हो तथा थी। वह गण वेर अंदरन कर की गई कि वर शाब और इस कीशागर इस कामडी करने इन्दर्भ के के इस्त दिन अन्तरकर बाब होता होते हता है। तहें कैंच दूर्वी fre ne mus na nam no la newte mille es une arte à 14 ance with and the sine were made ancient at her the fen s.unt es d'eines mie un 'ent fant ereiem de meit But Harn at fever be mobile on was at 1 seein and fit Praunta un mad Weite ett et auf an an an in reife they are some a cre on the end was at an of Marrey are and ... He can go a conse on & ATT PRINCE AND THE THE THE PRINCE -----











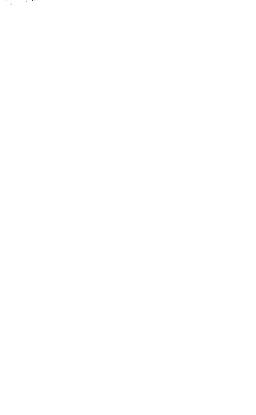
सुन कर सिकन्दरने पोरसको शामा कर दिया और उसका सारा जीना हैं। राज्य फेर दिया। आपरिके सम्बद्धी संस्थाधिक अनुष्पका चौरेक अपन्य तैने साय मकाशित होता है और जब कोई भी चीज कास वहीं जाती हु वर्ग अपनी संस्थराता और साहसके बक्टार लहा बहुता है।

साई द्रश्तिकाने विचार बहे ही स्वतंत्र से 1 वे जिन चारिक देवामें सद्यार चलते से ने ऐसे करने हैं दि जनको हर एक पुष्कित सर्वे कर रहे दर्श स्त्र के हर स्त्र कर कि हर स्त्र कर कर कर हर स्त्र कर कर कर हर स्त्र कर कर कर हर स्त्र कर कर हर स्त्र कर हर स्त्र कर हर स्त्र कर हर स्त्र कर स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र स्

सायवाले (देस नवास आहे हेहा पह है का अपूर्ण साथ आहां) में स्वादा हुए स्वादा आहे हिए प्रमाण कारोले हैं मि अनुमाले कारात हैं है साया। भीर समुख्यालको स्वहुत्याले पह करी कों सामहात साया। की समुख्यालको स्वहुत्याले एक क्यों को सामहात साया। की स्वाद्याले कारात है है कि 'को पुष्ट करणको साथ के स्वाद्याल कारात है कि 'को पुष्ट करणको साथ के स्वीद्याल कारात है कि 'को पुष्ट करणको साथ के स्वाद्याल के स्वीद्याल कारात है कि 'को पुष्ट करणको साथ के स्वाद्याल कारात है कि 'को प्रमाण के स्वाद्याल कारात है कि 'को प्रमाण के साथ करणको साथ करणको कारात कारात है कि 'को पाइ के साथ करणको कारात कारात कारात है कि 'को पाइ के साथ करणको कारात कारात है कि 'को पाइ के साथ करणको कारात कर है कि 'को कारात करणको करणको करणको करणको करणको कारात कर है कि 'को साथ करणको करणको







बॉनने उत्तादनेसे भी नहीं होती। यदि हाय केने सनुष्योंकी सुधारम चारे. दिनको भागमा, रिज्ञालयार्थी या साराव वीतेसे साराव वह ता हों रोने दूवारी बहुए ही क्या सारावणा होती। अपींकि इस सनुष्योंकी आरों देशी पारी रो सारी है कि ने निकल वहीं सकारी। इस किए सिराटर ट्रिझिये नृत बसा है कि गारे रेच आहत बहु है कि अपनी आहते सीननेसे सावधान एरेडी भागत करते बुत्त ।"

भी मो क्या मार्गित बहुनेशी भी भारत वार्धी मा सहनी है। हुन गुं-भी मो क्या मार्गित बहुनेशी भी मार्ग बार्ध मा सहनी है। हुन गुं-भी में क्या मार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य नाम हिन्माह प्रकर्त हैं भी ह करें हैं। समय क मार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य हमार्ग्य है कि हमार्ग्य सम्पन्न सम्पन्न स्थान हमार्ग्य मार्ग्य मार्ग्य स्थान है। हमार्ग्य सम्पन्न हमार्ग्य है कि हमार्ग्य सम्पन्न हमार्ग्य सम्पन्न सम्पन्न है। भी मोर्ग्य सार्ग्य हमार्ग्य हमार्य हमार्ग्य हमार्

विस्त नाम सूर्वेश व्याप्ता होट सारे क्यांभेश भी हिमाई में क्या है, मेरी मेर क्यां में होते सीती मेर क्यां मेर क्यां







विन्तियम प्रांट और बार्ज्स प्रांट एक क्रियानके रुद्दे थे। मिप माममें से रहने से उसके पास होकर एक नदी बहुनी थी । एक सा उस नहीं में ऐसी बाद आई कि उनकी सब चीमें बह गई, यहाँ तह 🖪 जिल जमीनपर वे लेती करते ये वह भी वह गई। गरत यह हि वर दिमान भीर उसके दोनों लड़के सब तरहसे तबाह 👖 गये । इस मुनी-बनने उनको बेचम कर दिया । लाखार वे छोग बहाँमें नीकरीकी सहा-मार्थे निकले : चन्दने चलने वे लेक्सरके क्रिकेस पहुँचे । बहाँ वे एक पहार्ष-पर चड़ गये और उसपासे आसपासकी वधीरकी और इनैंस महीकी देसरे अर्थे । वे इस जिलेसे यहके कभी न काये ये और न वहाँ हा कुछ हाल आर्थ ये, इंग्लिंग पढाडीपर बडे होकर यह देखने हहे कि अब किम नरपत्री चलना चाहिए। बूछ देर सोचनेके बाद उन्होंने अपनी वापाचा मार्ग इप नरम निधित किया,-उन्होंने उस वहाडीवर एक छड़ीकी सीधी शर्मी कर छोड़ दी और यह गोच लिया कि जिल नरफ यह छड़ी गिरेगी बणी नरफ चाह पहुँगे । बाम जिल नरफ वह छडी गिरी उसी तरफ के छीम चल हिए । चलने चलने वे एक माममें पहुँचे । वहाँ दमको एक छारामानैमें काम मिल गया और उन होनोंने बाम मीलना शुरू बर दिवा । तीनों भाई ऐसे मैड् मती, संवमी भीर ईमानदार वे कि उन्होंने प्राप्ताने हे सारिक्की अपने गुर्थीय शीप्र ही मनक कर लिया । कुछ समय तक वे हुनी तरह परिश्रम करते रहे भीर बन्दीने इनना उचान कर की कि जाना निजी करानाना शीध रिया । इसके बार वे बहुत वर्ती तक वरिश्रम और उचीत करने रहे और वृत्तीं ही मनाईमें मते रहे । इसका नर्राता यह हुआ कि वे बनाव हो गये और जिन कीरोनि उनकी जान वर्षान हो गई थी के उनका बड़ा साहर करने की है अर्थीन बई छान्यान और रहेंडे मिल सीम दिवे विवते उस विकेड बहुनारे मान्यियों हे लिए नीकरी बार चंत्रा निकल आशा । अम्बेर दिल बामर्ने परि-भग दिया वर शृष मीच समझ बर दिया । इसमै उनदी अच्छी सच्छानी हुई । उनके परिवादि बारम उस अगह रीनव ही तिक बार माने स्पी। चर्पी नरक बार्वहरण्या, बानम्, स्वस्था क्षेत्र बावदा सम्बाद्य ही गया। भारते रिपूण बनमेंने के बड़ी उक्तमाढ़े मान मार तरह है सभी बामी है निर् कन देने जां---प्रानृति शिर्ध कम्बाचे, बहुन क्यांति किये और समाहिति



अपने मुगीबतका हाम मुनाया और मर्रीफिकेट सामने इस दिया। पिरे-वमने कहा कि " एक कुछ तुमने हमारे विरुद्ध वृक्ष पुग्नक निनी थी।" सीरागरका दिल घडुउने छता और यह सीचने छता कि अब मेरा सर्विक केट भागमें श्रीक दिया आयगाः परम्यु जिल्यमने ऐमा न किया । उसने वर्ग शांकिकेटवर अपने बारन्यानेकी तरक्षणे अपने वृत्तनतन का दिये और मांदिक्टको मीतागरके दायमें देकर कहा कि " हमारा वह कायरा है कि हैं। कियी हमानदार सीदागरके सर्विकिकेटकर हस्ताक्षर करनेमें इसकार वर्व काने और इसने भाज तक तुम्हारी ईमानदारीके दिरुत कोई बात नहीं सुनी है।" उस मोदासरको ऑस्वेमिसे ऑस्क्रोडी चारा बहुदे छगी। रिवियमने करा 🌃 " नुमको मानूम होया उन समय मैंने बहा था कि तुम पुलक किसनेपर प्रशासाय करोगे । आसिर वही बाग हुई । परम्यु मैंने की पुत्र वहां था वह इस नीवनमे नहीं बड़ा था कि मैं तुमकी धमकी देश चारण मा, किन्तु मेरा सत्त्वव वह या कि किमी दिव तुत्र हम क्षीगींकी करा करोमें भीर नुमने हमको जो दुःस दिवा है उसपर पठनाया करोगे। " सीहागरने कहा कि "मैं सचमुच पठना रहा हूँ।" दिनियमने फिर कहा कि " अपना मी तुम इम कॉर्गोडी अब परिचान गये कि इम कैये आहमी हैं । मेडिन यह मी कही कि अब तुम्हारी क्या हालन दै-अब तुम्हारा क्या कानेवा हगाएँ। है ? " मीदागरने उत्तर दिया कि " महीक्तिर सिंव वानेपर मेरे मित्र मेरी मदायना बंशो :" विश्विमवे ब्हा, "केंद्रिय नात बल तुरश्री बच बायन है ! " उसने उत्तर दिया कि " महामरोंके कर्त मुझानेके विष् में बारता मर्थन्त दे जुका है और अब में अपने बुरुवके निर्वार के लिए असी चीतें की नहीं लोड़ लड़ना है। बहि के बदमा सब करे म चुकाना, ना मुझ मरकारव पून व्याहारक दिए महीराक्षेत्र भी व विश्व सकता । रिन्तियमन कहा कि । बाहेबन्द्रक, में यह नहीं दश्य बक्ता के नृहाति थी भीर बच्च इस नरह नृष्य भाग : हमा करक बाक्ष दिन सुरास वह नम गिड देश की राज्य का लार ल जाना । हैं है ' नम रान क्यों देर ! अप

देश भी राज्य का नार ना जाता है है है तुस तार करते होते सह सब नाक राक देश करता । राज्यका हात्यका न तार ना। आहासीसी साहे दान करना रूर अन्योग ना राज्यक्ष राज्यका वह वह सीराज्यानि होते स्थान करना रूर आन्यार त्या राज्य का आहा। इसस राज्यका सन्तारि



भोधा तर दूस कामने भी राज्याको जनके परम सहरक रहे और निर्मास्तर प्रेमकी परीक्षण राज्याको भी सालामान हो गये। वे सारा कार्री कामने बुता है। ते प्राप्त कार्री कामने बुता है। ते प्राप्त कार्री कामने बुता है। ते प्राप्त कार्री को जनका एकान देशा कार्या में कि सामार्थण करने के से सरकारने भी जनकी मूर्य हमा की पी-पूर्व के तो के सार कार्य के निर्माण करने के सार कार्य के निर्माण करने के सामन्त्र के तो कार्य कार्य के सामन्त्र के सामन्त्य के सामन्त्र के सामन्त्र के सामन्त्र के सामन्त्र के सामन्त्र के

चना दा। " सभनमें एक तुत्र भवत्व दोशा है। यह यह कि अमे



स्यायप्रस्यतः ।

वार्ते वैदिगटनको आसूम वी, वस्तु वे अभी क्रिया भीएर प्रकट न की गई मीं । इस भेरको जाननेके किए निजासका संत्री वैकिंगरवधी १५ शाम न्यवेगे भी जियाश देने लगा । वैलिंगटन पहले कई सेर्कड तक उप मेर्प्रोडे मूंतकी शोर कुरकार देखने रहे और किर वों बोले, " अच्छा, तो तुम इस मेरूको दिया सकते हो है किसीसे कहीते. तो गई है " मंत्रीने जवाब दिया कि " में इस भेरूको बेसक जिला सकता हैं।" तब वैशिवारतने हैंगदर बटा कि " नव ऐसा ही मुझे समझी शतिम नरह तुम अपने भेरती जिग माने ही उस तरह में भी भागा भेद जिला शहना हैं। " वह बहबी रैभिगारनने संबंध्धे गुरुका अनास किया और बेचारा संबंध सामाई सारे बहाँ से नरस्य ही चल दिया। वैश्वारम के बानेशार सारक्षिय साफ वैश्वेताती भी मेमे ही उद्यापित ये । एक बार हेन्द्र इंडिया कम्पनीने वैन्द्रेजनीको मैन्युरकी विजयके उपलक्ष्मी १५ लाम राग्या मेंरानावा देना बादा, पारनु बैनेजनीने साथ हमडार हर रिया । वैन्त्रजीने बना या कि अ इस बालकी जमरंग नहीं है कि इस समय में वह बनभात्रे कि जेरा चरित्र किनना क्वनंत्र है और मैं जिन पर्गर है रमची मदला किनती नहीं है। इन तो नहीं नहीं नारोंके उपराम्य वहें नारे भीत भी हैं जिनके बारण में इस जिरको भागीकार करना हूँ । में इस में औ भया नहीं सम्माना । में संपन्नी सेनांच विवाय भीर विश्नी यीत्रणी पुरुषाह नहीं करता । मेरी सेनाके इन बीर सैनिकों हे दिस्मेंसे वरि क्या कमी की शायगीनो श्रवश्य की मुझे बड़ा मूं ना होगा है" वैनेशनीने श्रीकी नागी। कार करनेता तो हगाने कर निया वो उसे कोई भी ना बएन सड़ी है एम भीन वरका गयी भूत्रवनाडे मात्र कोई प्रमर्ग गर्वत्र मही है । निर्वत बन्द्रम भी सका समय हो सहनाहै---इसहे मार्गेस बीर रोजपाहि कामीने स्वापना का नकती है। वह ईवानहार, वका, सार, बन्न, भंगमी, बारपी, अपना करा कानेपामा और अण्यापन्त्री हो सकत है-भीत हमीदी सभा सभव बनना करते हैं। जिस अनुन्यके राग पन न हो पान् रमाहे नाव प्रवाह की वह क्षा बनुष्याने तक तंत्रह प्रवाह है। हिसाई क्षाम बन स दा राज्य रुव्ह जन्य जिल्ला हो। यसाँव वहचे सन्त्यहे रूप्य सम सरी



स्यायसम्बन् ।

पुरुद्दारहर न की । जहाज हुन शवा और तसके साथ ने बीर पुरुष भी हर गये । उन समनों और बीरॉकी जब हीं । ऐसे पुरुषों के उदाहरण करी मिर गरें रिकने हैं । जिस तरह उनकी स्मृति कार है, उसी तरह उनके बरा-हरण भी जार हैं ।

सन् १९१६ इंस्पीमें बटलांग्डर बहाणायस्वें टाइटेनिक नामक वहार मी इसी तरह इस जा । इस कुंग्डराज हाल हम लोगोंने मानापारचेंसे पड़े था भीर उसकी सुद्ध हम कभी तक नहीं भूले हैं । इस व्यवस्तर मी भोक बीगोंने अपनी चीरताडा शरिक्व दिया जा उन्होंनेक ऐना महान् बनाया गया था कि लोगोंने भारत था कि हम बहारकों की चीर इसिंग न गूर्वेंचा मेंनी, सरस्त अपना भोका चार है की स्तात कर है। होंग

त पहुँचा सदेती, परणु अनुत्य योचका कुछ है और होता हुए है। हार्र् दैनिक समुत्त में तीर्ता हुए देव दिव्यशिष्टाये दक्कर वार नया और उसमें किर हैं हैं के समुत्त में तीर्ता हुए देव थी कि सब लोग उनमें नैटकर बचने प्रात्त करा सदेते। कार्य समुत्ति क्षाय जर कार्यमा में बोच बीर जुल मी थे। हैं लें के मुत्तिव सामित्रका शिख्यू आहा रिक्टूम के संवादक रहेड जैने महानुमान भी जम कार्यमा सच्चर कर रहे थे। जब जार्यमा स्वार्थ स्वार्थ भीर जममें पानी माने लगा क कार्यन हुवार दिवा कि "पदाने विची भीर वार्यों सामी रिक्टा हर बचाया जाव है' बहातको भागा पाने हैं कि

इंपर बीजे हर गये भीर दियों भीर बच्चे नापीने बैठ कर कर हिये ; बहुनमें बीपिने कस मम्बर बूसर्डिड प्राण बक्तरे और वे रखते करते हुव गये ! ''आर्य नहीं भाउ जी जन भी बीडार्यें कर गई दानाय, पीतर मी यांची निर्मेश हो कर बर काम वर पये गांव ! बह सप्ता भी दर्शनीय है, है समोहनाडा बह विश्व, उत्तर स्पर्णिय पाइड्रो मांगा प्राप्ट क्लिये केने मित्र ! बह देखां करनाये पानाये का दोशों केनी हैं गीर

पड़ एक सामान्य मतुबदी रहा कर तब रहे खाँर।"

मजन मनुष्पद्ये पहणानके मिण् कई तहसे परिवा को जा सकती है,
सजन परुष्पाम ऐसी है जिसमें बजी धीला नहीं होता—यह भारते बजी गैरा दिन प्रताम ऐसी है जिसमें बजी धीला नहीं होता—यह भारते बजी गैरा दिन प्रवाद प्राप्त करना है जह बिजो की है स्वार्टियां की



६—कर्नेट सुरेदाविश्वास । क्लान्त कावर्यनवड वरनावित मातु का एक बहुत वीवत्ववित । ब्रिविश वर्रावे क्राव्यानेट वंगावियों से एक बहुत वीवत्ववित । ब्रिविश वर्रावे क्राव्यानेट वंगावियों से प्रवे वरात क्रियात कर्मावित कृष्ट इसकत्ववित क्रियात क्रियात कर्मावित क्रियात क्रियात

७—आयर्धिण्डका इतिहास । वराधीन भावर्षण्डका इतिहास गण्डु-वर्कोके क्षिप युवा ही सिक्षामह है । इसके पहले मानमें देशका गर्वकाव्य इतिहास और दूसरे भागमें कर्ष बाह चार्डकांड, हेनरी प्रस्त, वरुकोर्च-गार्ट ऐसेंट, हैनियक भोकरतेल, सिम्म कोमायन, माहाकि बद, और पार्टेंक इन माड शिमद मासद भागरित देशमच्छोंके वीवरचारित हैं वो देशसेल-

बीडो मार्गदर्शका काम दे सकते हैं। मु॰ १॥१९) दूसरोंके प्रकाशित किये हुए—

अस्तोदय और स्वावसम्पन

अर्थात् गिरना, पड़ना, और अपने पैरों खड़े होना l

मिनना, पहुना, और अपने पैनों खड़े होना ! यह एक गुजारी विहासके जिसे हुए मुस्सिद मणका भव-तार है में विरुद्ध भेरत हैया (स्वास्त्रकात) के हमास किसा गया है और विरुद्ध भेरत हैया (स्वास्त्रकात) के हमास किसा हा। स्वास्त्रकात एट-वार्गीको हम भी एक बार अवस्थ पहरा भीहर। स्वास्त्रकार कारार्गियकात के हिल्ल वह भी यहुन उस्पोगी स्वार्ग हो एक वार्गीक स्वास्त्र यह शिक्षा विद्या विकरती है कि प्रमा गांच वहती, हुद्धि भार शांच, अन्यात और वृत्रक साहतिक है, इस्त्रम प्रभा कोड़ के कारा साहति । पुरस्तीकी यह पास कि

धन्य € भार भारेनी बार उप चुका है। सू**०**1 ≈)





